



SAFALTA IAS

"We Discover Your Potential"

POWERED BY



i-Magnus

हिंदी मध्यम

MPPSC MAINS

FULL NOTES



PAPER-I PART-A UNIT-5

मध्यप्रदेश की प्रमुख रियासतें



@safaltaias



www.safaltaias.com



By:-Aditya Sir



अनुक्रमणिका

मध्यप्रदेश की प्रमुख रियासतें

क्र.	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
1.	गोंडवाना रियासत	02 – 14
2.	बुंदेली रियासत	15 – 33
3.	बघेली रियासत	34 – 60
4.	सिंधिया रियासत	61 – 69
5.	होल्कर रियासत	70 – 80
6.	भोपाल रियासत	81 – 96

मध्यप्रदेश के जनजातीय नायकों का संघर्ष एवं इतिहास में योगदान

1.	भीमा नायक	97 – 97
2.	टंट्या भील	97 – 98
3.	खाज्या नायक	98 – 99
4.	शंकरशाह एवं रघुनाथ शाह	99 – 99
5.	रानी दुर्गावती	100 – 100
6.	गंजन सिंह कोरकू	101 – 101
7.	बादल भोई	102 – 102
8.	पेमा फाल्या	102 – 102
9.	अन्य	103 – 104



1

गोंडवाना रियासत



गोंड राज्य

- ❖ सतपुड़ा और विध्यांचल पर्वत श्रेणियों और उसके बीच में बहती नर्मदा की घाटी में मध्यकाल में तीन राज्य विकसित हुए।
- ❖ चौदहवीं सदी से सोलहवीं सदी के दौरान विकसित इन राज्यों में पहला राज्य था खेरला का राज्य जो वर्तमान बैतूल जिले में था, दूसरा राज्य गढ़ा का गोंड राज्य था जो पन्द्रहवीं सदी के अंतिम चरण में जबलपुर अंचल में उभरकर एक विशाल राज्य के रूप में विकसित हुआ और तीसरा राज्य था देवगढ़ का गोंड राज्य जो वर्तमान सिवनी छिंदवाड़ा जिले में फैला।

गढ़ा का गोंड राज्य

- ❖ कलचुरियों और चन्देलों के पतन के बाद इस क्षेत्र में दो सदियों तक राजनीतिक रूप से कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं रही पर उसके बाद 15 वीं सदी के प्रारम्भ में इस क्षेत्र में गोंड राजाओं के अंतर्गत एक सुदृढ़ राज्य निर्मित हुआ जो लगभग पौने तीन सौ साल तक मौजूद रहा।
- ❖ गोंडों का यह राज्य समय-समय पर गढ़ा, गढ़ा-कटंगा और गढ़ा मण्डला के नाम से प्रसिद्ध रहा।
- ❖ जब 1700 ईस्वी के आसपास गोंड राजा नरेन्द्रशाह ने रामनगर से राजधानी हटाकर मण्डला स्थानांतरित की तो गढ़ा राज्य गढ़ा-मण्डला राज्य के नाम से जाना जाने लगा और अठारहवीं सदी के मराठी और अंग्रेजी स्रोतों में इसे गढ़ा-मण्डला ही कहा गया है।
- ❖ गोंडवाना रियासत की जानकारी के स्रोतों में साहित्यिक स्रोत ('अकबरनामा', 'गढ़ेशनृपवर्णनम्' आदि), पुरातात्त्विक स्रोत (रामनगर अभिलेख, धनुखा अभिलेख, गोंड स्मारक और उन पर उत्कीर्ण लेख, गोंड शासकों के सिक्के आदि) एवं ब्रिटिश प्रकाशन और लेख (जैसे – 1837 में प्रकाशित स्लीमेन का लेख, केप्टन वार्ड ने मण्डला जिला की बन्दोबस्त रिपोर्ट में) प्रमुख हैं।
- ❖ उपर्युक्त स्रोतों की कालगणना के अनुसार गढ़ा राज्य के प्रथम शासक यादोराय/यादवराय के राज्यारोहण की तिथि क्रमशः 627 ई., 350 ई., 158 ई. और 158 ई. आती है।

गढ़ा के शासक कौन थे ?

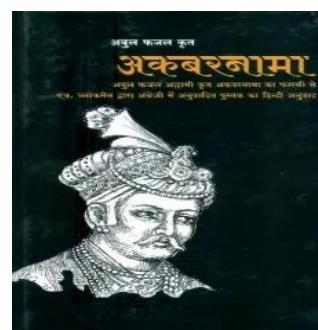
- संग्राम शाह के सिक्कों में उसे 'पुलत्स्यवंशी' कहा गया है।
- पुलत्स्यवंश में ही रावण उत्पन्न हुए थे और गोंड स्वयं को 'रावणवंशी' भी कहते हैं।

❖ संस्थापक – यादोराय/जादूराय/यादवराय

- एक जनश्रुति के अनुसार गढ़ा के पास कटंगा में सकतू नामक गोंड रहता था। उसकी कन्या ने एक नाग से विवाह किया जो सहवास के समय पुरुष रूप धारण कर लेता था।
- इस विवाह के फलस्वरूप धारुशाह का जन्म हुआ। इसी धारुशाह का पौत्र यादवराय था, जिसने गढ़ा में गोंड राज्य की नींव रखी।
- दूसरी जनश्रुति स्लीमेन ने उल्लिखित की है जिसमें कहा गया है कि जादूराय (यादवराय) खानदेश में गोदावरी नदी के पार 20 कोस दूर स्थित सेहलगाँव नामक गाँव केजोधसिंग पटेल का बेटा था।
- सर्वे पाठक की सलाह से जादूराय ने गढ़ा के गोंड राजा के यहाँ नौकरी कर ली। गढ़ा के राजा की बेटी रत्नावली से संयोगवश स्वयंबर जीतकर विवाह किया।
- गढ़ा के राजा की मृत्यु के उपरान्त उसका दामाद जादूराय गढ़ा के सिंहासन पर बैठा और उसने अपने वादे के अनुसार सर्वे पाठक को अपना प्रधानमंत्री बनाया।
- ऐसा माना जा सकता है कि यादवराय का राज्यारोहण 14 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ होगा।

उत्तराधिकारी –

- अबुलफज़ल के द्वारा उल्लिखित इन शासकों का क्रम इस प्रकार रखा जा सकता है खरजी, गोरक्षदास, सुखनदास, अर्जुनदास और संग्रामशाह।





- 1667 ई. में उत्कीर्ण रामनगर शिलालेख में संग्रामशाह को अर्जुनदास का, अर्जुनदास को गोरक्षदास का और गोरक्षदास को दादीराय का पुत्र बताया गया है।

❖ अकबरनामा —

- अबुलफजल कहता है कि, संग्रामशाह का पुत्र दलपतिशाह यद्यपि अच्छे कुल का नहीं था, तथापि महोबा के चन्देल शासक सालिवाहन ने उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।
- इससे प्रमाणित होता है कि, सम्भवतः वह राजपूत न होकर गौड़ ही रहे हैं।

❖ आम्हणदास / संग्रामशाह

- इसे इस वंश का प्रथम प्रमुख शासक माना जाता है।

राज्यारोहण

- ठरका (दमोह) के 1513 ईस्वी के सती लेख के आधार पर यह निश्चित है कि आम्हणदास 1513 ई. में सत्तारूढ़ था।

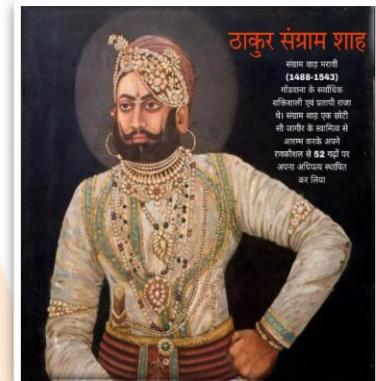
रायसेन विजय एवं उपाधि

- इसने गुजरात के सुल्तान बहादुर को रायसेन विजय के समय सहायता दी, इसके फलस्वरूप उसने आम्हणदास को संग्रामशाह की उपाधि दी।

दलपतिशाह का विवाह

- इसके दो पुत्र थे दलपतिशाह एवं चन्द्रशाह, दलपतिशाह का विवाह —

- ✓ अकबरनामा के अनुसार— दलपतिशाह का विवाह चन्देल राजा सालिवाहन की पुत्री दुर्गावती के साथ हुआ।
- ✓ स्मिथ तथा कनिंघम— कालिंजर के राजा कीरतसिंह की पुत्री दुर्गावती के साथ दलपति शाह का विवाह हुआ।



राज्य-विस्तार/गढ़ों पर शासन

- संग्रामशाह के समय गोड़ राज्य में '52 गढ़' सम्मिलित थे इसलिए इन्हें 'बावनगढ़ाधिपति' भी कहा गया है।

सिक्के

- संग्रामशाह के समय के सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के मिले हैं। उसके समय के सोने के तीन सिक्कों (एक गोल दूसरा, सिक्का वर्गाकार, तीसरा सिक्का वर्तुलाकार) का उल्लेख मिलता है।
- संग्रामशाह के सोने के गोल सिक्कों पर उसे 'पुलत्स्यवंशी' कहा गया।
- सिक्कों के अलावा संग्रामशाह के पीतल और ताँबे के सिक्के भी मिले हैं।
- आर. आर. भार्गव ने संग्रामशाह के दो ताँबे के सिक्के भी प्रकाशित किए हैं। ये दोनों सिक्के 'देवगढ़ टकसाल' से जारी किये गए थे।

निर्माण कार्य

- संग्रामशाह ने 'चौरागढ़' (नरसिंहपुर) का दुर्ग बनवाया।
- सिंगौरगढ़ किले के निकट उसने 'संग्रामपुर' (दमोह) नामक ग्राम बसाया।
- संग्रामशाह ने संभवतः गढ़ा के निकट 'मदनमहल' नामक एक भवन का निर्माण कराया।
- गढ़ा के निकट 'संग्राम सागर' तालाब तथा उसके तट पर 'बाजनामठ' भी इसी शासक ने निर्मित कराया।

विद्वानों के आश्रयदाता एवं साहित्य के संरक्षक

- उसने संस्कृत काव्य-ग्रंथ 'रसरत्नमाला' की रचना की।
- मिथिला से भी विद्वान आमंत्रित किए। ऐसे एक विद्वान दामोदर ठाकुर थे जो प्रसिद्ध विद्वान महेश ठाकुर के अग्रज थे।
- इसी के शासनकाल में दामोदर ठाकुर ने "संग्राम साहीयविवेकदीपिका" और "दिव्य निर्णय" नामक ग्रंथों की रचना की।

❖ दलपतिशाह

- संग्राम शाह की मृत्यु के पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र दलपतिशाह राजसिंहासन पर बैठा।



राजधानी

- दलपतिशाह ने शासक बनने के पश्चात् अपनी राजधानी गढ़ा से 'सिंगौरगढ़' (दमोह) स्थानान्तरित कर दी।
- अबुलफजल के अनुसार शासन के 7वें वर्ष में दलपतिशाह की मृत्यु हुई तब उसका पुत्र 'वीर नारायण' 5 वर्ष का था।

विद्वान

- दलपतिशाह के समय एक मैथिल विद्वान महेश ठाकुर का भी उल्लेख मिलता है। महेश ठाकुर ने संस्कृत में अनेक ग्रंथ लिखे।
- केशव लौगांकि नामक विद्वान भी दलपतिशाह के दरबार में थे। वे मीमांसा, न्याय और धर्मशास्त्र के ज्ञाता थे तथा उन्होंने इन विषयों पर ग्रंथों की रचना की।

सहिष्णु शासक

- दलपतिशाह एक सहिष्णु शासक था और उसने बाबा कपूर साहिब को दान दिया, जो कबीरपंथी संत या मुस्लिम संत प्रतीत होते हैं।

❖ वीरनारायण एवं रानी दुर्गावती

- दलपतिशाह की मृत्यु के पश्चात्, रानी ने 'आधार कायस्थ' और 'मान ब्राह्मण' नामक दो महत्वपूर्ण अधिकारियों की सलाह से वीरनारायण को राजसिंहासन पर बिठाया तथा वास्तविक शक्ति स्वयं अपने हाथ में रखी।

❖ राजधानी

- रानी ने अब गोंड राज्य की राजधानी सिंगौरगढ़ से 'चौरागढ़' (नरसिंहपुर) स्थानान्तरित कर दी।

❖ अफगानों से संघर्ष एवं सैन्यिकरण

- अबुलफजल लिखता है कि रानी का संघर्ष मियाना अफगानों से हुआ जिसमें वह विजयी हुई।
- इसके बाद अनेक मियाना अफगानों ने रानी की सेना में नौकरी कर ली। उदाहरण के लिए शाम्स खाँ मियाना रानी की सेना का एक महत्वपूर्ण सैन्याधिकारी था।

❖ बाजबहादुर का आक्रमण

- इसके समय मालवा के शासक बाजबहादुर ने आक्रमण किया, किन्तु बाजबहादुर असफल हुआ रानी ने उसे पराजित कर मार भगाया।
- यह घटना 1556 और 1562 ई. के मध्य की है। मालवा के विख्यात शासक को हराने से रानी दुर्गावती का यश चारों ओर फैल गया।

❖ मुगल आक्रमण—नरई का युद्ध

- मुगल सूबेदार आसफ खाँ तथा रानी दुर्गावती के मध्य 'नरई का युद्ध' हुआ। जिसमें रानी वीरता पूर्वक लड़ते हुये घायल हो गई, फिर अपनी ही कटार को घोंप कर प्राण दे दिये।
- 24 जून 1564 को रानी दुर्गावती वीरगति को प्राप्त हुई।
- इस दिन को मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 'बलिदान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- रानी दुर्गावती की समाधि जबलपुर के 'बरेला' ग्राम में है।
- इस युद्ध में रानी का महावत 'आधार सिंह बघेला' था।
- इस युद्ध में महारानी दुर्गावती का हाथी 'सरमन' भी शहीद हो गया।

❖ चौरागढ़ का पतन

- नरई के युद्ध से वीरनारायण को महारानी ने रणभूमि से हटाकर राजधानी भेज दिया।
- दुर्गावती की मृत्यु के पश्चात् आसफ खाँ राजधानी चौरागढ़ की ओर बढ़ा, वीरनारायण युद्ध करते हुए शहीद हुआ तथा महल की अन्य स्त्रियों ने जोहर कर लिया।

Rani Gurgavati





❖ **दुर्गावती के समय के निर्माण कार्य –**

- ◆ रानीताल – जबलपुर – रानी दुर्गावती ने
- ◆ चेरीताल – जबलपुर – चेरी (रानी की दासी) ने
- ◆ आधारताल – जबलपुर – आधार कायस्थ ने
- ◆ महेश ठक्कुर ने जबलपुर के आस पास ठाकुर ताल, तिरहुतिया ताल और महेशपुर ग्राम महेश ठक्कुर या उनके अग्रज दामोदर ठक्कुर ने निर्मित किए थे, ऐसी जनधारणा है।

❖ **रानी दुर्गावती के दरबारी विद्वान –**

- ◆ मैथिल ब्राह्मणों को प्रश्रय देने की परम्परा गढ़ा कटंगा राज्य में अंत तक कायम रही। रानी दुर्गावती के दरबार में महेश ठक्कुर, दामोदर ठक्कुर, गोप महापात्र, नरहरि महापात्र, पद्मनाभ भट्टाचार्य आदि विद्वान थे।

❖ **बिठ्ठलनाथ का आगमन**

- ◆ बल्लभ सम्प्रदाय के संस्थापक श्री बल्लभाचार्य के पुत्र 'बिठ्ठलनाथ' गढ़ा पधारे थे। जहाँ रानी दुर्गावती ने उनके दर्शन किए और उनसे दीक्षा ली।
- ◆ रानी ने गुसाई विठ्ठलनाथ जी को 108 ग्राम दान में दिए, जिसे गुसाई जी ने अपने साथ दक्षिण से आये तैलंग ब्राह्मणों को बाँट दिए।
- ◆ इसके बाद सभवतः 1563 ई. में गुसाई जी एक बार फिर से गढ़ा आये और रानी ने उनका भव्य स्वागत किया।

❖ **महेश ठक्कुर का गढ़ा त्यागना**

- ◆ रानी दुर्गावती के समय महेश ठक्कुर गढ़ा राज्य त्याग कर मिथिला चले गए और वहाँ उन्होंने दरभंगा राज्य की स्थापना की, ऐसा स्थानीय वृत्तांतों में और जनश्रुतियों, दरभंगा के धनुखा शिलालेख में कहा गया है।
- वीर नारायण की मृत्यु के पश्चात् तथा मुगल अधिपत्य होते ही लगभग 25 वर्ष तक मुगल प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा गढ़ा का राज्य चलाया गया।

प्रश्न – रानी दुर्गावती की उपलब्धियां / कार्यों का वर्णन कीजिए।

- रानी दुर्गावती चंदेल राजकुमारी एवं गढ़ा-कटंगा के गोंड साम्राज्य के शासक वीरनारायण की संरक्षिका (1550–1556 ई.) थीं। रानी भारतीय इतिहास में अपने कार्य एवं उलब्धियों के कारण विशिष्ट स्थान रखती हैं।
- स्त्रोत – तारीख-ए-फरिश्ता (फरिश्ता), आईन-ए-अकबरी (अबुल फजल)

दर्गावती की उपलब्धियाँ एवं कार्य



राजनीतिक –

- राजधानी परिवर्तन – सिंगौरगढ़ से चौरागढ़ स्थानांतरित की।
- राज्य का एकीकरण – वास्तविक शक्ति स्वयं के हाथ में रखकर शासन संचालन किया।

प्रशासन –

- प्रशासनिक सुधार – आधार कायस्थ एवं मान ब्राह्मण की सहायता से प्रशासन व्यवस्था को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाया।
- कर समृद्धता – लोग सोने के सिक्के एवं हाथी देकर कर भुगतान करने लगे, समृद्धता को दर्शाता।

सैन्य –

- सैन्य नेतृत्व – स्वयं सेना का नेतृत्व कर विद्रोहियों को कुचला एवं राज्य की सीमाओं को सुरक्षित किया।
- सैन्य सुधार एवं अफगान विजय – अफगान सरदारों को हराकर सेना में शामिल किया जिससे सैन्य शक्ति बढ़ी।
- बाजबहादुर की पराजय – रानी ने मालवा के शासक बाज बहादुर को पराजित किया (1555–1560)
- मुगल प्रतिरोध – रानी ने जीवन भर मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की, 24 जून 1564 मुगल सेनापति आसफ खाँ के साथ विशाल सेना के विरुद्ध लड़ते हुए 'नरई के युद्ध' में वीरगति को प्राप्त हुई।

निर्माण / जनकल्याणकारी कार्य –

- जलाशय निर्माण – जबलपुर में रानीताल, चेरीताल, आधारताल बनवाये।





शैक्षणिक एवं साहित्यिक कार्य –

- शिक्षा एवं ज्ञान को प्रोत्साहन दिया
- साहित्यकारों को आश्रय – दरबार में पदमनाथ भट्टाचार्य (दुर्गावती प्रकाश) महेश ठाकुर (तिथितत्व चिंतामणि), थेघ, मेघ, एवं दामोदर ठाकुर जैसे विद्वानों को आश्रय दिया।

चारित्रिक विशेषताएं/गुण –

- अबुल फजल के अनुसार रानी सुंदरता, अनुग्रह, मर्दना साहस और बहादुरी का मेल थीं। दुर्गावती बंदूक और तीर चलाना जानती थीं एवं शिकार पर भी जाती थी।
- ब्रिटिश कर्नल स्लीमैन ने रानी को गढ़ा-कटंगा पर शासन करने वाले सभी संप्रभुओं में सबसे अधिक श्रद्धेय माना।
- रानी त्याग एवं बलिदान, वीरता एवं साहस की प्रतिमूर्ति थीं।



धार्मिक –

- वल्लभ सम्प्रदाय के संस्थापक 'वल्लभाचार्य' के पुत्र विट्ठलनाथ का रानी ने गढ़ा में स्वागत किया।
- रानी ने इन्हें गढ़ा में 'पुष्टिमार्ग पथ' का एक केन्द्र स्थापित करने की अनुमति भी दी।
- स्पष्टः रानी दुर्गावती महान वीरांगना एवं शासन संचालिका थी। अबुल फजल ने 'आईन-ए-अकबरी' में रानी के शासनकाल को 'गोण्डवाना का स्वर्णयुग' कहा है।

◆ चन्द्रशाह

- दलपतिशाह के भाई चन्द्रशाह को गढ़ा राज्य का शासक मान लिया गया और इस मान्यता के बदले में उसने बादशाह को दस गढ़ सौंपे।
- चन्द्रशाह तथा इसके ज्येष्ठ पुत्र की हत्या इसके छोटे पुत्र मधुकर शाह ने मदन महल में कर दी।

◆ मधुकर शाह-

- चन्द्रशाह की हत्या के उपरांत उसका छोटा पुत्र मधुकरशाह शासक हुआ।
- स्लीमेन के अनुसार मधुकरशाह इस वंश का पहला शासक था, जो सम्मान प्रकट करने हेतु दरबार में गया।
- मधुकरशाह ने आधुनिक शहडोल जिले में स्थित सिंहवाड़ा, धरहर, मुण्डा, बसही, मनोरा और गिरारी को अधिकृत किया। यह पहला गोड़ शासक था जिसने बघेलखण्ड के क्षेत्र को जीता।
- मधुकरशाह के पीतल के दो चौकोर सिक्के मिले हैं जो संवत् 1664 (1607 ईस्वी) के हैं। इनके एक ओर नागरी लिपि में श्रीकृष्ण श्री मधुकर शाह और दूसरी ओर नागरी लिपि में गढ़ागढ़, 1664 ई. और फारसी लिपि में मधुकरशाह लिखा है।

◆ प्रेमशाह

- प्रेमशाह, मुगल सम्राट जहांगीर तथा शाहजहां के समकालीन थे, जहांगीर ने प्रेमशाह को अपना मनसबदार बनाया।

जुझारसिंह बुन्देला का आक्रमण

- इसके शासनकाल में वीर सिंह बुन्देला के पुत्र जुझारसिंह ने आक्रमण किया, इस युद्ध में प्रेमशाह मारा गया तथा जुझार सिंह में चौरागढ़ पर अधिकार कर लिया।
- जब मुगल सम्राट शाहजहां को यह खबर मिली तो उसने चौरागढ़ पर आक्रमण कर जुझार सिंह को पराजित किया, जुझार सिंह निकट के जंगलों में भाग गए, किन्तु गौँड़ों ने उन्हें मार डाला।

विद्वानों का आश्रयदाता

- उसने विष्णु दीक्षित नामक एक विद्वान को आश्रय दिया। कोई गंगाधर वाजपेयी तथा अन्य लोग इनके शिष्य थे।



◆ हृदयशाह

- प्रेमशाह की मृत्यु के पश्चात हृदयशाह शासक बना।



पहाड़सिंह बुन्देला से संघर्ष

- 1651 जु़ज़ारसिंह के भाई पहाड़सिंह बुन्देला को एक हजार जात, एक हजार सवार के पद पर पदोन्नत करने के बाद चौरागढ़ का जागीरदार बनाया गया, इस समय हृदयगढ़ चौरागढ़ में था।
- पहाड़ सिंह के आने पर हृदयशाह रीवा के जर्मींदार अनूपसिंह के पास शरण लेने भाग गया।
- पहाड़ सिंह ने रीवा पर भी आक्रमण किया, वहां से भी हृदयशाह भाग गया।

रामनगर की स्थापना एवं राजधानी परिवर्तन

- कालांतर में हृदयशाह ने 'रामनगर' नामक नया नगर बसाया एवं उसमें विभिन्न इमारतों का निर्माण करवाया।
- चौरागढ़ से 1651 ई. में निष्कासन के बाद ही हृदयशाह ने रामनगर में राजधानी बनाई (रामनगर शिलालेख - 1667 ई.)।

अन्य कार्य

- हृदयशाह ने बाहर से कुशल कृषकों को बुलाकर अपने राज्य में बसाया।
- हृदयशाह ने मण्डला में हृदयनगर बसाया तथा उसने महोबा से बुलाये गए पंसारियों (पान उगाने वालों) को बसाया।

विद्वान

- हृदयशाह न केवल अच्छा गायक और वादक था, अपितु संगीत की दो प्रमुख पुस्तकों का वह लेखक भी था। इन ग्रन्थों के नाम "हृदयकौतुक" और "हृदयप्रकाश" हैं।
- हृदयशाह के समय के संस्कृत व्याकरण के एक मूर्धन्य विद्वान् 'भट्टोजी दीक्षित' का उल्लेख मिलता है। उन्होंने सन 1620 से 1660 ई. के मध्य व्याकरण की चार पुस्तकें लिखीं और गुह्यसूत्र पर अनेक ग्रन्थ लिखे।



◇ छत्रशाह

- पुत्र – हृदयशाह
- छत्रशाह के शासनकाल में प्रणामी सम्प्रदाय के दूसरे प्रसिद्ध गुरु महाप्रभु प्राणनाथ ने रामनगर की यात्रा की थी।
- महाप्रभुनाथ हिन्दू धर्म की रक्षा करने के इच्छुक थे और इसके लिए वे हिन्दू राजाओं का सहयोग चाहते थे। कालांतर में बुन्देला छत्रसाल के बुलाने पर यह पन्ना चले गये।

◇ नरेन्द्रशाह

- पहाड़सिंह के पलायन के उपरांत 1687 ई. के अन्तिम महीनों में नरेन्द्रशाह सत्तारूढ़ हुआ।

पड़ोसी राज्यों से सम्बन्ध

- नरेन्द्रशाह के संबंध बख्तबुलन्द और छत्रसाल से अच्छे रहे।
- जिस वर्ष नरेन्द्रशाह सिंहासनासीन हुआ उस समय गढ़ा राज्य के दक्षिण-पश्चिम में देवगढ़ का राज्य बख्तबुलन्द के अधिकार में था, जो देवगढ़ के इतिहास का सर्वाधिक प्रबल शासक था।
- गढ़ा-राज्य के दक्षिण में स्थित चौंदा का गोड़ राज्य भी पर्याप्त शक्तिशाली था। वहाँ का शासक वीरशाह और उसका उत्तराधिकारी रामसिंह हुआ।

पहाड़सिंह का विद्रोह

- युद्ध के दौरान पहाड़सिंह की कुशलता से प्रसन्न होकर मुगल सेनापति दिलेरखाँ ने गढ़ा का राज्य प्राप्त करने में पहाड़सिंह के साथ एक सेना मीर जैना और मीर मानुल्ला की कमान में भेजी।
- फतेहपुर के निकट दूधी नदी के तट पर पहाड़सिंह और नरेन्द्रशाह की सेना के मध्य संघर्ष हुआ जिसमें नरेन्द्रशाह पराजित हुआ।
- किन्तु 'केतुगाँव के युद्ध' में वह हार गया और मारा गया। उसकी शेष सेना नरेन्द्रशाह से मिल गई।

राजधानी परिवर्तन

- विजयोपरांत नरेन्द्रशाह मण्डला लौट आया। पहाड़सिंह के विद्रोह के पश्चात् नरेन्द्रशाह ने रामनगर को छोड़कर 'मण्डला' को अपनी राजधानी बनाया।





पहाड़सिंह के बेटों का विद्रोह

- पहाड़सिंह के दो बेटों ने अब नरेन्द्रशाह के विरुद्ध विद्रोह किया।
- गढ़ा राज्य प्राप्त करने के लिए शाही सेना की सहायता पाने के लिए उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया।
- उनके नाम अब अब्दुल रहमान और अब्दुल हाजी (हादी) हो गए।

जागीरदारों का विद्रोह

- बारहा (नरसिंहपुर जिला, म. प्र.) के जागीरदार अजीमखाँ तथा चौरई के जागीरदार लोंडी खान भी विद्रोही हो गए।

विद्रोहियों का दमन

- ऐसे संकट के समय नरेन्द्रशाह ने देवगढ़ के शासक 'बख्तबुलन्द' एवं रामकृष्ण वाजपेयी को भेजकर छत्रसाल बुन्देला से भी सहायता माँगी।
- बख्तबुलन्द और छत्रसाल की सहायता से विद्रोहियों का दमन कर दिया गया। विद्रोह का अंत 1699 ई. में हुआ।
- इस सहायता के बदले नरेन्द्रशाह ने बख्तबुलन्द और छत्रसाल को कुछ इलाके दिये। बख्तबुलन्द के अधिकार में अब तक वर्तमान बैतूल और छिंदवाड़ा के पूरे जिले तथा सिवनी, नागपुर, भण्डारा और बालाघाट जिलों के कुछ भाग आ गए थे, जबकि बख्तबुलन्द की शक्ति शिखर पर थी।

वैवाहिक संबंध स्थापना

- नरेन्द्रशाह की दो बहिनें थीं, मानकुँवरि और दानवकुँवरि।
- नरेन्द्रशाह ने अपनी पहली बहिन मानकुँवरि का विवाह बख्तबुलन्द से कर दिया।
- दानवकुँवरि का विवाह रतनपुर के राजा राजसिंह से हुआ था।

मराठा आक्रमण

- 1728 ई. में पेशवा बाजीराव की सेना अचानक देवगढ़, सिवनी, छपारा होकर गढ़ा-मण्डला की ओर बढ़ रही थी।
- इसके शासनकाल में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने गढ़ा पर आक्रमण किया तथा यहां से चौथ वसूलने का कार्य रघुजी भोसले को दिया।
- जिस समय बाजीराव-I गढ़ा में मौजूद था, छत्रसाल पर मोहम्मद बंगश ने आक्रमण कर दिया, छत्रसाल द्वारा बुलाये जाने पर बाजीराव ने मदद की थी।

◆ महाराजशाह

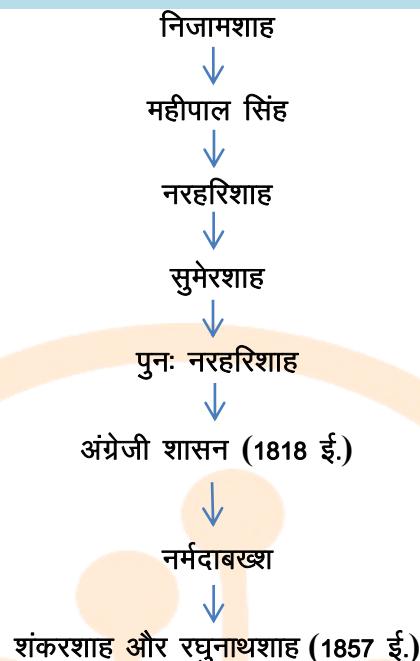
- इसके शासकनकाल में मराठा पेशवा बालाजी बाजीराव आक्रमण कर महाराजशाह को अपना कृपापात्र बनाया।
- कर्नाटक में रघुजी की व्यस्तता का लाभ उठाते हुए बालाजी पेशवा की सेना अपने दावों के पुष्टीकरण हेतु सागर से चलकर मई-जून 1741 ई. में गढ़ा पर अधिकार कर लिया।
- पेशवा के मण्डला आक्रमण के बाद ही 1741 ई. में महाराजशाह की मृत्यु हो गई।

◆ शिवराजशाह

- महाराजशाह की मृत्यु के बाद उसका युवा पुत्र शिवराजशाह 1741 ई. में उसका उत्तराधिकारी हुआ।
- शिवराजशाह के समय 1742 ई. में पेशवा की सेना ने फिर मण्डला के दुर्ग को घेर लिया। 26 अक्टूबर, 1742 ई. को दोनों सेनाओं के मध्य युद्ध प्रारम्भ हुआ और पेशवा की सेना ने 18 नवम्बर, 1742 ई. को मण्डला का किला जीत लिया।
- इस युद्ध के बाद शिवराजशाह के साथ पेशवा की जो संधि हुई उसके अनुसार तुरन्त शिवराजशाह को चार लाख रुपया क्षतिपूर्ति के रूप में देना पड़ा।
- इस क्षतिपूर्ति के बादे के अतिरिक्त पेशवा को लूट में चार लाख रुपयों की सम्पत्ति भी मिली और शिवराजशाह पर एक लाख रुपये वार्षिक चौथ भी आरोपित की गई।
- शिवराज सिंह की मृत्यु 1749 ई. में हुई।
- शिवराजशाह के समय वीर बाजपेयी ने "सुदामाचरित्र" नामक काव्य की रचना की।



अन्य शासकों का क्रम



◆ शंकरशाह

- जबलपुर के न्यायाधीश ने शंकरशाह के स्थान पर नर्मदाबख्श को गढ़ा मंडला का वास्तविक उत्तराधिकारी माना।
- तब 1857 की क्रांति में शंकरशाह और उसके पुत्र रघुनाथ शाह ने विद्रोह कर दिया।
- गढ़ार गिरधारीलाल ने समस्त सूचना 52 वीं रेजीमेंट के अंग्रेज अफसर क्लार्क को दे दी।
- अंग्रेज कमाण्डर क्लार्क ने 18 सितंबर 1857 को दोनों पिता पुत्र को तोप से उड़ा दिया।

गोंडवाना की प्रशासनिक व्यवस्था

- गढ़ा राज्य के प्रशासन के ढांचे का कोई व्यवस्थित विवरण हमें उपलब्ध नहीं है पर गढ़ा राज्य के स्थानीय वृत्तान्तों और गढ़ा के शासकों के द्वारा जारी सनदों से, प्रशासनिक जानकारी प्राप्त होती है –

1. राजा

- प्राचीन काल की ही भाँति गोंडो का राजा वंशानुगत हुआ करता था, राज्य पद ज्येष्ठता पर आधारित था, साथ ही प्रशासनिक कार्यों का प्रमुख अधिकारी राजा ही होता था।

2. फौजदार

- फौजदार का पद महत्वपूर्ण था, यह सेनापति के समान था।
- रानी दुर्गावती का फौजदार अर्जुनदास बैस था।

3. दीवान

- दीवान प्रधानमंत्री के समान था, जिसका मुख्य कार्य राजा के आय-व्यय की देखभाल करना था।

4. पुरोहित

- प्रमुख कार्य – राजा को सलाह देना तथा धार्मिक अनुष्ठान का क्रियान्वयन।

5. भांडागारिक

- युद्ध सामग्रियों का प्रबंधन कराने वाला।

6. न्यायशास्त्री

- कानूनों का व्याख्याकार एवं राजा के पश्चात् सबसे बड़ा न्यायिक अधिकारी था।



❖ स्थानीय शासन

- ◆ गढ़ा राज्य में परगना प्रशासन की सबसे छोटी इकाई था, इसके अंतर्गत गाँव रहते थे।
 - ◆ अबुल फजल के वर्णन से ज्ञात होता है, कि दुर्गावती के अधिकार में 23,000 खेतिहर गाँव थे, जो दो भागों में बटे हुए थे—
 - 1. शिकदार शासित गाँव** — ऐसे गाँव, जो रानी के प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं थे, इनका प्रमुख शिकदार था। इनकी संख्या अबुल फजल ने 12 हजार बताई है।
 - 2. रानी शासित गाँव** — यह गाँव रानी के प्रत्यक्ष नियंत्रण में थे।

◆ सैन्य प्रशासन

- ◆ गढ़ा राज्य की सेना के मुख्य तीन हिस्से थे – पैदल सेना, घुड़सवार सेना एवं हस्तिसेना।
 - ◆ सेना का प्रमुख अधिकारी फौजदार था।

नाट – तापखाना का अभाव

गौडवाना राज्य की कला एवं संस्कृति



साहित्य

- ◆ गौड़ शासक साहित्य के महान संरक्षक थे।
 - ◆ राजकाज की भाषा गोंडी न होकर स्थानीय हिन्दी थी और उनके समय हिन्दी तथा संस्कृत साहित्य का भी विकास हुआ।

❖ संस्कृत साहित्य –

1. संग्रामशाह – ‘रसरत्नमाला’
 2. महेश ठाकुर – ‘तिथितत्वविद्यामणि’
 - ◆ धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डालती है।
 3. दामोदर ठक्कर – ‘संग्रामशाहीयविवेकदीपिका’ एवं ‘दिव्य निर्णय’
 4. कैशव लौगांक्षि – ‘नृसिंह चम्पू’ और ‘भीमांसार्थ प्रकाश’
 5. पदमनाथ भट्टाचार्य – ‘दुर्गावती प्रकाश’, ‘समयावलोक’, ‘वीर चम्पू’
 6. हृदयशाह – ‘हृदय प्रकाश’, ‘हृदय कौतुक’
 7. नरेन्द्रशाह – ‘रसमंजरी’
 8. लक्ष्मीप्रसाद – ‘गजेन्द्रमोक्ष’
 9. कवि रूपनाथ झा – ‘रामविजय महाकाव्य’ और ‘गणेश नृपवर्णनम्’

★ हिन्दी भाषा साहित्य

- ◆ कवि बीर बाजपेयी – ‘सुदामा चरित्र’ तथा ‘प्रेमदीपिका’

वास्तुकला –

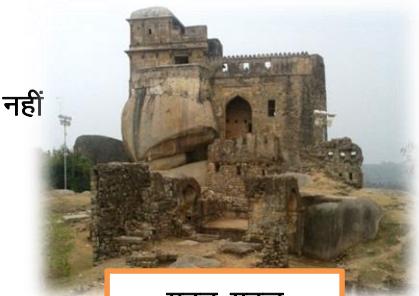
- ♦ गोंड कालीन वास्तुकला में मुगलों के समान उच्चकोटि की सामग्री और कला के दर्शन नहीं और प्रायः उपयोगितावादी है।

विशेषता –

1. अनगढ़ पत्थरों का प्रयोग
 2. दीवालों पर गारे का प्लास्टर



हेतु सहल



मदन महल



3. मोटी दीवारें
4. चपटे से गुम्बद
5. गरे का प्लास्टर

◆ प्रमुख स्थापत्य

1. सिंगौरगढ़ – दमोह

◆ दलपत शाह द्वारा राजधानी बनाया गया।

2. गढ़ा – जबलपुर

◆ गोड़ों की प्रारम्भिक राजधानी

◆ अन्य स्थान – भैरव मंदिर (बाजनामठ), सग्राम सागर, आम खास और हस्तिशाला, मदनमहल और पंचमठा

3. चौरागढ़ – नरसिंहपुर

◆ इस किले की दक्षिणी पहाड़ी को बुन्देला कोट कहते हैं।

◆ दुर्गावती के काल में राजधानी बनाया गया।

4. रामनगर – मण्डला

◆ हृदयशाह ने राजधानी बनाया।

◆ स्थापत्य – मोती महल, भागवतराय का महल, बेगम महल, दलबादल महल

5. मण्डला

◆ नरेन्द्र शाह ने राजधानी बनाया

◆ राजराजेश्वरी मंदिर

6. सतखण्डा

◆ मूर्तिकला

◆ गोंडकालीन मूर्तिकला में उसी प्रकार का अनगढ़पन मिलता है, जैसा कि उस काल में निर्मित अन्य निर्माण में था।

◆ हृदयशाह की पत्नी सुन्दरी देवी द्वारा रामनगर के मंदिर में गणेश, सूर्य तथा नंदी की मूर्तियों का निर्माण कराया।

◆ 'राजराजेश्वरी मंदिर' में संगमरमर की और कुछ रेतीले भूरे पत्थर की मूर्तियां प्राप्त हुईं।

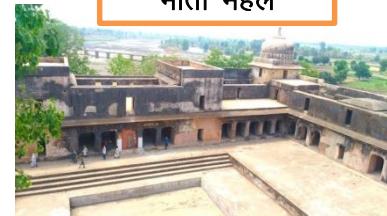
◆ संगीतकला

◆ गढ़ा-मण्डला के शासकों के समय संगीत कला की भी पर्याप्त उन्नति हुई।

◆ हृदयशाह के समय संगीत कला अपने चरम उत्कर्ष पर थी।

◆ हृदयशाह स्वयं उच्च कोटि का संगीतज्ञ था, उसने संगीत संबंधी दो महत्वपूर्ण ग्रंथ—'हृदय कौतुक' और 'हृदय प्रकाश' की रचना की।

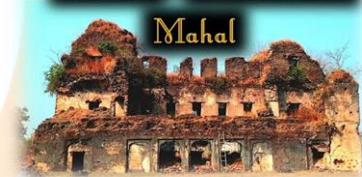
मोती महल



राय भगत की कोठी



DAL - BADAL



खेरला का गोंड राज्य

स्थिति और उद्भव

- सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के पार दक्षिण की सीमा जहाँ से शुरू होती है वह प्रदेश मध्यकाल में उत्तर और दक्षिण का राजनीतिक सीमान्त था।
- इस सीमान्त प्रदेश में खेरला का राज्य था जो 15 वीं सदी में बहमनी और मालवा की सल्तनतों के बीच विवाद का कारण बना, जो अपनी रक्षा के लिये कभी बहमनी सुल्तानों का दामन पकड़ता रहा और कभी मालवा की सल्तनत की छत्रछाया में जाता रहा।





- इस राज्य के प्रबलतम राजा का नाम था नरसिंहराय।
- खेरला का किला आज मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में है।

उल्लेख

- मुकुन्दराज स्वामी के मराठी ग्रंथ 'विवेकसिंधु' में यह उल्लेख मिलता है कि मुकुन्दराज ने अपने अन्तिम दिन खेरला के राजपूत राजा जैतपाल के संरक्षण में बिताये।
- खेरला राज्य का विस्तृत प्रामाणिक उल्लेख हमें इतिहासकार फरिश्ता की कृति 'तारीख—ए—फरिश्ता' में विस्तार से मिलता है।

❖ नरसिंहराय

- सी. यू. विल्स का कहना है कि 14वीं और 15वीं सदी में खेरला पर नरसिंहराय का शासन था।

राज्य क्षेत्र

- नरसिंहराय बहुत महत्वाकांक्षी शासक था और उसका राज्य इतना शक्तिशाली था कि वह निमाड़ तक फैला था और उसने वहाँ के सजनी या पिपलौदा के चौहानों को भी खदेड़ दिया था।
- तब खेरला के दक्षिण में बरार से बहमनी सल्तनत की तथा उत्तर में नर्मदा से मालवा सल्तनत की सीमाएँ शुरू हो जाती थीं।
- खेरला के पश्चिम में मलिक रजा फारुकी ने खानदेश की सल्तनत कायम कर ली थी।

बरार पर आक्रमण

- 1398 ई. में जब बहमनी सल्तनत संकट से गुजर रही थी तब मालवा और खानदेश के शासकों ने उसे बरार पर आक्रमण करने के लिये उकसाया।

बहमनी सुल्तान से संघर्ष एवं समर्पण

- बहमनी सुल्तान उस समय विजयनगर के अभियान में व्यस्त था। इसका लाभ उठाकर नरसिंहराय ने दक्खन में माहुर तक के प्रदेश को अधिकृत कर लिया।
- इस पर फीरोज बहमनी 1399 में नरसिंहराय को सजा देने के लिये सेना सहित आगे बढ़ा। माहुर पहुँचने पर फीरोज ने पाया कि वहाँ के राजाओं ने डरकर नरसिंहराय की अधीनता स्वीकार कर ली थी। फीरोज के आने पर इन सबने फीरोज की अधीनता फिर से स्वीकार कर ली।
- नरसिंहराय ने खानदेश के फारुकी शासक नासिर खां तथा मालवा के शासक दिलावर खां गोरी से सहायता माँगी, पर उसे निराश होना पड़ा।
- बहमनी सेनाओं ने फज्जुल्मुल्क इंजू और खानखाना के नेतृत्व में नरसिंहराय की सेना से युद्ध किया। युद्ध में बहमनी पक्ष के अनेक प्रमुख लोग शुजात खाँ, बहादुर खाँ, दिलावर खाँ और रुस्तम खाँ मारे गये।
- खानखाना तथा मलिक इंजू ने नरसिंहराय के बेटे गोपालराय को बंदी बना लिया और नरसिंहराय को खेरला के किले में घेर लिया।
- दो माह के घेरे के बाद नरसिंहराय ने खुद एलिचपुर पहुँचकर बहमनी सुल्तान के समक्ष समर्पण कर दिया और बहमनी सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली।
- उसने वार्षिक कर देने का वादा करने के साथ ही अपनी बेटी भी सुल्तान को सौंप दी एवं चालीस हाथी, पाँच मन सोना और पचास मन चाँदी भी भेंट की।
- बदले में बहमनी सुल्तान ने नरसिंहराय को खेरला वापिस कर दिया और उसे बहमनी सल्तनत का अमीर बना दिया।

होशंगशाह का खेरला पर आक्रमण

- नरसिंहराय के इलाके पर अधिकार करने, उसकी सम्पत्ति हथियाने और खेरला प्रदेश के हाथियों पर कब्जा करने के लिये 1420 ई. में होशंगशाह अपनी सेना सहित खेरला के किले की ओर बढ़ा।
- नरसिंहराय किले के बाहर निकला और उसने 50 हजार सैनिकों के साथ आक्रान्ता का मुकाबला किया लेकिन उसकी पराजय हुई।
- फलस्वरूप उसने होशंगशाह की अधीनता स्वीकार कर ली और उसे 84 हाथियों के साथ — क्षतिपूर्ति के रूप में बड़ी तादाद में सोना भी दिया।



- होशंगशाह ने खेरला के किले पर कब्जा नहीं किया और उसे नरसिंहराय के अधीन ही छोड़ दिया।
- होशंगशाह जब जाजनगर से हाथी लेकर लौटा तो खेरला पहुँचने पर उसे ज्ञात हुआ कि माण्डू के किले को गुजरात के सुल्तान अहमदशाह ने धेर लिया है।
- लेकिन अहमदशाह के चले जाने के बाद होशंगशाह ने खेरला नरसिंहराय को सौंप दिया और नरसिंहराय मालवा का मित्र हो गया।
- नरसिंहराय ने 1423 ई. में होशंगशाह के गागरैन अभियान में भाग लेने के लिए अपने दो बेटों चांदजी और खेमजी को भेजा।
- होशंगशाह ने कई बार आक्रमण किये जिनसे परेशान होकर नरसिंहराय ने बहमनी शासक अहमद शाह से सहायता मांगी।

बहमनी शासक अहमद शाह से संबंध

- अहमदशाह ने बरार के सूबेदार खानजहान को आदेश दिया कि वह सेना लेकर खेरला की सहायता के लिये जाए।
- खुद अहमदशाह भी सात हजार सैनिकों के साथ बरार के मुख्यालय एलिचपुर पहुँचा।
- अपने दो हजार चुनिन्दा घुड़सवारों और 12 हाथियों के साथ अहमदशाह ने होशंगशाह को धेर लिया और होशंगशाह को रणक्षेत्र छोड़कर भागना पड़ा।
- होशंगशाह इतनी बुरी तरह हारा कि उसे माण्डू भागना पड़ा।
- होशंगशाह की पराजय के बाद नरसिंहराय ने अहमदशाह की अधीनता स्वीकार कर ली।
- सुल्तान ने खेरला को बहमनी का संरक्षित राज्य घोषित करके नरसिंहराय को खेरला का स्वामी रहने दिया।
- नरसिंहराय की मृत्यु एवं खेरला पर मालवा का आधिपत्य
- होशंगशाह ने 1433 ई. में खेरला पर आक्रमण कर दिए। इस युद्ध में नरसिंहराय मारा गया और होशंगशाह ने खेरला राज्य को अपनी सल्तनत में शामिल कर लिया।
- नरसिंहराय के बेटे को सलराय ने होशंगशाह की अधीनता स्वीकार कर ली और उसे खेरला का अधीनस्थ राजा बना दिया गया।
- इस तरह खेरला राज्य मालवा के गौरी वंश के नियंत्रण में आ गया। परन्तु खेरला को लेकर मालवा और बहमनी शासकों के मध्य खींचातानी सदैव लगी रही।

देवगढ़ का गोंड राज्य

कालानुक्रम

- जाटबा दलशाह – कोकशाह – केसरीशाह उर्फ जाटबा द्वितीय – इस्लामयार खान – दींदरखान – महीपतशाह उर्फ बख्ताबुलन्द – नेकनाम खान – चांद सुल्तान – वलीशाह– बुरहानशाह और अकबरशाह – देवगढ़ राज्य भोंसला के कब्जे में।

क्षेत्र और स्थिति

- देवगढ़ का गोंड राज्य सतपुड़ा के अंचल में सोलहवीं सदी के अन्त में अस्तिव में आया और यह अठारहवीं सदी के मध्य तक मौजूद रहा।
- करीब पौने दो सौ साल के अपने इतिहास में देवगढ़ राज्य पहले गढ़ा-मण्डला के गोंड राज्य के अधीन रहा और 1564 ईस्वी में गढ़ा राज्य पर मुगल बादशाह अकबर की विजय के बाद यह गढ़ा राज्य के साथ मुगल साम्राज्य का हिस्सा हो गया।
- देवगढ़ के शासकों ने अपने राज्य की दुर्गम स्थिति का फायदा उठाया और समय-समय पर देवगढ़ राज्य का विस्तार किया लेकिन उन्होंने इसके लिए उन मैदानी प्रदेशों को भी छुना जो सतपुड़ा पर्वत के दक्षिणी हिस्से में थे और अपनी दुर्गमता के साथ ही उपजाऊ भी थे।
- मुगल साम्राज्य का दबाव कम होते ही देवगढ़ के शासक कर चुकाना बन्द कर देते थे और इसके लिए उन्हें मुगल सेनाओं द्वारा बार-बार प्रताड़ित होना पड़ा।



- मुगलों के पतन के बाद देवगढ़ राज्य की स्थिति कुछ दशकों तक अच्छी रही किन्तु मराठों के उदय ने उसकी स्थिति संकटप्रद कर दी और बाद में मराठों ने ही उसका अस्तित्व समाप्त किया।
- देवगढ़ के किले के खण्डहर आज मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में एक पहाड़ी पर स्थित हैं।

मुख्यालय

- देवगढ़ के शासकों का मुख्यालय पहले 'हरयागढ़', फिर 'देवगढ़', और अन्त में 'नागपुर' रहा।

❖ जाटबा

- जाटबा देवगढ़ का ऐसा पहला शासक था, जिसका उल्लेख देवगढ़ के शासक के रूप में 'अकबरनामा' और 'आइन-ए-अकबरी' दोनों में मिलता है।
- आइन-ए-अकबरी में मालवा सूबे की गढ़ा सरकार के विवरण में हररिया-देवगढ़ में दो महाल बताये गये हैं।
- आइन-ए-अकबरी में बरार के सूबे के अन्तर्गत भी जाटबा का उल्लेख है।
- जाटबा का अगला उल्लेख जहाँगीर की आत्मकथा में मिलता है।
- देवगढ़ में गोंड सत्ता का संस्थापक 'जाटबा' ही था।

मोहम्मद जमान का आक्रमण

- अकबरनामा में अकबर के शासन के अद्वाइसरें साल यानि 1584 ईस्वी के विवरण में अबुल फजल लिखता है कि मोहम्मद जमान ने मालवा के एक बड़े जमींदार जाटबा के खिलाफ एक सेना का नेतृत्व किया था।
- तभी मोहम्मद जमान ने जाटबा के समर्पण की उपेक्षा करके उसके इलाके की लूटमार करने का दुस्साहस किया।
- जब वह वापस लौटने लगा तो जाटबा को मौका मिला और मोहम्मद जमान मारा गया।

राज्य विस्तार और मुगल साम्राज्य

- देवगढ़ का राज्य मुगल साम्राज्य के दक्षिणी छोर पर दुर्गम इलाके में था और वह बरार के निजामशाही राज्य की कमजोरी का फायदा उठाकर नागपुर की तरफ अपना विस्तार कर सकता था।
- उसने ऐसा किया थी। उसने खेरला की तरफ कुछ परगनों पर अधिकार कर लिया था, यह आइन-ए-अकबरी में बरार के सूबे के विवरण में दिया गया है।
- जब 1595–96 ई. में बरार पर मुगल साम्राज्य का अधिकार हुआ और जब बरार का सूबा बना तो देवगढ़ का विस्तार रुक गया।

नाम का सिक्का

- उसके नाम का ताँबे का सिक्का मिला है जिसमें "श्री. राजा जाटबा प्रतिराज" लिखा है। यह सिक्का नागपुर संग्रहालय में है।

चाँदा के गोंड राजाओं से शत्रुता

- देवगढ़ का विस्तार दक्षिण की ओर होने के कारण उनकी शत्रुता पड़ोस के चाँदा के गोंड राजा के साथ हुई, जिसके कारण वह देवगढ़ को समाप्त करने में मुगलों के साथी बन गए।

❖ दलशाह

- 10 अप्रैल 1864 ई. को देवगढ़ राजवंश की जो वंशावली तैयार की गई थी उसमें कहा गया है कि जाटबा के चार बेटे थे— दलशाह, कोकशाह, दुर्गशाह और केसरीशाह।

❖ कोकशाह

- शाहजहाँ के सेनानायक खानदौरान ने देवगढ़ पर आक्रमण किया। यह आक्रमण बरार की तरफ से किया गया।
- नागपुर का धेरा डालने एवं दुर्ग को नष्ट होता देख अंततः कोकशाह/कोकिया ने पुर्णतः आत्मसमर्पण कर दिया।
- खानदौरान ने उसे नागपुर का किला वापस कर दिया।



2

बुन्देलखण्ड रियासत



बुन्देलखण्ड का परिचय

- देश के केन्द्रीय भाग में स्थित भू-भाग को मध्यकाल में बुन्देलखण्ड नाम से जाना जाता था।
- वर्तमान में यह भू-भाग मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के प्रांतों के विभिन्न जिलों में विभाजित है।
- मध्यप्रदेश के अंतर्गत बुन्देलखण्ड के प्रमुख जिले हैं, दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, नरसिंहपुर, सागर एवं इसी प्रदेश के जबलपुर, सतना, होशंगाबाद, रायसेन, विदिशा, गुना, ग्वालियर, भिण्ड, शिवपुरी आदि जिलों का लगभग आधा भाग बुन्देलखण्ड प्रदेश के भू-भाग का हिस्सा माना जाता है।
- उत्तरप्रदेश के झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, बांदा, महोबा और चित्रकूट आदि जिले बुन्देलखण्ड भू-भाग के हिस्से माने जाते हैं।
- मध्यकालीन बुन्देलखण्ड का भू-भाग उत्तर में यमुना, दक्षिण में नर्मदा, पूर्व में टोंस एवं पश्चिम में चम्बल नदियों के बीच का भाग माना जाता था, बुन्देलखण्ड की सीमाओं के सम्बन्ध में यह पद बहुत प्रसिद्ध रहा है।

बुन्देला ठाकुरों का उद्भव

- बुन्देला ठाकुरों का उद्भव अयोध्या के राजा रामचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र लव के वंश से माना जाता है।
- आठवीं सदी में कर्तराज नाम का राजा काशी में हुआ था। उसने अशुभ ग्रहों के निवारण के लिए शांति पाठ करवाया था। जिसके कारण उसके वंशज ग्रहनिवार कहलाये, जो बाद में अपब्रंश होकर गहिरबार नाम से प्रसिद्ध हुए थे।
- इसी गहिरबार वंश के पंचम बुन्देला के पुत्र वीर बुन्देला ने तेरहवीं सदी के मध्य में मऊ-माहोनी में अपनी नवीन राजधानी कायम कर बुन्देलखण्ड में अपना राज्य स्थापित किया था।
- यह मऊ-माहोनी पहूज नदी के किनारे उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में मध्यप्रदेश की भिण्ड जिले की मिहोना तहसील की सीमा से लगा हुआ है।
- बुन्देला ठाकुर, विंध्यक्षेत्र या विन्ध्यावटी पर्वत अंचल के भू-भाग में राज्य स्थापित करने के कारण "विन्ध्येला" और बाद में "बुन्देला" नाम से प्रसिद्ध हुए थे।
- माना जाता है कि 14 वीं सदी के अंत से इस भू-भाग का नाम "जेजाकभुक्ति" के स्थान पर बुन्देलखण्ड पड़ा था।

बुन्देलों की प्रगति

- बुन्देलों ने विंध्य क्षेत्र पर शासन किया, जिससे इनका नाम विंध्येला तथा कालान्तर में बुन्देला हो गया।
- वीर बुन्देला के नाती अर्जुनपाल ने इस राजधानी के आस-पास के क्षेत्र को विजित किया।
- अर्जुनपाल के तीन पुत्र थे, वीरपाल, सोहनपाल तथा दयापाल
- अर्जुनपाल बुन्देला की मृत्यु के पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र वीरपाल मऊ-माहोनी का शासक बना।
- वीरपाल के शासक बनने के पश्चात उसने अपने दोनों भाई सोहनपाल तथा दयापाल को राज्य से निष्काषित कर दिया।
- सोहनपाल नाराज होकर गढ़कुड़ार के खंगार शासक हुरमतसिंह के पास अपने भाई के विरुद्ध सहायता हेतु पहुँचा।
- किन्तु हुरमतसिंह ने मदद के बदले में सोहनपाल की पुत्री धर्म कुँवरि का विवाह अपने पुत्र नागदेव से करने की शर्त रखी।
- सोहनपाल इस बात से नाराज होकर पवाया के शासक पुन्यपाल परमार तथा शाहबाद (कोटा) के शासक मुकुटमणि धंधेरा को अपने साथ मिलाकर खंगारो पर आक्रमण कर हुरमत सिंह की हत्या कर दी।
- अब गढ़कुड़ार में सोहनपाल का राज्य स्थापित हो गया।
- सोहनपाल के वंश में ही रुद्रप्रताप बुन्देला गढ़कुड़ार की गदी पर बैठा।





❖ रुद्रप्रताप बुन्देला (1501–1531 ई.)

- मलखान सिंह के निधन के बाद रुद्रप्रताप बुन्देला उसका उत्तराधिकारी हुआ था और उसने बेतवा नदी के किनारे बुन्देलों की नवीन राजधानी ओरछा की नींव 3 अप्रैल, 1531 ई. को रखी थी।
- ओरछा का प्राचीन नाम गंगापुरी था
- उनकी गढ़कुड़ार व ओरछा दो राजधानियाँ थीं।
- वे बाबर व इब्राहिम लोदी के समकालीन थे।
- रुद्रप्रताप बुन्देला, बुन्देला राज्य का 'वास्तविक संस्थापक' माना जाता है।



❖ भारतीचन्द्र (1531–1554 ई.)

- ओरछा को विधिवत राजधानी बनाया।
- इसने ओरछा को अनेक महलों आदि से सजाया, ओरछा का दुर्ग, राजमंदिर, रानीमहल, परकोटा आदि का निर्माण हुआ।
- इस्लामशाह सूर (1545–1553) ने जतारा (वर्तमान टीकमगढ़ जिले की तहसील) को विजित कर, इसका नाम बदलकर, इस्लामाबाद कर दिया था। भारतीचंद्र ने पुनः जतारा पर कब्जा कर उसका नाम इस्लामाबाद के स्थान पर जतारा ही प्रचलित किया था।
- भारतीचन्द्र ने शेरशाह सूरी के विरुद्ध कालिंजर के शासक कीरत सिंह की मदद हेतु अपने भाई मधुकरशाह को सैनिक सहायता के लिए भेजा।

कालिंजर का युद्ध

- रीवा के शासक वीरभान बघेल द्वारा शेरशाह के विरुद्ध हुमायूँ को कन्नौज के युद्ध में सहायता प्रदान की गई।
- शेरशाह द्वारा रीवा के शासक वीरभान बघेल पर आक्रमण, वीरभान बघेल ने कालिंजर में कीरतसिंह चंदेल के यहाँ शरण ली।
- भारतीचंद्र ने इस युद्ध में अपने भाई मधुकरशाह और कीरतसिंह को सैनिक टुकड़ी के साथ कालिंजर के चंदेल शासक की मदद के लिए भेजा था।
- 22 मई 1545 को तोप का गोला फटने के कारण शेरशाह की मृत्यु हो गई परंतु दिल्ली सल्तनत का कालिंजर के किले पर अधिकार हो गया।

❖ मधुकर शाह बुन्देला (1554–1592 ई.)

- मधुकरशाह ने ओरछा राज्य के विस्तार के लिए आसपास के क्षेत्र सिरोंज, ग्वालियर, नरवर आदि के मुगल अधीनता वाले भागों पर लगातार धावे किए थे।
- फलस्वरूप अकबर बादशाह ने मधुकरशाह को दण्डित करने के लिए गढ़ के सूबेदार सादिक खाँ और ग्वालियर के फौजदार आसकरन कछवाहा को भेजा था।
- मधुकरशाह ने बार-बार अकबर बादशाह के क्षेत्रीय अधिकारियों को चुनौती दी, प्रत्येक बार मधुकरशाह मुगल चुनौती के सिर पर आ जाने पर चतुराई से क्षमायाचक बन कर बच जाते थे।
- ओरछा के समकालीन महाकवि केशव ने अपने ग्रन्थ वीरचरित में लिखा है—
 "सैद्धान्त तिन लीन्यो लूटि । अबदुल्लह खाँ पठयो कूटि ।
 गनो न राजा राजत वादि । हारयो जिन सौ साहि मुराद ॥"
- मुधकरशाह और उनकी रानी गणेशकुँअरि दोनों ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे और वे अपने माथे पर बड़ा सा तिलक लगाते थे, जो आज भी 'मधुकरशाही तिलक' के नाम से प्रसिद्ध है।
- इसकी पत्नी गणेशकुँअरि ने ओरछा के चतुर्भुज मंदिर का निर्माण करवाया था।



Madhukar Shah



❖ वीरसिंह बुन्देला (1605–1627 ई.)

- मधुकरशाह के आठ पुत्रों में एक पुत्र वीरसिंहदेव को, वर्तमान में दतिया जिले में स्थित छोटी बड़ोनी की जागीर मिली थी।



मुगल क्षेत्रों में लूटमार

- वीरसिंहदेव ने 1592 ई. में बड़ोनी पहुँचते ही आसपास के ग्वालियर, नरवर, पवाया, करहरा, आदि के मुगल क्षेत्रों में लूटमार कर अनेक मुगल थानों पर कब्जा कर लिया।

अकबर की प्रतिक्रिया

- इन विद्रोही गतिविधियों को दबाने के लिए अकबर ने लगातार वीरसिंहदेव पर मुगल सेनायें भेजीं। परन्तु वह हर बार मुगल सेनाओं को चकमा देकर सघन वनों में भाग जाने में सफल हुआ।

जहाँगीर से सम्बन्ध

- इसके सम्बन्ध मुगल शहजादा जहाँगीर से मित्रवत् थे।
- जहाँगीर के कहने पर वीरसिंहदेव ने दक्षिण से आगरा की ओर जाते समय अकबर के विशिष्ट मंत्री अबुल फजल का वध नरवर आंतरी के बीच सराय बरार में 9 अगस्त, 1602 ई. को कर दिया तथा लूटे गए धन से मथुरा में 'केशवराय मंदिर' का निर्माण कराया।
- जब मुगल बादशाह जहाँगीर बना तो जहाँगीर के दबाव के चलते रामशाह को गढ़ी छोड़नी पड़ी, बार-चंदेरी की जागीर से संतोष करना पड़ा, अब बुन्देला शासक वीरसिंह बुन्देला बन गया। बादशाह ने स्वयं वीरसिंहदेव के विषय में लिखा है— राजा वीरसिंहदेव को तीन हजारी मनसब मिला।

सांस्कृतिक और साहित्यिक संरक्षण

- वह बुन्देली ललित कलाओं का जन्मदाता शासक था।
- कवि केशवदास इसके दरबार में रहते थे, जिन्होंने रत्न बावनी, रसिकप्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, वीरसिंह देव चरित, जहाँगीर चन्द्रिका आदि की रचना की।

❖ जुझार सिंह बुन्देला (1627–1635 ई.)

- पिता — वीर सिंह बुन्देला

भाई हरदौल

- जुझार सिंह ने सन्देह के आधार पर अपने देवतुलय भाई हरदौल को जहर दिलवा दिया था।

मुगल अभियानों से पलायन

- सन् 1635 ई. में जुझारसिंह पुनः दक्षिण भारत के मुगल अभियानों से भागकर ओरछा आ गया और अवज्ञा कर विद्रोही हो गया।



गोंडवाना पर आक्रमण एवं शाहजहाँ का आक्रमण

- उसने गोंडवाना पर आक्रमण कर वहाँ के शासक प्रेमनारायण को मार डाला।
- इस पर क्रुद्ध होकर शाहजहाँ ने औरंगजेब के नेतृत्व में ओरछा पर आक्रमण करने की आज्ञा दी, इस मुगल अभियान में चंदेरी, दतिया के बुन्देला शासकों ने भी मुगलों का साथ दिया था।
- इस समय मुगल सेनाओं ने ओरछा के मंदिरों में भी तोड़फोड़ की थी।

गोंडो द्वारा हत्या

- जुझारसिंह मुगलों के दबाव के कारण प्राण बचाकर गोंडवाना होकर गोलकुण्डा की ओर जाना चाहता था, परन्तु इस बीच दिसम्बर, 1635 ई. में वह जंगलों में भागा जहाँ इसकी हत्या गोंडो द्वारा कर दी गयी।

❖ पहाड़सिंह बुन्देला (1641–1653 ई.)

- भाई— जुझार सिंह
- ओरछा की अराजक स्थितियों से तंग होकर, शाहजहाँ ने वीरसिंहदेव बुन्देला के द्वितीय पुत्र पहाड़सिंह को, जो मुगल मनसबदार—सेनापति के रूप में दक्षिण भारत में कार्यरत था, सन् 1641 ई. में ओरछा का शासक नियुक्त कर दिया था।





मुगलों के प्रति वफादार

- इसने बुन्देलखण्ड को मुगलों के अधीन कर दिया था।
- मुगलों की ओर से पहाड़सिंह ने चम्पतराय बुन्देला के विद्रोह का दमन कर, उन्हें मुगलों के प्रति वफादार बनाने में सहयोग दिया था।
- सन् 1645, 1648, 1652 ई. में बल्ख, काबुल, कंधार के युद्ध—अभियानों में पहाड़सिंह ने मुगलों की ओर से भाग लिया था।
- पहाड़सिंह को मुगल बादशाह शाहजहाँ ने 5000 जात और 2000 सबार का मनसब दिया था और उनका निधन, 1635 ई. में हुआ था।

उत्तराधिकारी

- पहाड़सिंह के बाद उनका उत्तराधिकारी (पुत्र) सुजानसिंह बुन्देला (1653–1672 ई.) ओरछा की गद्दी पर बैठा था।

❖ धर्मपाल (1817–1834 ई.)

- विक्रमाजीत सिंह के पश्चात् उनका पुत्र धर्मपाल सिंह राजा बना। वह एक साहसी एवं निर्भीक योद्धा था।
सिंधिया सेनापति पर विजय

- ग्वालियर के सिंधिया के फ्रांसीसी सेनापति जीन बैटिस्ट को परास्त कर उसने अपनी धाक जमाई।

पिण्डारियों का दमन

- लॉर्ड हेस्टिंग्स जब पिण्डारियों के दमन हेतु 1817 ई. में बुन्देलखण्ड आया। धर्मपाल ने उनकी पिण्डारियों के दमन में सहायता की।
- प्रसन्न होकर जब हेस्टिंग्स ओरछा आया तो धर्मपाल ने उसे नजराना भेंट किया। इस तरह अंग्रेज एवं टीकमगढ़ की मित्रता में प्रगाढ़ता आई।

धर्मपाल की रानियाँ

- धर्मपाल सिंह की तीन रानियाँ गरई रानी, लड़ई रानी एवं हरई रानी थीं। ये तीनों रानियाँ निःसंतान थीं।
- गरई रानी ने टीकमगढ़ में नजरबाग मंदिर बनवाया।
- लड़ई रानी को ओरछा राज्य की विकटोरिया कहा जाता है।

उत्तराधिकारी

- 1834 ई. में धर्मपाल सिंह का स्वर्गवास हो गया। निःसंतान होने के कारण उनके वृद्ध पिता विक्रमाजीत सिंह ने राज्यभार संभाला। पुत्र बिछोह में मात्र 6 माह बाद ही विक्रमाजीत सिंह भी चल बसे।

❖ तेज सिंह (1834–1841 ई.)

- विक्रमाजीत सिंह ने अपने कौटुम्बिक भाई तेजसिंह को गोद लिया था। अब तेज सिंह (1834–1841 ई.) ओरछा के राजा बने।

ठगों का दमन

- उन्हीं के समय 9 दिसम्बर 1835 ई. को कर्नल स्लीमेन ठगों के दमन के संबंध में टीकमगढ़ आया था।

उत्तराधिकार स्वीकृति हेतु पत्र एवं लड़ई सरकार की आपत्ति, बुन्देला विद्रोह

- चूंकि तेजसिंह भी निःसंतान थे 28 अक्टूबर 1837 ई. में अपने वंशज भाई सुजान सिंह को गोद लेकर स्वीकृति हेतु पत्र गवर्नर जनरल मैटकॉफ (कम्पनी) को भेज दिया।
- इस स्थिति में धर्मपाल की विधवा लड़ई सरकार ने आपत्ति करते हुए माँग की कि 'गोद लेने का एकमात्र अधिकार उन्हें है न कि तेजसिंह को।'
- 1842 ई. का बुन्देला विद्रोह आरंभ हो गया। विद्रोह का एक प्रमुख नेता चिरगाँव का राव बखत सिंह था।
- बखतसिंह ने जब अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया एवं तेज सिंह ने उसे उसके सहयोगियों सहित मोहनगढ़ के किले में शरण दी।
- अंग्रेजों ने इसे टीकमगढ़ रियासत द्वारा अंग्रेजों के साथ पूर्व में की गई संधि की धारा-1 का उल्लंघन माना।





- अंग्रेजों ने तेजसिंह द्वारा गोद लेने की पुष्टि के प्रकरण को उलझा दिया। इस परिस्थिति में तेजसिंह ने बखतसिंह को सपरिवार मोहनगढ़ से जैतपुर की ओर भेज दिया।

◆ सुजान सिंह एवं लड़ई सरकार

- 1841 ई. में तेजसिंह की मृत्यु हो गई, नाबालिंग सुजान सिंह गद्दी पर बैठे।
- महारानी लड़ई सरकार को उसका संरक्षक प्रशासक (रीजेन्ट) बनाया गया। राज्य के प्रधानमंत्री माखन खाँ थे।

गृह संघर्ष

- सुजान सिंह के पिता हृदय शाह एवं भाई देवी सिंह स्वयं प्रशासक बनना चाहते थे अतः राज्य में गृहसंघर्ष आरंभ हो गया।
- नथे खाँ ने महारानी लड़ई सरकार का साथ दिया। वह एक कुशल योद्धा, कूटनीतिज्ञ एवं चतुर व्यक्ति था। उसी के कारण हृदय शाह एवं देवी सिंह की राज्य हड्डपने की योजना सफल न हो सकी।

अंग्रेजों से उत्तराधिकार की स्वीकृति

- देवी सिंह ने राजगद्दी हथियाने के उद्देश्य से अपने भाई महाराजा सुजान सिंह को 1854 ई. में विष देकर मार डाला।
- लड़ई सरकार ने दिगोरा के जागीरदार दिमान मर्दन सिंह के 4 वर्षीय पुत्र हमीर सिंह को गोद ले लिया।
- गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने ओरछा राज्य को प्रथम श्रेणी का प्राचीन राज्य मानते हुए, हमीर सिंह की गोद को हिन्दु कानून एवं परंपरा के अनुसार मान्यता प्रदान की थी।

बुन्देला विद्रोह के दमन में भूमिका

- बुन्देला विद्रोह के दमन में रानी लड़ई सरकार अंग्रेजों का साथ दे रही थीं। वह अपने राज्य में किसी विद्रोही को शरण नहीं दे रही थीं।
- प्रमुख विद्रोही जैतपुर नरेश पारीछत को गिरफ्तार करने में रानी लड़ई सरकार की अहम् भूमिका थी। मेजर स्लीमेन को राजा पारीछत के जोरन महल में होने की सूचना लड़ई सरकार ने ही दी थी।
- अक्टूबर 1844 ई. में राजा पारीछत को मेजर स्लीमेन ने प्रातः उस समय गिरफ्तार कर लिया जबकि वे जोरन महल में पूजा कर रहे थे।

1857 की क्रांति में भूमिका

- लड़ई सरकार ने 9–10 अगस्त 1857 ई. को नथे खाँ को झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पर आक्रमण हेतु भेजा था।
 - वह लक्ष्मीबाई से परास्त होकर इन्दौर भाग गया और ब्रिंगेडियर जनरल ह्यूरोज की क्रांति के दमन में मदद की।
- सन 1868 ई. में लड़ई सरकार का स्वर्गवास हो गया।

चंदेरी राज्य

- बुन्देलखण्ड का चंदेरी नगर ओरछा के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है।

◆ रामशाह बुन्देला

- ओरछा के शासक मधुकरशाह के ज्येष्ठ पुत्र रामशाह बुन्देला, मधुकरशाह के बाद सन् 1592 ई. में ओरछा के शासक हुए थे। परन्तु जहाँगीर की मुगल गद्दी पर ताजपोशी के पश्चात् वे ओरछा से बलात् अपदस्थ कर सन् 1605–1606 ई. में बार-चंदेरी के शासक बना दिए गए थे।
- मुगल सत्ता के इस हस्तक्षेप ने ओरछा के बुन्देला राज्य और चंदेरी के बुन्देला राज्य के बीच स्थाई रूप से वैमनस्य के बीज बो दिए थे।
- जहाँगीर बादशाह (1605–1627 ई.) ने ओरछा की गद्दी वीरसिंहदेव बुन्देला को सौंप उनके अग्रज रामशाह बुन्देला को बार-चंदेरी का शासक बना दिया था।

◆ भारतशाह बुन्देला (1612–1634)

- बार-चंदेरी के शासक के रूप में संग्रामशाह के पुत्र भारतशाह का कार्यकाल उल्लेखनीय है।
- मुगल बादशाह जहाँगीर और शाहजहाँ की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसने दक्षिण भारत के तेलंगाना में चले युद्धों में भाग लिया था। उसको इटावा का फौजदार भी नियुक्त किया गया था।





- भारतशाह ने चंद्रेंग के सूबेदार गोदाराय को पराजित कर अपनी राजधानी बेतवा के समीप चंद्रेंग में स्थानांतरित कर ली थी और मुगल संरक्षण में राज्य का विस्तार कर दुदाही, हर्षपुर, गोलकोट तथा भानगढ़ के चार परगने प्रशासनिक दृष्टि से अपने राज्य में कायम किये थे।
- वर्तमान उत्तर प्रदेश का सम्पूर्ण लिलितपुर परिक्षेत्र उसके कब्जे में आ गया था।
- उसका सर्वोच्च मनसब 4000 हजारी जात और 3500 हजार सवार का था। अप्रैल, 1634 ई. में उसका निधन हो गया था।

❖ देवीसिंह बुन्देला (1634–1670 ई.)

- भारतशाह की मृत्यु के बाद देवीसिंह चंद्रेंग के शासक हुए, इनको शाहजहाँ ने पिता की मृत्यु की खबर सुनकर राजा का खिताब और 2000 हजारी सवार का मनसब दिया था।
- देवीसिंह बुन्देला का उच्च मनसब 2500 जात और 2000 हजार सवार का था।
- ओरछा के जुझारसिंह बुन्देला के विद्रोह और पलायन फिर मृत्यु के काल में सन् 1634–1636 ई. में, उसे ओरछा का प्रबंधक बनाया गया था।
- परन्तु ओरछा के सामंतों और विशेष तौर से चंपतराय बुन्देला के विरोध के कारण, वह ओरछा के प्रबंधन में पूरी तरह असफल रहा था।
- देवीसिंह बुन्देला ने बल्ख, बुखारा, काबुल के मुगल अभियानों में भाग लिया था और वह एक बार भेलसा, वर्तमान विदिशा का फौजदार भी बनाया गया था। सागर परिक्षेत्र के बहुत से भाग इस समय चंद्रेंग राज्य में शामिल कर लिए गए थे।

❖ दुर्गसिंह बुन्देला (1670–1687 ई.)

- राजस्थान से भागकर आए, बंजारों के एक बड़े दल ने चंद्रेंग परिक्षेत्र में अराजकता उत्पन्न कर दी थी। इन बंजारों के दल से मुकाबला करने में दुर्गसिंह ने सफलता प्राप्त की।

❖ दुर्जनसिंह बुन्देला (1687–1736 ई.)

- उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र दुर्जनसिंह बुन्देला चंद्रेंग का शासक हुआ। चंद्रेंग के दुर्जनसिंह बुन्देला, दतिया के रामचन्द्र बुन्देला और ओरछा के उदोतसिंह इन तीनों के संबंध जयपुर के सवाई जयसिंह से काफी मधुर थे।
- तत्कालीन पतनोन्मुख मुगल राजनीति में बुन्देलखण्ड के ये शासक, मुगल सत्ता में ताकतवर सवाई जयसिंह (1700–1743 ई.) की ओर सलाहकार–सहायक के साथ ही हिन्दू संस्कृति के रक्षक के रूप में देखते थे।
- दुर्जनसिंह के अंतिम समय में चंद्रेंग में मराठा शक्ति का प्रवेश हो चुका था।

दतिया राज्य

- ओरछा के शासक वीरसिंहदेव बुन्देला ने अक्टूबर 1626 ई. में अपने बारह पुत्रों में से छठे पुत्र भगवानदास बुन्देला को बड़ी–दतिया की पृथक जागीर प्रदान की थी, वर्तमान में इस स्थान को छोटी बड़ी–दतिया के नाम से जाना जाता है।
- दतिया के बुन्देला शासकों ने सत्ताई कूटनीति का सहारा लेते हुए, मुगल सत्ता के संरक्षण में लगातार प्रगति करते हुए बुन्देलखण्ड के इस पश्चिमी भाग में शक्तिशाली दतिया राज्य कायम कर लिया था।
- दतिया के शासकों को 'राव' उपनाम से संबोधित किये जाने की परम्परा प्रारंभ से ही रही थी।

❖ भगवानराव बुन्देला (1626–1640 ई.)

- दतिया के प्रथम शासक 'भगवानदास' दतिया के इतिहास में भगवानराव बुन्देला (1626–1640 ई.) नाम से प्रसिद्ध हुए थे।
- भगवानराव ने 1626 ई. में जहाँगीर के समय में महाबतखाँ के विद्रोह दमन में और शाहजहाँ के समय में 1628 ई. में ओरछा के अपने भाई जुझारसिंह बुन्देला के विद्रोह दमन में एवं 1630 ई. में खांजहाँ लोदी के विद्रोह दमन के मुगल अभियानों में भाग लेकर मुगल सत्ता को प्रभावित किया था।
- जुझारसिंह बुन्देला के दूसरे विद्रोह काल 1635–1636 ई. में भगवान राव ने भाग लिया था।

❖ शुभकरन बुन्देला

- भगवानराव के पुत्र शुभकरन बुन्देला दतिया के शासक के रूप में बुन्देलखण्ड का सबसे प्रभावशाली मुगल मनसबदार माना जाता था।





- समकालीन कवि गोरेलाल ने अपने ऐतिहासिक ग्रंथ "छत्रप्रकाश" में शुभकरन को मुगल सूबेदारों के बीच प्रमुख सेनापति के रूप में चित्रित किया है।
- शुभकरन के शाहजादा औरंगजेब से अच्छे संबंध रहे थे, बाद में 1658 ई. में बादशाह बनने पर औरंगजेब ने इनसे बुन्देलखण्ड में चंपतराय के दमन में योगदान से लेकर लगातार दक्षिण भारत के मुगल अभियानों में 1662–1678 ई. तक सहयोग लिया था।
- शुभकरन के पुत्र दलपतराव बुन्देला ने भी अपने पिता के साथ बीस-इक्कीस वर्ष की आयु से ही मुगल युद्ध अभियानों में भाग लेना प्रारंभ कर दिया था।
- समकालीन इतिहासकार भीमसेन सक्सेना ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ "तारीख-ए-दिलकुशा" में शुभकरन की वीरता एवं संगठन क्षमता का विवरण दिया है।
- दक्षिण भारत की मुगल राजधानी औरंगाबाद में शुभकरन की हवेली थी।

❖ दलपतराव बुन्देला (1678–1707)

- दलपतराव बुन्देला का मूल नाम 'प्रतापसिंह' था, दलपतराव इनकी उपाधि थी।
- दलपतराव ने दतिया में एक विशाल दुर्ग 'प्रतापगढ़ दुर्ग' का निर्माण करवाया था।
- दतिया राज्य के कागज-पत्र में नीचे लिखा "लिखितम दलीपनगर" नाम दलपतराव के नाम पर ही दतिया का पड़ा था। बुन्देलखण्ड अंचल में यह कहावत आज भी प्रसिद्ध है "दतिया दलपतराव की, जीत सके न कोय"।
- सन् 1665 ई. से 1705 ई. तक दक्षिण भारत के मराठा विरोधी अभियानों में दलपतराव ने औरंगजेब बादशाह के विभिन्न सेनानायकों के अधीन रहकर प्रायः हरावल दस्ते 20 के नायक के रूप में युद्ध किया था। दक्षिण में चार दुर्गों की मजबूत शृंखला जिंजीगढ़ नाम से प्रसिद्ध थी।
- मराठा छत्रपति राजाराम के वहाँ होने की सूचना से औरंगजेब विचलित होकर वहाँ स्वयं जा पहुँचा था। इस युद्ध अभियान में मुगल सेनानायक जुलिफ्कारखाँ के नेतृत्व में दलपतराव ने अपने बुन्देला साथियों के साथ जो घोर संग्राम किया था, वह बुन्देलखण्ड के इतिहास का अमर पृष्ठ माना जाता है। यह युद्ध लगभग आठ वर्ष के बाद 1658 ई. में जीता जा सका था।
- दलपतराव को इस युद्ध में वीरता प्रदर्शित करने के फलस्वरूप "जिंजीगढ़ के विजेता" का खिताब और उस दुर्ग के फाटक ईनाम के रूप में मिले थे, जो आज भी दतिया दुर्ग के फूलबाग-द्वार की शोभा बड़ा रहे हैं।
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार के युद्ध में दलपतराव ने आजमखाँ का पक्ष लिया था और धौलपुर के समीप जाजऊ के रणक्षेत्र में 20 जून, 1707 ई. में वह वीरगति को प्राप्त हो गया था।

❖ रामचन्द्र बुन्देला (1707–1733 ई.)

- वह ओरछा के शासक उदोतसिंह के समर्थन से दतिया की गद्दी पा सका।
- दतिया के रामचन्द्र बुन्देला जयपुर के सवाई जयसिंह के प्रभाव में था और उसका सवाई जयसिंह से निरंतर पत्र-व्यवहार बना रहता था, वह प्रत्येक राजनीतिक कार्य में उसकी सलाह पर ही चलता था।
- इलाहाबाद का सूबेदार मुहम्मद बंगस, छत्रसाल बुन्देला को नीचा दिखाने पर तुला हुआ था। मुगल वजीर कमरुद्दीन के आदेश के बाद भी दतिया के रामचन्द्र ने छत्रसाल के विरुद्ध उसकी सहायता नहीं की थी।
- रामचन्द्र बुन्देला मुगल काल का दतिया राज्य का अंतिम शक्तिशाली शासक था।

बड़ौनी

- ओरछा के शासक मधुकरशाह बुन्देला ने अपने पुत्र वीरसिंहदेव बुन्देला को सन् 1592 ई. में बड़ौनी की जागीर प्रदान की थी।
- 1602 ई. में अकबर के मंत्री अबुल फजल का वध कर वे शहजादे सलीम बाद के बादशाह जहाँगीर को प्रभावित कर ओरछा के शासक और बुन्देलखण्ड के सर्वेसर्वा बनने में सफल हुए थे।

सेंवढ़ा

- सेंवढ़ा की जागीर दलपतराव ने अपने पुत्र पृथ्वीसिंह बुन्देला को प्रदान की थी। उसने ही सेंवढ़ा को नवीन तरीके से बसाकर वहाँ सिन्ध के किनारे एक दुर्ग का निर्माण करवाया था, जिसका नाम कन्नरगढ़ दुर्ग रखा गया था।



- रामचन्द्र का भाई पृथ्वीसिंह बुन्देला, पिता दलपतराव की 1707 ई. में मृत्यु के बाद दतिया राज्य के सेंवढ़ा का स्वतंत्र जागीरदार हो गया था।
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद के समय का लाभ उठाते हुए, सेंवढ़ा के पृथ्वीसिंह बुन्देला ने एक कुशल राजनीतिक-कूटनीतिक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सेंवढ़ा में व्यवस्थित प्रशासकीय, लोक-कल्याणकारी, व्यवस्था कायम कर ली थी।
- वह 1758 ई. तक सेंवढ़ा में शासन करता रहा। उसके समय में मराठों ने सेंवढ़ा राज्य से चौथ वसूलना शुरू कर दिया था।
- पृथ्वीसिंह बुन्देला "रसनिधि" उपनाम से कविताएँ भी लिखता था, रीतिकालीन साहित्यकारों में उसका नाम अग्रगण्य है।
- उसकी मृत्यु के बाद सेंवढ़ा पर पुनः दतिया के बुन्देला परिवार का कब्जा हो गया था।

पन्ना राज्य के उद्भव और उत्कर्ष का इतिहास

❖ चंपतराय (1636–1641)

- चंपतराय ओरछा के संस्थापक रुद्रप्रताप के वंशज थे, इन्हें महोबा की जागीर प्राप्त हुई थी।
- चंपतराय ने अपनी सक्रियता के चलते 1636–1641 ई. के काल में ओरछा पर भी अधिकार कर लिया था। ओरछा की जनता को काबू में कर, उसने मुगल सत्ता को चुनौती दे डाली थी।
- यद्यपि भुलावे में आकर ओरछा के चतुर शासक पहाड़सिंह बुन्देला (1641–1653 ई.) ने चंपतराय को मुगल सेवा स्वीकार करने के लिए तैयार कर लिया था।
- परंतु अंत में चंपतराय ने औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह किया था, कालांतर में इनकी मृत्यु हो गयी।
- छत्रसाल बुन्देला, उसका यशस्वी पुत्र था, जिसने बुन्देलखण्ड के पूर्वी डंगाई भाग में नवीन पन्ना राज्य की स्थापना की थी।

❖ छत्रसाल –बुन्देला

- छत्रसाल बुन्देला का जन्म 4 मई, 1649 ई. को हुआ था।
- उपनाम – महाबली, बुन्देलखण्ड केसरि
- मात्र 16 वर्ष की आयु में छत्रसाल ने दक्षिण भारत के मुगल अभियान के सेनानायक मिर्जाराजा जयसिंह की सेना में कार्य किया।
- इसी समय छत्रसाल की मुलाकात शिवाजी महाराज से सन् 1667 ई. के अंत में हुई।
- छत्रपति ने छत्रसाल को प्रेरित किया, तमाम प्रकार की राजनीतिक-कूटनीतिक शिक्षाएँ दीं और बुन्देलखण्ड में जाकर स्वतंत्रता युद्ध छेड़ने के लिए उससे कहा।
- पं. गोरेलाल ब्रह्मभट्ट के ग्रन्थ प्रकाश के अनुसार "शिवाजी ने छत्रसाल की कमर में तलवार बाँध कर कहा था, कि जाओ तुर्कों को अपने अंचल से निकाल बाहर करो, सेना का संग्रहन तैयार करो और भवानी का नाम लेकर प्रदेश के शत्रुओं से जूझ पड़ो ब्रजनाथ सदैव तुम्हारी रक्षा करेंगे।
- राज्य संचालन के बारे में उनका सूत्र उनके ही शब्दों में –

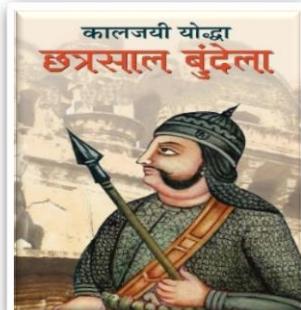
राजी सब रैयत रहे, ताजी रहे सिपाहि।
छत्रसाल ता राज को, बार न बांको जाहि।

- 1731 में 81 वर्ष की आयु में छत्रसाल की मृत्यु हो गई।

❖ छत्रसाल का क्षेत्र विस्तार

- छत्रसाल के राज्य को डंगाई राज्य कहा जाता था।
- सन् 1679 ई. तक छत्रसाल ने डंगाई क्षेत्र अर्थात् पूर्वी बुन्देलखण्ड में एक विस्तृत राज्य स्थापित कर लिया था। इस राज्य का विस्तार उत्तर में कालपी, दक्षिण में सागर - सिरोंज और पश्चिम में ओरछा - दतिया राज्य की सीमा तक था।

"इत जमना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस।
छत्रसाल से लरन की, रही न काहू होंस।"





◆ छत्रसाल के कार्य, क्षेत्र विस्तार एवं सैन्य अभियान

- ◆ जीवन की अंतिम सांस तक बुद्धेलखण्ड की शान के लिए 52 अपराजेय युद्ध लड़े और अंत तक बुद्धेलखण्ड में मुगलों को घुसने नहीं दिया, बुद्धेलखण्ड में अपने राज्य की स्थापना की।
- ◆ सैन्य संगठन – छत्रसाल ने एक विशाल सेना तैयार कर ली जिसमें क्षेत्र के सभी राजपूत वंशों के योद्धा शामिल थे।
- ◆ बीजापुर युद्ध – राजा जयसिंह के साथ दक्षिण विजय के दौरान मई 1665 में बीजापुर युद्ध में महाराज छत्रसाल जू देव बुन्देला ने असाधारण वीरता दिखायी।
- ◆ देवगढ़ विजय – राजा जयसिंह के साथ दक्षिण विजय के दौरान देवगढ़ (छिंदवाड़ा) के गोंड राजा को पराजित किया।
- ◆ मुगल सेना से युद्ध – महाराज छत्रसाल बुन्देला ने मुगल सेना से इटावा, खिमलासा, गढ़कोटा, धामौनी, रामगढ़, कंजिया, मडियादो, रहली, मोहली, रानगिरि, शाहगढ़, वांसाकला सहित अनेक स्थानों पर लड़ाई लड़ी। महाराज क्षत्रसाल बुन्देला ने विषयुक्त कटार से मुगल साम्राज्य के सेनापति रणदुलह के शरीर पर कई घाव किये जिससे वह बाद में मारा गया।
- ◆ सैन्य मुख्यालय – पहाड़ियों और जंगलों से सुरक्षित स्थान 'मऊ' को अपना सुरक्षित सैन्य ठिकाना बनाया।
- ◆ धामौनी अभियान – छत्रसाल ने धामौनी के आसपास के मुगल क्षेत्रों में जमकर गुरिल्ला धावे किए। उसके धावों से घबड़ाकर बादशाह औरंगजेब ने अप्रैल, 1673 ई. में रुहिल्लाखाँ को धामौनी का फौजदार नियुक्त कर आसपास के बुन्देला शासकों को आदेश दिया कि वह छत्रसाल की सत्ता विरोधी गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करें।
- ◆ ओरछा के क्षेत्र – मुगल सत्ता समर्थक ओरछा के क्षेत्रों पर भी उसने धावे कर, उन पर अपना अधिकार जमाकर अपनी सत्ता का इस समय विस्तार किया।
- ◆ नरवर के मुगल क्षेत्र – छत्रसाल ने मुगल सूबा आगरा के जिला नरवर के मुगल क्षेत्रों पर आक्रमण कर उनसे धन वसूल कर लिया।
- ◆ विभिन्न क्षेत्रों से धन वसूली – सन् 1677 ई. में मालवा सूबा की रायसेन सरकार के क्षेत्रों से धन वसूली कर ली, इसी क्रम में राठ, महोबा, ग्वालियर, धामौनी, सागर, दमोह आदि के मुगल क्षेत्रों से भी उसने धन वसूली की।
- ◆ मुगल क्षेत्र पन्ना पर आधिपत्य – पन्ना के आसपास के मुगल क्षेत्रों को उसने अपने राज्य का अंग बना लिया था।
- ◆ मोहम्मद बंगश से युद्ध – इलाहाबाद का सूबेदार मोहम्मद बंगश ने छत्रसाल को पारजित किया एवं राजधानी को घेरा, छत्रसाल ने बाजीराव से सहायता लेकर से इसे पराजित कराया।

नवीन राजधानी स्थापना –

- पन्ना में गौड़ आदिवासी भी रहते थे, घनघोर वनों से घिरे इस स्थान पर इनका ही प्रभाव था।
- छत्रसाल ने अपने "डंगाई राज्य" की राजधानी के लिए इस स्थान को उपयुक्त समझ यहाँ 1675 ई. में अपने राज्य की नवीन राजधानी स्थापित की थी।

विद्वानों के संरक्षक –

- वह विद्वानों का बहुत सम्मान करते थे और स्वयं भी विद्वान थे। वह उच्च कोटि के कवि थे, जिनकी भक्ति तथा नीति संबंधी कविताएँ ब्रजभाषा में प्राप्त होती हैं।
- इनके आश्रित दरबारी कवियों में भूषण, लालकवि, हरिकेश, निवाज, ब्रजभूषण आदि मुख्य हैं।
- भूषण ने आपकी प्रशंसा में जो कविताएँ लिखीं वे 'छत्रसाल दशक' के नाम से प्रसिद्ध हैं।
- 'छत्रप्रकाश' जैसे 'चरितकाव्य' के प्रणेता गोरेलाल उपनाम 'लाल कवि' आपके ही दरबार में थे।

निर्माण कार्य –

- उन्होंने कला और संगीत को भी बढ़ावा दिया, बुद्धेलखण्ड में अनेकों निर्माण करवाए।
- इन्होंने धुबेला महल, मस्तानी महल, छतरपुर नगर, मऊ-सिंहोनिया में किले आदि का निर्माण करवाया।

◆ विजय का कारण

- ◆ बुद्धेलखण्ड का भौगोलिक ज्ञान और उनकी सैनिक प्रतिभा उसे सदैव विजयी बनाती रहती थी।





- ◆ छत्रसाल की सफलताओं से उत्साहित होकर अनेक ठाकुर सामंत-जागीरदार उसकी सेना में शामिल हो, छत्रसाल के सहयोगी बने।
- ◆ स्वामी प्राणनाथ का आशीर्वाद और छत्रपति शिवाजी का विजय मंत्र छत्रसाल को प्रेरणा देते रहे।

♦ छत्रसाल की स्वामी प्राणनाथ से भेट

- ◆ उपनाम – मेहराज
- ◆ जन्म – 6 सितम्बर, 1618 ई., जामनगर (गुजरात)
- ◆ पिता – केशव ठाकुर
- ◆ सम्प्रदाय – प्रणामी संप्रदाय (प्रवर्तक – देवचन्द्र)
- ◆ प्राणनाथ ऐसे हिन्दु सरदारों की खोज कर रहे थे, जो औरंगजेब धर्म विरुद्ध नीतियों का सामना कर सके।
- ◆ तभी छत्रसाल बुन्देला की कीर्ति सुनकर उनके क्षेत्र मज़ व बाद में पन्ना पहुँचे थे।
- ◆ प्रणामी पथ के प्रणेता प्राणनाथ की छत्रसाल से भेट मज़ के समीप 1683 ई. में हुई थी। इसके बाद प्राणनाथ अपनी मृत्यु 29 जून, 1694 ई. तक बुन्देलखण्ड के पन्ना में ही रहे थे।
- ◆ इस घटना से यह आभास होता है, कि छत्रसाल से भेट के बाद, स्वामी प्राणनाथ को अपना राजनीतिक लक्ष्य प्राप्त हो गया था और छत्रसाल को गुरु के रूप में अपना आध्यात्मिक सहयोगी मिल गया था। जिन्होंने छत्रसाल को आशीर्वाद दिया—

छत्ता तोरे राज में, धक धक धरती होय ।

जित जित घोड़ा मुख करे, तित तित फत्ते होय ।



- ◆ छत्रसाल ने प्राणनाथ को अपना गुरु बना लिया तथा प्राणनाथ ने पन्ना में 1687 में छत्रसाल का राज्याभिषेक सम्पन्न कराया।
- ◆ छत्रसाल बुन्देला ने 1706 में छतरपुर नामक नगर की स्थापना की। छत्रसाल बुन्देला ने पन्ना में किलकिला नदी के किनारे 'प्राणनाथ मंदिर' की स्थापना करवाई।

♦ मुगलों से संबंध

- ◆ औरंगजेब ने ओरछा के सभी मंदिरों को गिराने का आदेश दिया। परिणाम स्वरूप छत्रसाल ने अनेक ठाकुरों को मिलाकर विद्रोह प्रारंभ कर दिया। इसी समय छत्रसाल को अपने चचेरे भाई बलदीवान का सहयोग प्राप्त हुआ।
- ◆ औरंगजेब की दक्षिण में व्यस्तता का लाभ उठाकर छत्रसाल ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया, मुगल समर्थक राजा, जागीरदार, फौजदार एवं मनसबदारों को पारजित कर धन प्राप्त किया एवं विशाल साम्राज्य का निर्माण किया।
- ◆ छत्रसाल के विद्रोहों से परेशान होकर औरंगजेब ने 1706 में छत्रसाल को राजा की उपाधि दी और 4000 हजार का मनसब प्रदान किया।
- ◆ मुगल बादशाह बहादुरशाह से छत्रसाल के मधुर संबंध बन गए थे, उसने छत्रसाल को राजा की उपाधि और 5000 हजार का मनसब प्रदान किया था।
- ◆ सन् 1710 ई. के अन्त में छत्रसाल ने सिक्खों के विद्रोह के दमन में मुगलों की ओर से भाग लिया था।
- ◆ अपने युवा पुत्रों के भविष्य को देखते हुए इस समय उसने मुगलों के प्रति उदारनीति का पालन करना शुरू कर दिया था।
- ◆ फर्झसियर (1713–1719 ई.) काल में छत्रसाल का मनसब 6000 हजारी जात का हो गया था। सन् 1713 ई. में सवाई जयसिंह को मालवा का सूबेदार बनाया गया था।
- ◆ छत्रसाल बुन्देला का राज्य मालवा की सीमा से लगा हुआ था। अतः उन्होंने सवाई जयसिंह से संपर्क स्थापित कर उनके साथ मिलकर मराठों को दबाने के अभियान में शामिल होने की हासी भरी थी।
- ◆ छत्रसाल ने जयसिंह के साथ मिलकर मालवा में सक्रिय विद्रोही अफगान दिलेरखान को 1715 ई. में पराजित किया था।
- ◆ कालान्तर में मोहम्मद शाह रंगीला (1719–1748 ई.) के शासनकाल में मोहम्मद बंगश को इलाहाबाद का सूबेदार बनाया गया।





- ◆ छत्रसाल अब वृद्ध हो चुके थे तथा मोहम्मद बंगश ने छत्रसाल की राजधानी को घेर लिया, छत्रसाल ने पेशवा बाजीराव से मदद मांगी।

जो बीती गज—ग्रह पर, सो गति भई है आज।
 बाजी जात बुन्देल की, राखो बाजी लाज॥
- ◆ बाजीराव अपनी सेना समेत आया तथा मोहम्मद खान बंगश को "मौधा के युद्ध" में हराकर छत्रसाल की सहायता की।
- ◆ छत्रसाल ने पेशवा को अपना तीसरा पुत्र मानकर अपने राज्य का 1/3 भाग पेशवा को दे दिया।

♦ मराठों से संबंध

- ◆ शिवाजी को अपना आदर्श मानते थे शिवाजी की सलाह पर बुन्देलखण्ड में मुगलों के विरुद्ध विद्रोह प्रारंभ किया।
- ◆ मोहम्मद खान बंगश के विरुद्ध मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम से सहायता प्राप्त।
- ◆ छत्रसाल ने बाजीराव प्रथम को कालपी, सागर, गुरसराय, झाँसी, गुना आदि रियासतें दी।

♦ छत्रसाल का साम्राज्य विभाजन

- छत्रसाल ने अपनी मृत्यु (4 दिसम्बर 1731 ई.) से पूर्व अपने साम्राज्य की रियासतों को अपने पुत्रों में निम्नानुसार विभाजित किया था –
 1. ज्येष्ठ पुत्र हिरदेशाह को पन्ना, कलिंजर, मऊ, गढ़कोटा एवं शाहगढ़ आदि 32 लाख रुपए की आय वाली रियासतें।
 2. पुत्र जगतराज को जैतपुर, अजयगढ़, चरखारी, बिजावर, सरीला, भूरागढ़ एवं बाँदा आदि 35 लाख रुपए की आय वाली रियासतें।
 3. माने हुए पुत्र बाजीराव प्रथम को कालपी, हटा, अजयनगर, जालौन, सागर, गुरुसराय, झाँसी, सिंरोज, एवं गुना आदि 39 लाख रुपए की आय वाली रियासतें।
- इस प्रकार बुन्देलखण्ड की कुछ महत्वपूर्ण रियासतें मराठों के आधिपत्य में आ गई। पेशवा बाजीराव प्रथम के बाद बुन्देलखण्ड में मराठों ने अपने प्रभुत्व का विस्तार किया।
- 1817–18 ई. के तृतीय आंग्ल–मराठा युद्ध में मराठे परास्त हुए और मराठों ने अपने आधिपत्य वाली बुन्देलखण्ड की रियासतें अंग्रेजों को सौंप दी।
- इस प्रकार 1818 ई. से बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों के प्रभुत्व की स्थापना हुई।

❖ हृदय शाह

- रीवा के राजा अवधूत सिंह को हराकर रीवा पर अधिकार किया तथा बुन्देली दरवाजे का निर्माण करवाया।

चंदेरी–बानपुर रियासत

- 1800 ई. के लगभग सागर के मराठा सूबेदार रघुनाथ राव ने मोरोपन्त को चंदेरी पर आक्रमण हेतु भेजा।
- चंदेरी पर सागर के मराठों का प्रभाव बढ़ने से रोकने हेतु 1810 ई. में खालियर के सिंधिया ने अपने फ्रेंच सेनापति जीन बैटिस्ट को चंदेरी पर आक्रमण करने भेजा।
- चंदेरी के राजा मोर प्रहलाद को झाँसी भागना पड़ा। इस तरह चंदेरी पर सिंधिया का आधिपत्य स्थापित हो गया।
- मोर प्रहलाद के आधिपत्य में अब मात्र बानपुर रियासत बची।
- शाहगढ़ रियासत के राजा बखतबली (अर्जुन सिंह के गोद लिए पुत्र) एवं बानपुर रियासत के राजा मर्दन सिंह (मोर प्रहलाद के पुत्र) सिंधिया से किसी भी कीमत पर अपने छिने हुए क्षेत्र गढ़कोटा एवं चंदेरी प्राप्त करना चाहते थे।
- अपने इसी स्वार्थ के कारण उन्होंने अंग्रेजों से मदद हेतु उन्हें सहायता भी दी।

❖ मर्दन सिंह

- बुन्देला विद्रोह के प्रमुख विद्रोही मधुकर शाह को गिरफ्तार करवा कर हैमिल्टन को सौंप दिया।

जैतपुर रियासत

- पन्ना नरेश छत्रसाल ने राज्य के बटवारे में जैतपुर रियासत अपने पुत्र जगत राज (1732–1748 ई.) को सौंपी थी।
- 1758 ई. में जगतराज की मृत्युपरांत पहाड़ सिंह (1758–1765 ई.) जैतपुर के शासक बने।



- पहाड़ सिंह के पश्चात उनके पुत्र गजराज सिंह (1765–1789 ई.) एवं उनके बाद उनके पुत्र केशरी सिंह (1789–1813 ई.) जैतपुर नरेश बने।
- इनके समय बाँदा के अली बहादुर एवं हिम्मत बहादुर बुन्देलखण्ड में चौथ वसूली एवं लूटपाट कर रहे थे।
- केशरी सिंह ने अपनी सुरक्षा हेतु कम्पनी सरकार के साथ 13 सितम्बर 1812 ई. में सुरक्षात्मक संधि कर ली। साथ ही 52 ग्रामों के जैतपुर राज्य की सनद प्राप्त कर ली।

❖ पारीछत (1813–1844 ई.)

- केशरी सिंह के पुत्र पारीछत (1813–1844 ई.) ने रियासत की कमान सँभाली।
- जैतपुर राजा पारीछत न केवल बुन्देलखण्ड अपितु समस्त भारत को कम्पनी राज से मुक्ति दिलाना चाहते थे।
- मात्र 5 वर्ष की आयु 1813 ई. में वे राजगद्दी पर बैठे। उनकी माँ भवानी ने किसी को उनका संरक्षक नहीं बनाया।
- 12 वर्ष की आयु 1820 ई. में तटम के जागीरदार बहादुर सिंह की पुत्री रजो के साथ उनका विवाह हो गया।
- सुगरा गाँव के जागीरदार माखन सिंह के अत्यन्त बहादुर पुत्र नौने अर्जुन सिंह को पारीछत ने अपना आदर्श बनाया।
- पारीछत शिकार, घुड़दौड़ खेलने के बहाने आसपास के राजा, जागीरदार इत्यादि से मेल-जोल बढ़ा रहे थे। पारीछत उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट करने के प्रयास कर रहे थे।

बुढ़वा मंगल

- बुन्देलखण्ड के राजाओं को काशी नरेश ईश्वरी नारायण सिंह की ओर से 1835 ई. में बुढ़वा मंगल मेले के आयोजन में भाग लेने का आमंत्रण मिला।
- जैतपुर राजा पारीछत एवं उनके भतीजे चरखारी नरेश रतन सिंह सहित बुन्देलखण्ड के कुछ प्रमुख राजा 1835 ई. में बुढ़वा मंगल में भाग लेने काशी पहुँचे।
- बुढ़वा मंगल एक सांस्कृतिक आयोजन था जो काशी में गंगा नदी में नावों को आपस में बांधकर मनाया जाता था। इसमें विभिन्न क्षेत्रों के राजे—महाराजे, बड़े—बड़े कलावन्त संगीतज्ञों के अलावा प्रसिद्ध नर्तकियाँ आती थीं।
- काशी के बुढ़वा मंगल में बुन्देलखण्ड सहित भारत के अन्य भागों से भी राजे—महाराजे आये हुए थे। इन सभी ने भारत में व्याप्त अंग्रेजों के अत्याचारों की चर्चा की।
- इन्होंने विचार किया कि यदि ये सभी एकजुट होकर प्रयास करें तो अंग्रेजों के आतंक से मुक्ति पाई जा सकती है।
- अपने इसी विचार को कार्य रूप देने के लिए अगले साल 1836 ई. में चरखारी नरेश रतनसिंह (1820–1857 ई.) के संरक्षण में 'सूपा' नामक स्थान पर काशी जैसे बुढ़वा मंगल का आयोजन किया गया।
- चरखारी नरेश रतनसिंह ने इस बुढ़वा मंगल में बुन्देलखण्ड की लगभग 42 छोटी बड़ी रियासतों के शासक, जागीरदार एवं उच्चाधिकारियों को आमंत्रित किया।
- इसी आयोजन में सभी ने मिलकर विद्रोह करने की योजना बनाई जिसके नेतृत्वकर्ता सर्वसम्मति से राजा पारीछत को चुना गया, यह विद्रोह 'बुंदेला विद्रोह' के नाम से जाना गया।

चरखारी रियासत

- जैतपुर के साथ—साथ चरखारी इलाका भी छत्रसाल ने अपने पुत्र जगतराज (1732–1748 ई.) को दिया था।
- वस्तुतः चरखारी नगर की स्थापना का श्रेय जगतराज को ही जाता है।
- जगतराज ने चरखेरी में मंगलवार को एक दुर्ग की नींव डाली। इसी कारण यह दुर्ग मंगलगढ़ दुर्ग कहलाया।
- जगतराज के पश्चात उनके दूसरे पुत्र पहाड़ सिंह जैतपुर के राजा बने।
- जगतराज ने कीरत सिंह को जैतपुर राज्य का उत्तराधिकारी बनाया था। इस कारण गुमान सिंह व खुमान सिंह ने विद्रोह कर दिया।
- गृह कलह मिटाने के लिए पहाड़ सिंह ने अपने भतीजे गुमान सिंह को बाँदा व अजयगढ़ तथा खुमान सिंह को चरखारी रियासत सौंप दी।
- खुमान सिंह (1765–1782 ई.) चरखारी रियासत के राजा बने। 1782 ई. में खुमान सिंह ने बाँदा हड्डपने वहाँ आक्रमण किया। गुमान सिंह के सेनापति नौने अर्जुन सिंह ने युद्ध स्थल में खुमान सिंह को मार डाला।





- खुमान सिंह के पश्चात् उसका पुत्र विजय बहादुर (1782–1829 ई.) चरखारी का राजा बना।
- 1789 ई. में विजय बहादुर ने अली बहादुर एवं हिम्मत बहादुर से मदद माँगी। इन्होंने नौने अर्जुन सिंह को मार डाला।
- शमशेर बहादुर के प्रकोप से रक्षार्थ विजय बहादुर ने 29 जुलाई 1804 ई. को कम्पनी के प्रतिनिधि जॉन बैली से सुरक्षात्मक संधि की।
- विजय बहादुर ने ईशा नगर तालाब एवं विजय सागर का निर्माण कराया।
- 1829 ई. में रतन सिंह (1829–1860 ई.) चरखारी के राजा बने। रतन सिंह के काका पारीछत ने चूँकि उनके उत्तराधिकार का विरोध किया था अतः वे मन ही मन उनसे चिड़ते थे।
- बुंदेला विद्रोह के दौरान रजा परीछत को गिरफ्तार करने में रतनसिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

'सबरे राजा जुरे चरखारी बुढ़वा मंगल कीन।
पुन सब बैठ जाय गढ़ियन में पारीछत को मोहरा दीन ॥ ॥'

चिरगाँव रियासत

- ओरछा नरेश वीरसिंह देव प्रथम के आठ पुत्र थे। उन्हीं में से मोहकम सिंह को चिरगाँव जागीर मिली थी।
- 1817 ई. में बखतसिंह चिरगाँव गद्दी पर आसीन हुए। झाँसी एवं ओरछा राज्य से स्वतंत्र रहने हेतु बखतसिंह ने कम्पनी सरकार से स्वतंत्र राज्य की सनद की माँग की।
- इस माँग के अनुसार गवर्नर जनरल लार्ड हेस्टिंग्स की ओर से बुन्देलखण्ड के कार्यकारी राजनीतिक प्रतिनिधि लेफिटनेंट मूडी ने 27 नवम्बर 1821 ई. को राव बखतसिंह से संधि की।
- इस संधि पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् 11 अप्रैल 1823 ई. को 10 गाँव के चिरगाँव राज्य की सनद बखतसिंह को प्रदान की।
- आखेट खेलते समय अंग्रेजों ने बखतसिंह के दो पालतू मोरों को मार डाला। क्रोधित हो बखतसिंह ने 15 अप्रैल को अंग्रेजी – सेना के कैम्प पर हमला बोल दिया।
- अंग्रेजों ने इसे संधि का स्पष्ट उल्लंघन माना। अब युद्ध अनिवार्य हो गया। कम्पनी सरकार ने सागर एवं ग्वालियर से सेना एकत्रित कर 17 अप्रैल 1841 ई. को चिरगाँव पर हमला बोल दिया।
- 18 से 21 अप्रैल 1841 ई. तक कैप्टन बर्नर ने चिरगाँव किले पर गोलाबारी की, किला टूट गया। बखतसिंह का पुत्र मारा गया।
- बखतसिंह अपने पत्नी रानी लड़ई दुलैया एवं शेष पुत्र के साथ ओरछा गए। ओरछा नरेश तेजसिंह ने उन्हें मोहनगढ़ किले में शरण दी।
- कम्पनी के दबाव डालने पर तेजसिंह ने उन्हें जैतपुर राजा पारीछत के पास भेजा। इसके पश्चात् बखतसिंह ने 1842 ई. के बुन्देला विद्रोह में पारीछत, मधुकरशाह आदि के साथ मिलकर अंग्रेजों को करारी चुनौती दी।
- बखतसिंह पर संधि का उल्लंघन एवं विद्रोह का आरोप लगाते हुए कम्पनी सरकार ने चिरगाँव का विलय कम्पनी राज्य में कर लिया।

शाहगढ़ रियासत

- शाहगढ़ रियासत पन्ना नरेश छत्रसाल ने अपने पुत्र हिरदेशाह (1732–1739 ई.) को दी थी।
- हिरदेशाह के पुत्र सभासिंह पन्ना के राजा बने।
- सागर के मराठा सूबेदार गोविन्द वल्लाल खैर के दबाव वश सभासिंह ने 1744 ई. में शाहगढ़ रियासत पृथ्वीराज को सौंप दी। पृथ्वीराज ने गढ़ाकोटा क्षेत्र भी मराठों से प्राप्त कर लिया।
- इस प्रकार शाहगढ़–गढ़ाकोटा रियासत बनी एवं इसकी सनद पेशवा से पृथ्वीराज (1744–1772 ई.) ने प्राप्त कर ली एवं शाहगढ़ को राजधानी बनाया।
- पृथ्वीराज के बाद उनके पुत्र हरिसिंह (1772–1785 ई.) राजा बने। उन्होंने गढ़ाकोटा को राजधानी बनाया एवं वहाँ अनेक मंदिरों का निर्माण भी कराया।



- हरीसिंह की मृत्यु पश्चात् मर्दन सिंह (1784–1810 ई.) राजा बने। वह एक धार्मिक व्यक्ति थे एवं स्थापत्य में रुचि रखते थे।
- गढ़ाकोटा एवं शाहगढ़ में उन्होंने अनेक महलों का निर्माण कराया। 1808 ई. में मालथौन दुर्ग बनवाया।
- उन्होंने सागर के सूबेदार रघुनाथराव (आका साहब) को चौथ देना बन्द कर दिया। 1809 ई. में रघुजी भौंसले ने गढ़ाकोटा पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में मर्दन सिंह की मृत्यु हो गई।
- मर्दन सिंह के पुत्र अर्जुन सिंह (1810–1842 ई.) ने भौंसले के विरुद्ध ग्वालियर के सिंधिया से सहायता मांगी। सिंधिया ने राज्य का आधा भाग देने की शर्त पर सहायता दी। सिंधिया ने भौंसले को परास्त कर अर्जुन सिंह की रक्षा की।
- संधि के अनुसार गढ़ाकोटा क्षेत्र सिंधिया ने प्राप्त कर लिया। सिंधिया का कमांडर कर्नल जीन बैप्टिस्ट कुछ समय तक गढ़ाकोटा का प्रबंधक नियुक्त किया गया।
- अर्जुन सिंह ने शाहगढ़ को अपने बचे राज्य की राजधानी बनाया।
- 11 मार्च 1818 ई. को कम्पनी सरकार ने 'सागर–नर्मदा क्षेत्र' का गठन कर सागर राज्य का विलय कर लिया।
- 5 दिसम्बर 1835 ई. को कर्नल स्लीमेन ठगों एवं लुटेरों की समस्याओं के समाधानार्थ शाहगढ़ आया।
- उन्होंने अपने भाई तखतसिंह के पुत्र (अपने भतीजे) बखतबली को गोद लिया। इसी समय 1836 ई. में चरखारी में बुढ़वा मंगल का आयोजन हुआ।
- इसी समय 1842 ई. का बुन्देला विद्रोह आरंभ हो गया। अर्जुन सिंह ने विद्रोहियों को अपनी रियासत में विचरण की स्वीकृति दे दी।
- बीमारी के कारण 3 जून 1842 ई. को अर्जुन सिंह का निधन हो गया। बखतबली शाहगढ़ रियासत के राजा बने।
- मदद के बदले बखतबली को गढ़ाकोटा क्षेत्र सिंधिया से दिलाने का अंग्रेजों ने आश्वासन दिया।
- इसी लालच के चलते बखतबली ने 22 दिसम्बर 1842 ई. को बुन्देला विद्रोह के एक प्रमुख विद्रोही हीरापुर के हिरदेशाह को सपरिवार पकड़ कर स्लीमेन के सुपुर्द कर दिया।
- जब गढ़ाकोटा सिंधिया से लेकर बखतबली को नहीं दिया तो बखतबली अंग्रेजों के सहयोगी से असहयोगी हो गया।
- बानपुर राजा मर्दन सिंह के साथ बखतबली ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ एक ऐसे खतरनाक त्रिगुट की स्थापना की जिसने 1857 ई. की क्रांति में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए।
- 1857 ई. की क्रांति के दौरान ही अन्ततः बखतबली के सेनापति बोधन दौआ ने गढ़ाकोटा पर अधिकार कर लिया।
- 11 फरवरी 1858 ई. को ब्रिगेडियर जनरल ह्यूरोज ने पुनः गढ़ाकोटा पर अधिकार कर लिया। 4 मार्च 1858 ई. को शाहगढ़ पर भी अधिकार कर लिया।
- एक कड़े संघर्ष के पश्चात् 6 जुलाई 1858 ई. को बखतबली ने आत्मसमर्पण कर दिया।

बुन्देलखण्ड की रियासतें और 1857 ई. की क्रांति

- 1818 ई. से 1848 ई. के मध्य बुन्देलखण्ड में ब्रिटिश सत्ता का प्रसार हुआ।
- 1848 ई. में लार्ड डलहौजी भारत का गवर्नर जनरल बन कर आया। वह एक महान साम्राज्यवादी था। वह भारत में अपनी हड्डप नीति के कारण कुख्यात हुआ। उसने बुन्देलखण्ड की एक प्रमुख रियासत झाँसी को अपना शिकार बनाया।
- झाँसी के राजा की मृत्युपरान्त उसकी रानी द्वारा गोद लिए गए पुत्र दामोदर राव को दत्तक पुत्र के रूप में मान्यता नहीं दी। इससे रानी लक्ष्मीबाई कुपित हो गई।
- 21 नवम्बर 1853 ई. को झाँसी के राजा गंगाधर राव की मृत्योपरांत शोक संवेदना व्यक्त करने बानपुर राजा मर्दन सिंह, शाहगढ़ राजा बखतबली, कानपुर के नाना साहब एवं तात्या टोपे झाँसी आए।
- इन्होंने मिलकर अंग्रेज विरोधी रणनीति तैयार की थी। डलहौजी द्वारा झाँसी के हड्डपे जाने पर इस रणनीति पर तेजी से अमल प्रारंभ हो गया।
- 10 मई को मेरठ में 1857 ई. की क्रांति आरंभ हुई। 4 जून को इस क्रांति ने बुन्देलखण्ड के उत्तरी प्रवेश द्वार झाँसी में दस्तक दी। 8 जून को झाँसी के विद्रोहियों ने 110 अंग्रेजों को झोकनबाग में मौत के घाट उतार दिया।

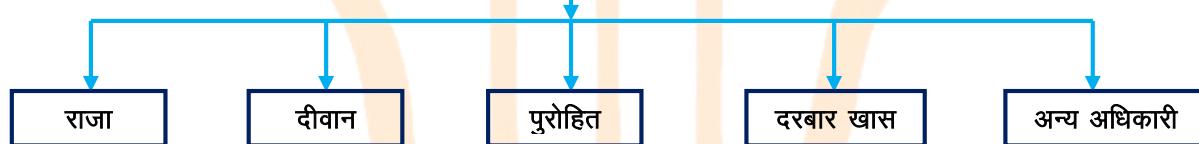




- 12 जून को ललितपुर-बानपुर में विद्रोह का नेतृत्व बानपुर राजा मर्दन सिंह ने किया। ललितपुर स्थित अंग्रेज सुरक्षा हेतु सागर जाना चाहते थे।
- इसके पश्चात् 1 जुलाई, 1857 ई. को सागर में क्रांति आरंभ हो गई। विद्रोहियों के डर से सागर स्थित 370 अंग्रेजों ने सागर के किले में शरण ली।
- बानपुर राजा मर्दन सिंह, शाहगढ़ राजा बखतबली, बखतबली के सेनापति बोधन दौआ एवं गढ़ी अम्बापानी के नवाब बन्धु आदिल मोहम्मद खाँ एवं फाजिल मोहम्मद खाँ ने सागर स्थित अंग्रेजों को चारों ओर से घेर लिया।
- उत्तर बुन्देलखण्ड में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे एवं बाँदा के नवाब अली बहादुर द्वितीय ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखी थी।
- मध्य बुन्देलखण्ड में मर्दन सिंह एवं बखतबली अंग्रेजों पर सितम ढा रहे थे।
- दक्षिण की ओर रामगढ़ की रानी अवन्तीबाई के नेतृत्व में विद्रोहियों का आतंक था।
- अन्ततः ब्रिगेडियर जनरल ह्यूरोज के अधीन महू में 'सेन्ट्रल इंडिया फोर्स' का गठन किया गया। ह्यूरोज ने एक लम्बे संघर्ष के पश्चात् बुन्देलखण्ड में 1857 ई. की क्रांति का दमन किया।
- रानी लक्ष्मीबाई युद्ध करते-करते वीरगति को प्राप्त हुई। शाहगढ़ राजा बखतबली एवं बानपुर राजा मर्दन सिंह ने आत्म समर्पण कर दिया। तात्या टोपे को शिवपुरी में फँसी दे दी गई।
- इस प्रकार बुन्देलखण्ड में क्रांति का दमन कर दिया गया। क्रांति के दमन में बुन्देलखण्ड की टीकमगढ़, चरखारी एवं पन्ना रियासतों ने अंग्रेजों की मदद की।
- अधीनस्थ संघ की नीति के तहत संधि एवं सनद वाली 30 रियासतें अधीनस्थ संघ में सम्मिलित हो गई।

बुन्देलखण्ड की प्रशासनिक व्यवस्था

- ◆ मध्यकालीन भारत में बुन्देलखण्ड पर बुन्देला ठाकुरों ने सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था की नीव रखी, जिन्हे निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है।



◆ राजा –

- बुन्देलखण्ड की मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में शासक था राजा ही सर्वेसर्वा होता था।
- उसकी शक्तियां निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी होती थी।
- किन्तु मुगल सत्ता क्षेत्रीय फौजदारों के माध्यम से, बुन्देला शासकों की नीतियों पर नजर रखते थे।

◆ दीवान –

- दीवानों के पास वित्त, राजस्व के साथ-साथ प्रशासनिक शक्तियाँ भी रहती थी।
- शासक की अनुपस्थिति में वह राज्य संचालन के लिए आवश्यक सभी शक्तियां रखता था।

◆ पुरोहित –

- प्यान, वंशीय सनाद्य ब्राह्मण बुन्देला शासकों के दीक्षा गुरु थे, जिनका कार्य राजा को सलाह एवं राजा के लिए धार्मिक अनुष्ठान करना

◆ दरबार खास एवं हुजूर-दरबार

- राज्य के सभी प्रकार के कर्मचारी, जागीरदार, गाँव के चौधरी आदि दरबार खास के नियंत्रण में रहते थे।
- हुजूर दरबार, राजा के व्यक्तिगत जागीरदारों-सामंतों के लिए रहता था, यह एक प्रकार की विशेष सभा होती थी।



❖ अन्य कर्मचारी एवं विभाग –

- रानीमाता – ज्येष्ठ रानी
- खास–कलम – कायस्थ परिवार से सम्बन्धि, जिसका प्रमुख कार्य राजा का पत्र व्यवहार, सनद आदि को सुलेख मे लिखना होता था, कागजो का लेखा–जोखा भी रखते थे।
- वसीठी, पायक, दौआ – सन्देश व डाक भेजने बाले अधिकारी

धर्मदाय – इसका कार्य गरीब, कमजोर लोगों को एवं ब्राह्मणों को दान देना होता था।

बुन्देलखण्ड की कला–संस्कृति

- सांस्कृतिक इतिहास के अन्तर्गत, मानवीय क्रियाओं, उसकी सृजनशीलता, उसकी संवेदना का अध्ययन किया जाता है, इस शीर्षक के अंतर्गत संक्षेप में मध्यकालीन बुन्देलखण्ड के राज्यों की साहित्य कला, लोकप्रवृत्ति का विवरण दिया जाएगा।

साहित्य

स्थापत्य

चित्रकारी

❖ साहित्य

- बुन्देला शासक विद्वानों के संरक्षक ही नहीं वह स्वयं भी उच्च कोटि के विद्वान थे।
- बुन्देला शासकों में ओरछा के मधुकरशाह, रामशाह, बार–चंदेरी के देवीसिंह, दतिया के दलपतराव और पन्ना के छत्रसाल बुन्देला स्वयं कवि थे। इनमें देवीसिंह बुन्देला संस्कृत भाषा के विद्वान और जानकार थे।
- रुद्र प्रताप के समय खेमराज ब्राह्मण मंसाराम सिद्ध, मुधकर शाह तथा वीरसिंह देव के समय हरिराम व्यास, केशव मिश्र, पृथ्वीसिंह बुन्देला (रसनिधि) , अक्षर अनन्य (रसनिधि के गुरु)आदि कवि थे।
- दतिया राज्य में 'तारीख–ई–दिलकुशा' के रचनाकार भीमसेन सक्सेना, कवि जोगीदास, सेवड़ा के जागीरदार
- गोरे लाल तिवारी (लाल कवि) – छत्रप्रकाश (छत्रसाल)
- महाकवि भूषण – (छत्रसाल) – छत्रसाल दशक, शिवराज भूषण शिवाबाबनी, भूषण उल्लास, भूषण
- स्वामी प्राणनाथ – कुलजम स्वरूप (छत्रसाल), धामी सम्प्रदाय के मुख्य धर्म ग्रंथ 'कुलजाम–स्वरूप' में स्वामी प्राणनाथ की वाणियाँ सम्मिलित हैं।
 - महाकवि केशवदास (वीर सिंह देव) – वीर चरित, रतन बावनी, जहाँगीर जस चन्द्रिका आदि
 - निपट बाबा – निपट निरंज

❖ स्थापत्य

- इस काल में विशेष तौर से दतिया एवं ओरछा राज्यों में वीरसिंह देव बुन्देला ने ऐसे अनुपम महल, मन्दिर एवं भवन बनवाये कि ओरछा को बुन्देलखण्ड की 'नेशनल आर्ट गैलरी' कहा जाने लगा।
- वीरसिंहदेव ने मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि स्थान पर "केशवराय" का सुप्रसिद्ध मंदिर बनवाया था, यह उत्तर भारत का उत्कृष्ट मंदिर था, इसका शिल्प अत्यन्त सुदृढ़ और बेजोड़ था।
- बुन्देली स्थापत्य कला के महलों–दुर्गों में मजबूती, सुरक्षा, वैभव–प्रदर्शन, हवा और रोशनी, पानी का पूरा ध्यान रखा जाता था।

विशेषता –

- बुन्देली स्थापत्य में बुन्देली, मुगल तथा राजपूती स्थापत्य का मिश्रण ।
- बुन्देली स्थापत्य में मजबूती, सुरक्षा, वैभव–प्रदर्शन, हवा और रोशनी तथा पानी का पूरा ध्यान रखा गया है।
- पत्थर की बनाई जालियाँ एवं बाहर की ओर बैठने के लिए चारों ओर के खुले मंच इन इमारतों की विशेषता हैं।



ओरछा की प्रमुख इमारतें

❖ राजा महल – ओरछा

- निर्माता – नींव रुद्रप्रताप ने रखी थी, बाद में इसे भारतीचन्द और मधुकरशाह ने पूरा किया था।
- ईमारत राजा महल तीन मंजिला है और ओरछा की सबसे प्राचीन इमारत है।
- इसकी यहाँ की प्रमुख विशेषताओं में चूने का मजबूत स्थापत्य, खुले आँगन, सघन चित्रकारी, मुस्लिम प्रभाव की दाढ़ी, चौगान खेलने के चित्र, बारादरियाँ और बालकनियाँ आदि हैं।



❖ जहांगीर महल – ओरछा

- निर्माता – वीर सिंह बुन्देला ने अपने मित्र जहांगीर के लिए
- हिन्दू-मुस्लिम शैली की ईमारत
- महल पाँच मंजिला है और यह वहाँ के बुन्देली स्थापत्य की सर्वोत्तम कृति है।
- इस महल की विशेषताओं में पानी के लिए भूमिगत भिट्ठी की नालियाँ, प्रत्येक मंजिल में खुले आँगन, छज्जेदार बालकनियाँ, पथर की बारीक जालियाँ, गणेश की मूर्ति, हाथी की कारीगरी, पशु-पक्षियों का अंकन, महल के कक्षों के भित्ति चित्र आदि हैं।
- यह हिन्दू-मुस्लिम शैली की ईमारत है। इमारत निर्माण का भाव हिन्दू-राजपूती है और कारीगर का मन मुस्लिम है।



❖ शीश महल – ओरछा

- निर्माता – 1706 ई. के लगभग उद्योत सिंह ने
- इसमें भारतीय हिन्दू शैली के आठ खम्बे बने हुए हैं।
- वर्तमान में इसे होटल के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है।



❖ रायप्रवीण महल – ओरछा

- निर्माता – इन्द्रजीत बुन्देला द्वारा प्रेमिका प्रवीण राय
- जहांगीरी महल के उत्तर में दो मंजिला रायप्रवीण का महल है।
- इस महल में तलघर है, इससे जुड़ा हुआ बड़ा बागीचा है, तलघर को ठंडा रखने की भी व्यवस्था थी।
- प्रवीणराय का एक आकर्षक चित्र भी यहाँ बना हुआ है। प्रवीणराय ओरछा राज्य की प्रसिद्ध नर्तकी, कवियित्री व कलाकार थी।



ओरछा के मंदिर

❖ रामराजा मन्दिर – ओरछा

- निवास हेतु भारतीचन्द ने बनवाया
- भारतीचन्द के अनुज ओरछा के शासक मधुकरशाह की प्रसिद्ध रानी गणेशकुँअरि ने इस महल में अयोध्या से लाकर भगवान रामराजा की मूर्ति स्थापित कर दी थी। तब से यह महल रामराजा मंदिर के नाम से प्रसिद्ध हो गया है।
- इसका प्रवेश द्वार महराबदार है, खुला और बड़ा आँगन है, दालानें बनी हैं, मंदिर की छत पालकीनुमा है।
- मंदिर परिसर में जुझारसिंह का महल, फूलबाग, सावन भादों और हरदौल की समाधि भी है।



❖ चतुर्भुज मन्दिर – ओरछा

- निर्माता – मधुकर शाह
- लाल बलुआ पत्थर से निर्मित शतदल कमल युक्त प्रवेश द्वार
- स्थापत्य की दृष्टि से ऊँची कुर्सी देकर बनाये गये इस मंदिर की बनावट श्रेष्ठतम है।
- लाल-बलुआ पत्थर का शतदल कमल युक्त प्रवेश द्वार, डांटदार गुम्बदों से युक्त सोलह भागों में विभाजित हॉल और उसके दृश्य को झिंझरियों से देखने की व्यवस्था।
- मंदिर के ऊपर शिखर हैं, जो कभी स्वर्ण कलश युक्त थे।
- मंदिर के सभीप ही भक्त कवि हरिराम व्यास और वीरसिंहदेव के मंत्री कृपाराम गौड़ का निवास स्थान था।
- युगलकिशोर का मंदिर भी यही पास में है।



❖ लक्ष्मी मन्दिर – ओरछा

- निर्माता – वीर सिंह देव
- विशेषता – यह मंदिर त्रिभुजाकार दिखाई देता है, पर है वर्गाकार, इसकी आकृति दुर्ग जैसी है।
- इसमें 17वीं व 19वीं सदी की चित्रकारी प्रदर्शित है।



पन्ना के बुंदेलों द्वारा निर्मित भवन

❖ मऊ में स्थित भवन

- ◆ छत्रसाल स्मारक
- ◆ मस्तानी महल
- ◆ बादल महल

❖ प्राणनाथ मंदिर

- पन्ना में किलकिला नदी के निकट स्थित
- धारी संप्रदाय के प्राणनाथ का मंदिर



❖ जैतपुर दुर्ग

- छत्रसाल के पुत्र जगतराज द्वारा निर्मित

दतिया की इमारतें

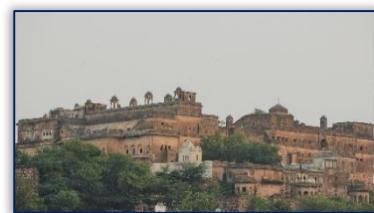
❖ सतखंडा महल

- अन्य नाम - वीरसिंह देव पैलेस या हवामहल
- दतिया का यह सात खण्डीय महल स्वास्तिक आकार में चतुर्भुजाकार है।
- स्थापत्यकार पर्सी ब्राउन ने बुन्देलखण्ड की सर्वश्रेष्ठ ईमारत माना है।
- महल की चित्रकला, उसका कोडिया चिकना प्लास्टर, दरवाजे पर ड्रेगन और हाथी, लाल पत्थर के खम्बे, मंडप और चंदोपे तथा ऊपर विराजे गणेशजी, इस महल की आकर्षकता में वृद्धि करते हैं।



❖ प्रतापगढ़

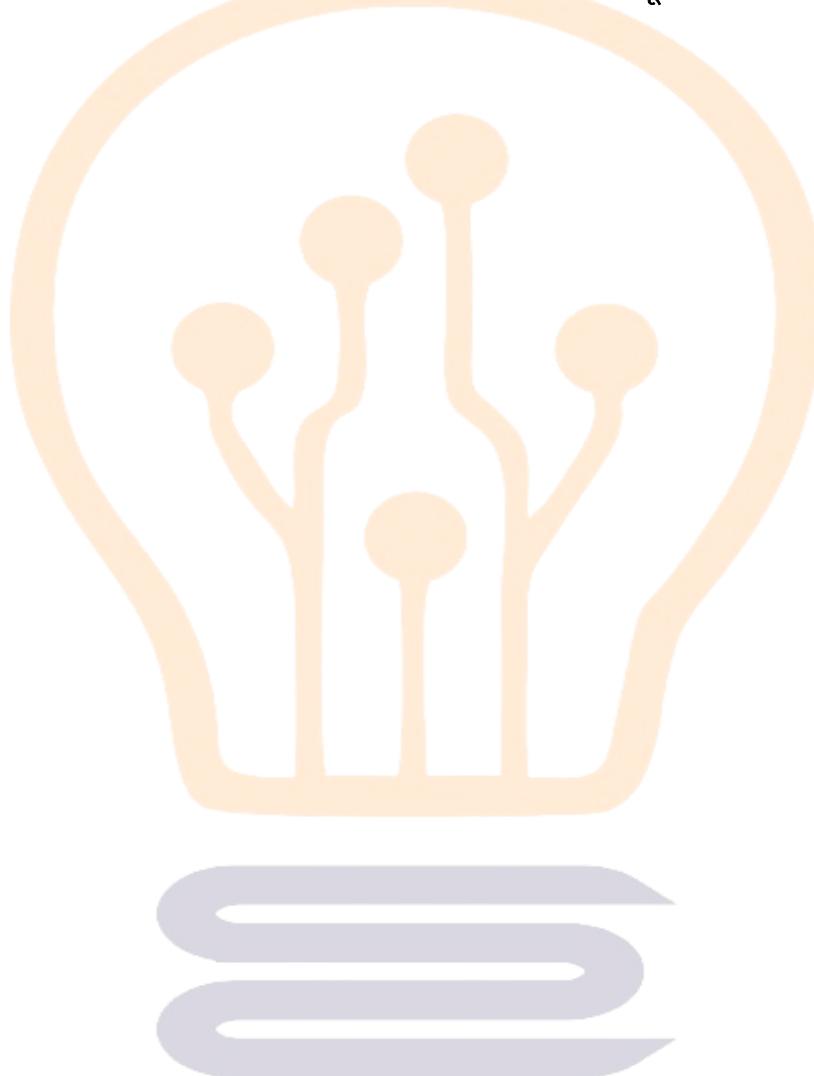
- दतिया किले के नाम से प्रसिद्ध
- दलपतराव द्वारा निर्मित
- बाबर की चार बाग पद्धति से प्रेरित।
- तीन मंजिला भवन





❖ चित्रकला

- बुन्देलखण्ड की चित्रकला चंदेलों की चित्रकारी का ही विकसित रूप है।
- भित्ति चित्र बनाने के लिए चूने में शंख का चूर्ण और तेल मिलाकर सतह को चिकना बनाया जाता था।
- रंग के रूप में गेऊरी मिट्टी, जला कोयला, पेड़ों की छाल आदि का प्रयोग।
- बुंदेली चित्रकला के अंतर्गत धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष दोनों ही तरह के विषयों को अपनाया गया था।
- बुंदेली चित्रकला राजा महल, लक्ष्मी मन्दिर, जहाँगीर महल आदि में दृष्टिगोचर होती है।
- विष्णु के दशाअवतार का दृश्य, रामदरबार के दृश्य, कृष्ण की बाललीलाओं के दृश्य, शिकार के दृश्य, मल्लयुद्ध के दृश्य, नौकायन के दृश्य आदि अनेक आकर्षक झांकियाँ ओरछा की चित्रकला में मौजूद हैं।





3

बघेल रियासत



बघेलखण्ड का भौगोलिक स्वरूप

- आधुनिक बघेलखण्ड वर्तमान् रीवा सम्भाग और शहडोल सम्भाग की सीमाओं से सीमांकित है।
- इसके अन्तर्गत मुख्य रियासतों में रीवा राज्य, मैहर, नागौद, सोहावल, कोठी, जसो, बरौंधा, नईगढ़ी, वर्दी, सिंगरौली और मड़वास थीं।

भिन्न-भिन्न शासक — शासित नाम

- प्राचीन काल में यह आटविक राज्य की श्रेणी में था।
- 9वीं–10वीं शताब्दियों में 'चेदि देश' (डाहल) के नाम से और 12वीं–13वीं शताब्दियों में 'भट्टा' के नाम से जाना जाता था।
- 1236 ई. में जब 'गहोरा' (जिला चित्रकूट) में बघेल सत्ता स्थापित हुई, तब से यह 'भट्टा—गहोरा' कहलाया जाने लगा।
- बाद में जब बघेलों ने अपनी राजधानी 'बाँधवगढ़' में स्थानान्तरित की, तब इसे 'बाँधव—राज्य' (बान्धू देश) के नाम से जाना गया। इसी बाँधव राज्य के कारण ही बघेल नरेश 'बाँधवेश' (बाँधवपति) कहलाते थे।
- 17वीं सदी में जब बघेल राज्य की राजधानी रीवा स्थानान्तरित की, तब से इसे 'रीवा राज्य' के नाम से सम्बोधित किया गया।
- आगे 18वीं सदी में बघेलों द्वारा शासित समस्त क्षेत्र 'बघेलखण्ड' के नाम से प्रसिद्ध हो गया और इस क्षेत्र की स्थानीय भाषा को 'बघेली' कहा जाने लगा।



बघेलों की उत्पत्ति और बघेल सत्ता की स्थापना

- तुर्की के भयंकर प्रहार से चन्देलों और कलचुरियों की सत्ता अत्यंत कमजोर पड़ गयी, जिसके फलस्वरूप 13वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भर, गोंड, सेंगर और अन्य छोटी-छोटी जातियों ने इस क्षेत्र में अपने—अपने ठिकाने बना लिये।
- इन छोटे-छोटे शासकों में भरों की स्थिति अधिक मजबूत थी, जिन्होंने कालिंजर पर भी अधिकार कर लिया। इन्हीं भर राजा के यहाँ गुजरात से आये दो बघेल भाई वीसलदेव और भीमलदेव नौकर हुए थे।
- बघेल मूलतः चालुक्य हैं। अन्हिलवाड़ के सोलंकी शासक कुमारपाल ने अर्णोराज को व्याघ्रपल्ली (बघेलबारी) की सामंती प्रदान की थी।
- बघेलबारी गांव में रहने के कारण अर्णोराज के वंशज बघेल कहलाए।
- अर्णोराज का पुत्र लवण प्रसाद उर्फ 'व्याघ्रपल्ली' को 'व्याघ्रदेव' के नाम से सम्बोधित किया गया है।
- व्याघ्रदेव अपने दोनों पौत्र बीसलदेव और भीमलदेव के साथ प्रयाग और चित्रकूट की तीर्थयात्रा पर गया था।
- कालिंजर के भर राजा ने दोनों भाईयों से लोधी शासक के विरुद्ध युद्ध करने का अनुरोध किया।
- बीसलदेव और भीमलदेव ने लोधी राजा के दीवान तिवारी को गहोरा के आधे राज्य का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया।
- लेकिन तिवारी ने आधा राज्य ना लेकर दोनों भाईयों को लौटा दिया जिससे प्रसन्न होकर तिवारी को सिंह की उपाधि दी गई। बघेलखण्ड के तिवारियों को अधरजिया तिवारी भी कहते हैं।
- इस प्रकार 1236 ई. में गहोरा में बघेल सत्ता की स्थापना हुई, जिसकी कमान बीसलदेव अपने छोटे भाई भीमलदेव को सौंपकर अन्हिलवाड़ चला गया।

THE BAGHEL DYNASTY





प्रमुख शासक

❖ बीसलदेव

- कुछ समय पश्चात अपने भाई भीमलदेव को गहोरा राज्य सौंपकर अन्हिलवाड़ के सोलंकी राजा भीमदेव द्वितीय का प्रधानमंत्री बन गया ।
- भीमदेव द्वितीय की मृत्यु के पश्चात बीसलदेव अन्हिलवाड़ का शासक बन गया ।

❖ भीमलदेव

- गहोरा में बघेल वंश का संस्थापक ।

❖ रानिंगदेव

- भीमलदेव का पुत्र अनीकदेव (रानिंगदेव) ने राजधानी गहोरा को भवनों से सुसज्जित किया और गहोरा-जागीर का विस्तार करके, उसे एक छोटे राज्य का रूप प्रदान किया ।
- वीरभानूदय काव्यम् में रानिंगदेव को गहोरा का प्रथम शासक बताया गया है। अतः सम्भव है कि भीमलदेव के पश्चात् रानिंगदेव ने गहोरा को कालिंजर के भर राजा के आधिपत्य से मुक्त करा लिया ।

❖ बुल्लारदेव

- रानिंग देव का पुत्र बुल्लारदेव (1353–1389 ई.) हुआ, जिसने सर्वप्रथम 'महाराजाधिराज' की पदवी धारण की। यह एक पराक्रमी और महत्वाकांक्षी शासक साबित हुआ ।
- जिससे प्रभावित होकर अफीफ ने अपने 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में बुल्लारदेव को फिरोजशाह तुगलक के दरबार में इटावा के रायसुमेर चौहान जैसे प्रभावशाली राजाओं की पंक्ति में बैठा हुआ बतलाया है।
- फिरोजशाह तुगलक के समय दिल्ली सल्तनत का पतन होने पर स्वयं को दिल्ली सल्तनत से स्वतंत्र घोषित कर 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की ।
- बुल्लारदेव के पुत्र सिंहदेव ने त्रिवेणी (प्रयाग) में जल समाधि ले ली अतः शोकाकुल पिता ने अपने पौत्र वीरमदेव को उत्तराधिकारी चुना ।

❖ वीरमदेव

- बुल्लारदेव का पौत्र

राज्य विस्तार

- इसने बांधवगढ़ अमरकंटक आदि को अपने राज्य में मिला लिया ।
- वीरभानूदय काव्यम् से विदित होता है कि वीरमदेव ने दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत स्थित सेहुँड़ा (कालिंजर से उत्तर जिला चित्रकूट) नामक नगर को विजित करके दिल्ली सुल्तान से विग्रह कर लिया था।
- वीरमदेव के शौर्य और पराक्रम से प्रभावित होकर ही 'तारीख-ए-मुहम्मदी' के लेखक ने उसे 'युग का नीरम' (ईरानी पहलवान) कहा है।
- वीरमदेव ने कमजोर होती दिल्ली सल्तनत का फायदा उठाया और अपने राज्य की सीमाओं का सक्रियता से विस्तार किया।
- वीरमदेव के समय में बघेल राज्य की सीमाएँ उत्तर में गंगा-यमुना के संगम (प्रयाग) से लेकर दक्षिण में नर्मदा उद्गम स्थली अमरकंटक तक और पश्चिम में केन नदी (सैहुँड़ा) से लेकर पूर्व में विन्ध्यांचल तक विस्तृत थीं।

शर्की से संबंध

- वीरमदेव बघेल के शर्की सुल्तान इब्राहिम शर्की से मैत्रीपूर्ण संबंध थे।

❖ वीरसिंहदेव

- वीरसिंहदेव ने गढ़ा शासक अर्जुनदास के विरुद्ध उसके पुत्र आम्हणदास को सहायता दी थी।

राणा सांगा एवं बाबर से संबंध





- वीरसिंहदेव बघेल ने बाबर के विरुद्ध राणा सांगा की खानवा के युद्ध(1527) में सहायता की थी परंतु बाबर की विजय के पश्चात वीरसिंहदेव ने बाबर से मित्रता कर ली।

हुमायूँ की सहायता

- इस मित्रता की परीक्षा की घड़ी चौसा युद्ध (जून 1539 ई.) के समय आयी, जब पराजित असहाय हुमायूँ की सहायता वीरसिंहदेव के पुत्र वीरभानु (1535–1555 ई.) ने की थी।
- इस सहायता का एहसान सभी मुगल सम्राट मानते रहे और बघेलों को 'कर' से मुक्त रखकर विपत्ति व संकट की स्थिति में सदा इनकी सहायता की।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में भारतवर्ष के जिन तीन बड़े राजाओं का उल्लेख किया है, उनमें से एक वीरसिंहदेव है।

❖ वीरभानु

- वीरसिंहदेव के पुत्र वीरभानु ने शेरशाह सूरी के विरुद्ध हुमायूँ को पराजित होने के बाद अपने यहां शरण दी थी।

हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी से संबंध

- जब हुमायूँ चौसा के युद्ध (जून 1539 ई.) में शेरशाह सूरी से पराजित होकर अपनी प्राणरक्षा हेतु भागते-भागते अरैल (प्रयाग) में गंगा-यमुना के तट पर पहुँचा, वीरभानु ने अपने 5–6 अश्वारोहियों के साथ हुमायूँ को नदी पार कराया और हुमायूँ का पीछा कर रहे शेरशाह सूरी के सेनापति को मार भगाया।
- मई 1540 ई. में कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में पुनः वीरभानु ने हुमायूँ की मदद करके बघेल-मुगल मैत्री का निर्वाह करना चाहा परन्तु हुमायूँ ने उसके परामर्श पर ध्यान नहीं दिया।
- शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को भारत से भगाने के पश्चात् अपने दूत द्वारा वीरभानु को दरबार में उपस्थित होने के लिये बुलवाया। किन्तु वीरभानु भयवश शेरशाह के दरबार में जाने के बजाय कालिंजर के तत्कालीन राजा कीरत सिंह चंदैल की शरण में चला गया।
- तब शेरशाह ने कीरत सिंह से वीरभानु की माँग की, लेकिन उसने मना कर दिया। इससे शेरशाह का कालिंजर पर आक्रमण करना आवश्यक हो गया। इसी युद्ध में शेरशाह सूरी की मृत्यु हो गई थी।

❖ रामचंद्रदेव बघेल

- 1555 ई. में वीरभानु की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रामचन्द्र देव (1555–1592 ई.) बघेल राजगद्दी पर आसीन हुआ।
- यह अकबर का समकालिक था।

कला और विद्या का पोषक

- राजा रामचन्द्रदेव एक कुशल शासक होने के साथ-साथ कला और विद्या का पोषक था।
- इसके दरबार में विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय मिलता था। संगीत सम्राट तानसेन इसका दरबारी गायक था।
- जिसकी ख्याति सुनकर अकबर ने 1563 ई. में जलाल खाँ कोर्ची को राजा रामचन्द्र के पास भेजकर तानसेन को अपने दरबार में बुलवा लिया।
- राजा ने तानसेन को शाही दरबार में भेजकर प्रसन्नता जाहिर की।



गाजी खान को शरण एवं अकबर से युद्ध

- 1562 ई. में रामचंद्र ने अकबर के विद्रोही गाजी खान को अपने यहां शरण दी।
- जिस कारण रामचंद्र और अकबर के मध्य युद्ध हुआ था जिसमें रामचंद्र की पराजय हुई।

राजधानी परिवर्तन

- इसने अकबर के बढ़ते हुए प्रभाव से गहोरा को असुरक्षित महसूस किया और 1564 ई. में अपनी राजधानी बांधवगढ़ स्थानान्तरित कर ली।
- क्योंकि बांधव दुर्ग उस समय अभेद्य दुर्गों में से एक था।
- इसी बांधवगढ़ के कारण भट्ठा-गहोरा के बघेल राज्य को बांधव राज्य (बान्धू राज्य) कहा जाने लगा और बघेल राजा बांधवेश (बान्धूपति) कहे जाने लगे।





रामचन्द्रदेव और अकबर मध्य सुलह

- अन्त में बीरबल की मध्यस्थिता से रामचन्द्रदेव और अकबर के बीच सुलह हो गयी।
- राजा रामचन्द्रदेव ने कालिंजर दुर्ग की चाबी भेजकर अकबर के प्रति अपनी वफादारी प्रकट की।
- अपने पुत्र वीरभद्रदेव को अकबरी दरबार में प्रतिनिधित्व करने के लिये भेज दिया था। लेकिन स्वयं अकबर के समक्ष कभी उपस्थित नहीं हुआ।

अकबर से भेट एवं उपहार

- 1583 ई. में जब अकबर इलाहाबाद के किले का निर्माण करवा रहा था, तब वर्तमान् सीधी जिला के समौतहा ब्राह्मण राजा रामचन्द्रदेव की शिकायत करने के लिए अकबर के पास इलाहाबाद गये।
- दरअसल रामचन्द्रदेव के आदेश पर चुरहट (जिला—सीधी) के राव विक्रमादित्य ने इन ब्राह्मणों की जागीर छीन ली थी।
- अतएव अकबर ने ब्राह्मणों की शिकायत के बहाने रामचन्द्रदेव को अपने समक्ष उपस्थित करने के लिए एक सेना भेजनी चाही, लेकिन युवराज वीरभद्रदेव के निवेदन पर विचार करके अकबर ने जैन खाँ कोका और बीरबल को बांधवगढ़ भेजा।
- बीरबल ने राजा को रिझा लिया और आतिथ्य सत्कार के बहाने अकबर के पास चलने के लिए राजी कर लिया। अंततः फरवरी 1584 ई. में रामचन्द्रदेव और अकबर की भेट फतहपुर सीकरी में हुई।
- राजा ने बादशाह अकबर को 120 हाथी और बहुत सी कीमती वस्तुएँ उपहार में प्रदान की। इससे अकबर ने प्रसन्न होकर रामचन्द्र को बांधवराज्य के शासक के रूप में मान्यता दी।

❖ वीरभद्र देव

- 1592 ई. में रामचन्द्रदेव की मृत्यु हो जाने पर अकबर ने उसके पुत्र वीरभद्रदेव को राजा की पदवी देकर बांधव—राज्य का शासक नियुक्त किया।
- अतः 1593 ई. में वीरभद्र मुगल सम्राट से अनुमति प्राप्त करके बांधवगढ़ के लिए प्रस्थान किया। किन्तु रास्ते में बरौंधा (जिला शहडोल) नामक स्थान पर पालकी से गिर पड़ा; जिससे उसके सिर में चोट लगने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी। बरौंधा में वीरभद्र देव की छतरी आज भी मौजूद है।
- रामचंद्र की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र वीरभद्र देव और विक्रमाजीत शासक बना।
- बांधव—राज्य 1597–1605 ई. तक मुगलों के अधीन रहा।

❖ विक्रमाजीत

अकबर के विरुद्ध विद्रोह

- विक्रमाजीत ने अकबर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिस कारण अकबर ने त्रिपुरदास को भेजकर विक्रमाजीत को पराजित किया, विवश होकर दुर्ग की सेना ने 8 जुलाई 1597 को त्रिपुरदास से संधि करके बांधव दुर्ग खाली कर दिया।

मुगलों का शासन

- आंतरिक स्थिति को देखते हुए अकबर ने त्रिपुरदास को बांधवगढ़ का सूबेदार नियुक्त कर दिया; जिसने 1601 ई. तक मुगलों की तरफ से बांधव राज्य पर शासन किया।
- 1602 ई. में अकबर ने वीरभद्र के दासी—पुत्र जिर्णोधन (दुर्योधन) को बांधव राजगढ़ी पर बैठाया और भारतीचन्द्र को इस अल्पायु राजा का संरक्षक नियुक्त किया।
- इस प्रकार 1602 से 1605 ई. तक जिर्णोधन के नाम से बांधव राज्य पर मुगलों ने शासन किया।

राज्य की पुनःप्राप्ति

- जहाँगीर ने विक्रमाजीत का राज—तिलक करके उसे बांधव—राज्य के 18 परगनों की सत्ता सौंपी। राज्य वापस लौटा दिया परंतु बांधवगढ़ का किला अपने पास रख लिया जिससे विक्रमाजीत को अपनी राजधानी 'रीवा' बनानी पड़ी।

जहाँगीर के विरुद्ध विद्रोह

- बांधवगढ़ प्राप्त करने के लिए 1610 ई. में विक्रमाजीत ने विद्रोह कर दिया। अतः उसे दण्डित करने के लिए जहाँगीर ने मानसिंह कछवाह के पौत्र महासिंह को बांधवगढ़ भेजा।





- फलतः विक्रमाजीत को मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ा।
- बाद में 1612 ई. में जहाँगीर ने महासिंह को बांधवगढ़ पुरस्कार में दे दिया। इस प्रकार राजा विक्रमाजीत की विद्रोही प्रवृत्ति के कारण बांधवगढ़ बघेलों के बजाय कछवाहों के अधिकार में चला गया।

जहाँगीर से पुनः मित्रता एवं बांधवगढ़ की पुनःप्राप्ति.

- फलतः 1616 ई. में खुर्रम की सिफारिश पर जहाँगीर ने विक्रमाजीत के अपराधों को क्षमा कर दिया। 1619 ई. में विक्रमाजीत पुनः मुगल—दरबार गया। अतः विक्रमाजीत के प्रति जहाँगीर का व्यवहार मधुर एवं सौहार्द्रपूर्ण हो गया।
- इसलिए 1624 ई. में उसने विक्रमाजीत को बांधव राज्य के कुछ और परगने प्रदान किये थे, जिनमें बांधवगढ़ भी था।
- लेकिन विक्रमाजीत ने अपनी राजधानी रीवा में ही कायम रखी और बांधवगढ़ को अपनी सेना का मुख्यालय बनाया।
- विक्रमाजीत के पुत्र अमर सिंह को जुझार सिंह बुंदेला के विरुद्ध मुगलों की सहायता करनी पड़ी।

❖ राजा अनूप सिंह

- शाहजहां ने पहाड़ सिंह बुंदेला को चौरागढ़ की जागीर दे दी थी जिस कारण चौरागढ़ के शासक हृदयशाह गौड़ ने भागकर रीवा के राजा अनूप सिंह के यहां शरण ली।
- पहाड़ सिंह ने अनूप सिंह पर आक्रमण कर दिया तथा पराजित होने पर अनूप सिंह को त्योंथर के जंगलों में शरण लेनी पड़ी।
- शाहजहां ने अनूप सिंह को पुनः रीवा का राज्य लौटा दिया।

❖ अवधूत सिंह

- इस समय छत्रसाल बुंदेला के पुत्र हृदयशाह बुंदेला ने रीवा पर आक्रमण किया था तब मोहम्मद खां बंगश ने हृदयशाह को हरा दिया।

❖ अजीत सिंह

- शाह आलम अपनी द्वितीय गर्भवती बेगम मुबारक महल (लालबाई) के साथ रीवा के राजा अजीत सिंह के यहां मुकुन्दपुर की गढ़ी में रुका था, जहां अकबर द्वितीय का जन्म हुआ था।

बाँदा के नवाब के साथ युद्ध

- अजीत सिंह का युद्ध दो बार बाँदा के नवाब के साथ हुआ।
- प्रथम युद्ध (नेकहाई का युद्ध)** – अजीत सिंह एवं जसवंत राय के मध्य (अली बहादुर), बाँदा के नवाब अलीबहादुर ने 1796 ई. में अपने नायक के द्वारा रीवा पर आक्रमण करवा दिया, जिसमें उसका नायक मारा गया। इसमें नवाब की सैना की पराजय हुई।
- द्वितीय युद्ध** – 1798 ई. में वह स्वयं रीवा आ धमका। तब राजा अजीतसिंह (1755–1809 ई.) ने घबड़ाकर उससे समझौता कर लिया और एक लाख रुपये युद्ध का हर्जाना देकर रीवा राज्य के स्वतंत्र अस्तित्व को सुरक्षित बचाया।

अजीत सिंह एवं ब्रिटिश आधिपत्य

- 1802 ई. में अलीबहादुर की मृत्यु के बाद बसीन की संधि के द्वारा सम्पूर्ण बुंदेलखण्ड ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत आ गया। अतः बुंदेलों द्वारा अधिकृत मैहर सहित पश्चिमी बघेलखण्ड की भी सभी रियासतों को अंग्रेजों की सनद लेनी पड़ी थी।
- अंग्रेजों ने रीवा राजा अजीत सिंह से भी सनद लेने के लिए कहा था। लेकिन अजीत सिंह ने यह कहकर सनद लेने से मना कर दिया कि न तो हमारे पूर्वज कभी किसी को 'कर' दिये और न ही मैंने किसी को 'कर' दिया; सिर्फ अलीबहादुर को युद्ध का हर्जाना दिया था, न कि उसकी अधीनता स्वीकार की थी।
- इस प्रकार अजीतसिंह अपनी दलील के द्वारा रीवा राज्य को ब्रिटिश हुकूमत की काली छाया से बचा लेने में सफल रहे।

❖ जयसिंह

- रीवा राज्य भारत की उन रियासतों में था, जिसने अंग्रेजों की सनद लेने से साफ मना कर दिया था। इसलिए अंग्रेजों ने इसके महत्व को स्वीकार करके इसके साथ 1812 ई. में संधि की थी।





- इसके समय बघेलों ने पिंडारियों के भय के कारण जयसिंह ने अंग्रेजों के साथ बाँदा की संधि (1812) कर ली जो कि एक सहायक संधि थी।
- इस संधि में महाराजा का पक्ष बक्शी भगवान दत्त ने एवं अंग्रेजों का रिचर्डन ने रखा।

रीवा राज्य के साथ अंग्रेजों की प्रथम संधि/बाँदा की संधि (5 अक्टूबर 1812 ई.)

- यह संधि 5 अक्टूबर 1812 ई. को बाँदा में सम्पन्न हुई थी।
 - इस संधि पर रीवा दरबार की तरफ से बक्शी भगवान दत्त वकील ने और ईस्ट इण्डिया कम्पनी की तरफ से ब्रिटिश एजेन्सी बाँदा के जान रिचर्ड्सन ने हस्ताक्षर किये थे।
 - यह एक मैत्रीपूर्ण/सुरक्षात्मक सहायक संधि थी। इस संधि की धाराएँ निम्नलिखित हैं—
 - जयसिंहदेव को रीवा राज्य का वैध शासक स्वीकार किया गया। इस संधि की शर्तों का पालन करते रहेंगे तो कम्पनी रीवा के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण कार्यवाही नहीं करेगी और न ही रीवा राज्य के किसी क्षेत्र पर अनाधिकृत अधिकार करेगी।
 - कम्पनी रीवा राज्य की सीमा की सुरक्षा शत्रुओं से उसी प्रकार से करेगी।
 - राजा, रीवा राज्य के विरुद्ध किसी शत्रु के षड्यंत्र, दावा अथवा आक्रमण का आभास होगा, तो वह सम्बंधित परिस्थितियों की जानकारी कम्पनी को देगा। तब कम्पनी मध्यस्थता करके निपटारा करायेगी, जो रीवा राजा को मान्य होगा।
 - रीवा राजा के अनुरोध पर कम्पनी अपनी फौज रीवा राज्य की रक्षा के लिए भेजेगी, जिसका खर्च रीवा राजा को तब तक उठाना पड़ेगा।
 - यदि कभी कम्पनी सरकार को रीवा राजा की सेना की आवश्यकता होगी, तो रीवा राजा अपनी सैनिक सेवाएँ कम्पनी सरकार को उपलब्ध करायेगा। दोनों की संयुक्त सेनाओं का नेतृत्व ब्रिटिश सेनानायक करेगा।
 - कम्पनी रीवा राज्य के आन्तरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
 - रीवा राज्य कम्पनी के शत्रुओं को कभी आश्रय नहीं देगा।
 - जब कोई डाकू या लुटेरा रीवा राज्य की सीमा से होकर ब्रिटिश सीमा में लूटपाट करेगा, तब रीवा राजा अंग्रेजी अधिकारियों के द्वारा भेजी गयी सूचना पाते ही ऐसे डाकूओं और लुटेरों को पकड़वाने में पूर्ण सहयोग करेगा तथा उन्हें बन्दी बनाकर ब्रिटिश अधिकारियों के हाथों सौंप देगा।
 - यदि रीवा राजा का कोई भाई या नौकर राजा पर दोषारोपण करेगा, तो कम्पनी सरकार बिना जाँच किये ऐसे व्यक्ति के बयानों को महत्व नहीं देगी।
 - कम्पनी सरकार रीवा राजा की पद-प्रतिष्ठा और सम्मान उसी प्रकार से करेगी, जिस प्रकार से हिन्दुस्तान के पूर्ववर्ती सम्राट् इनका सम्मान करते आये हैं।
 - कम्पनी सरकार जब भी आवश्यक समझेगी, वह राजा के शत्रुओं, पिंडारियों एवं अन्य लुटेरों से राज्य की रक्षा करने के लिए अपनी सेना को रीवा राज्य की सीमा पर भेज देगी।
- तीनों भाषाओं (आंगंल भाषा, पर्शियन और हिन्दी) की सभी प्रतियों में दोनों पक्षों ने हस्ताक्षर किये और मसविदे की प्रतिलिपि गवर्नर जनरल लार्ड मिण्टों से हस्ताक्षरित करवाने के लिए उसके पास भेजी गयी।
- इस संधि की शर्तें 5 अक्टूबर 1812 ई. से ही प्रभावशील हो गयीं।

❖ विश्वनाथ

- राजा जयसिंहदेव ने 1812–13 ई. में ही राज्य का कार्यभार सौंप दिया था
- इसने 18 ग्रन्थों की रचना की।
- 1847 में सतीप्रथा पर प्रतिबंध लगाया।

❖ रघुराज सिंह

- जिस समय महाराजा रघुराज सिंह (1854–1880 ई.) रीवा राजगद्वी पर आसीन हुए, उस समय तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपने चर्मात्कर्ष पर पहुँच गयी थी।





1857 की क्रांति एवं रघुराज सिंह

- 1857 की क्रांति के समय बघेल शासक रघुराज सिंह था एवं इसका दीवान दीन बंधु पांडे (बहादुर) अंग्रेजों का परम समर्थक था।
- क्रांति के कारण लार्ड कैनिंग (1856–62 ई.) ने बघेलखण्ड की विद्रोही गतिविधियों पर दृष्टि रखने के लिए आसबर्न को रीवा में अस्थायी पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त कर दिया था।
- 1857 ई. की क्रांति में महाराजा रघुराज सिंह ने दोहरी भूमिका अदा की थी। उपरी तौर पर वे ब्रिटिश शासन के हिमायती बने हुए थे और गुप्त रूप से उन्होंने क्रांतिकारियों को संरक्षण एवं सहायता प्रदान की थी।
- 3 नवम्बर 1859 ई. को कानपुर में वाइसराय लार्ड कैनिंग ने ब्रिटिश शासन के सहयोग के उपलक्ष्य में जहाँ रघुराज सिंह को अमरकंटक और सिंधवाड़ा सहित सोहागपुर का इलाका प्रदान किया, वहाँ दीवान दीनबन्धु को भी 'बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया था।
- इसके बाद से दीनबन्धु ब्रिटिश सरकार का बहुत बड़ा विश्वासपात्र बन गया। यहाँ तक कि ब्रिटिश प्रशासन से रीवा दरबार के लिए भेजे जाने वाले आदेश एवं पत्र भी दीवान दीनबन्धु के नाम से आने लगे। जब कभी ब्रिटिश अधिकारियों का रीवा आगमन होता था, तो उनके द्वारा दीनबन्धु को अधिक महत्व दिया जाता था।
- दीनबन्धु पांडे का घमण्ड इतना बढ़ गया कि वह महाराजा रघुराज सिंह के निर्णयों पर भी कटाक्ष करने से नहीं चूकता था। ऐसी स्थिति में महाराजा रघुराज सिंह दीवान—दीनबन्धु से रुक्ष हो गये और उसे प्रशासन से पृथक करने की योजना बनाने लगे।

दिनकर राव से भेट

- रीवा महाराजा सतना से इलाहाबाद गंगा स्नान करने गये। वहाँ उन्होंने 22 जून 1868 ई. को ग्वालियर के भूतपूर्व दीवान सर दिनकर राव से भेट की और उन्हें रीवा राज्य का प्रशासक बनने के लिए राजी कर लिया।
- फलतः रघुराज सिंह के सुझाव पर कोल्स ने 3 जुलाई 1868 ई. को रीवा राज्य का प्रशासक बनने के लिए दिनकर राव के पास पत्र भेजा। अतः दिनकर राव 21 जुलाई 1868 ई. को रीवा आये।
- इसके बाद 5 अगस्त 1868 ई. को रीवा महाराजा की इच्छा के अनुरूप दीनबन्धु पांडे को प्रशासन से पृथक कर दिया गया।

पूर्व के प्रशासनिक सुधार

- यद्यपि रीवा राज्य में प्रशासनिक सुधारों का सिलसिला राजा जयसिंह देव के शासनकाल (1809–1833 ई.) से ही प्रारम्भ हो गया था।
- इसके पूर्व लगान व्यवस्था में ठीका पद्धति का प्रचलन था, जिसे 'ऐन कमाल खालसा' कहा जाता था। 'लगान' उपज का 1/6 भाग लिया जाता था।
- राज्य में भूमि तीन प्रकार की थी - जागीर, वृत्त और कोठार।
- परमिट का कोई नियम नहीं था।
- न्याय व्यवस्था पंचायतों के द्वारा संचालित होती थी। अंतिम अपील राजा के पास होती थी।
- 1827 ई. में पहली बार 'मिताक्षरा' नामक कचहरी की स्थापना की गयी। जिसमें दीवानी और फौजदारी मुकदमों की सुनवायी की जाने लगी। लेकिन तब भी पुरानी दण्ड व्यवस्था ही प्रचलित रही; जैसे अंग-भंग करना, राज्य निकाला, गर्म गोला उठवाना, गर्म तेल में हाथ डालकर सिक्का निकलवाना, कसम खाना आदि।
- इस प्रकार कचेहरियों की प्रथा का प्रचलन शुरू हुआ। दीवान और खास—कलम कानून—कायदे से कचहरी संचालित करने लगे।
- मुकदमों के निर्णयों को अब लिपिबद्ध किया जाने लगा।
- 1856 ई. में 'परमिट विभाग' स्थापित हो जाने से इलाकेदारों को अपने इलाके में चुंगी वसूल करने का अधिकार न रहा।
- 1858 ई. में रीवा में अस्पताल खोला गया; जिसे बाद में 1887 ई से विक्टोरिया अस्पताल कहा जाने लगा।
- 1859 ई. में पोलिटिकल एजेन्ट आसबर्न ने रीवा में जो तार घर स्थापित करवाया था, उसे 1862 ई. में बन्द करवा दिया गया।





राज्य की आर्थिक दशा और सुधार

- लेकिन रीवा राज्य की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए व्यापार को समुन्नत बनाने का प्रयास किया गया। इस दिशा में यातायात की सुविधाओं का विस्तार किया गया।
- मई 1867 ई. में इलाहाबाद-जबलपुर रेल्वे लाईन से सतना को जोड़ा गया और कुछ सड़कों का निर्माण करवाया गया।
- राज्य की जनता से इन सड़कों का सड़कामन (Road tax) वसूल किया जाने लगा। इतने पर भी रीवा राज्य की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार न हुआ।
- रीवा राज्य की ख़राब हालत को ठीक करने के लिए ब्रिटिश शासन द्वारा अक्टूबर 1862 ई. से जनवरी 1867 ई. तक राज्य की समस्त भूमि की पैमाइश करवायी गयी और इलाहाबाद रीवा राज्य की सीमा का सीमांकन किया गया।
- इस कार्य में आये कुल खर्च लगभग डेढ़ लाख रुपयों की अदायगी रीवा दरबार को करनी पड़ी। इससे राज्य की आय में वृद्धि तो नहीं हुई, बल्कि उसकी आर्थिक स्थिति और सोचनीय हो गयी।
- ऐसी हालत में महाराजा रघुराज सिंह ने व्यवस्था को ठीक करने बावत् 1866 ई. में पूरे राज्य में शांति और सुरक्षा के लिए दस थाने स्थापित किए और 'अष्ट परिषद' के माध्यम से दीवान दीनबन्धु पांडे को राजकीय कार्यों को सम्पादित करने का निर्देश दिया किन्तु इससे भी स्थिति ज्यों की त्यों बनी रही।
- रघुराज सिंह ने प्रशासन को दुरुस्त करने के लिए सर दिनकर राव को प्रबन्धक के रूप में नियुक्त किया।

सर दिनकर राव के सुधार

प्रशासनिक सुधार

- रियासत के मुख्यामल रणदमन सिंह के अधीनस्थ सकत्तर बॉकेसिंह को 'खासगी (खाद्य) विभाग' का, दिग्गज सिंह को 'कमाण्डर चीफ' और भगवत सिंह को तहसीलों के 'लगान-प्रबन्ध' का प्रभार दिया गया।
- ब्रिटिश रेजीडेन्ट, दीवानी फौजदारी न्यायालय, परमट, खास-कलमी (लेखन विभाग) और भण्डार से सम्बंधित प्रभार सीधे रणदमन सिंह की देखरेख में रखा गया।
- दिनकर राव ने अपने अत्यधिक नज़दीकी पंडित रामभाऊ को 'नायब दीवान' के पद पर नियुक्त किया, जो रणदमन सिंह से सम्बंधित विभागों के कार्यों में सहयोग देते थे।
- राज्य में ठीकेदारी पद्धति को समाप्त कर दिया गया और सम्पूर्ण रीवा राज्य को तीन परगनों में विभाजित किया गया – रीवा, रामनगर और ताला।
- प्रत्येक परगने में दीवानी और फौजदारी मुकदमों की सुनवाई के लिए एक तहसीलदार और एक डिप्टी मजिस्ट्रेट की नियुक्ति की गयी।

शिक्षा सुधार

- रीवा में पहली बार संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी की शिक्षा के लिए स्कूल खोला गया।

आर्थिक सुधार

- सतना से बेला तक सड़क बनवाने का प्रस्ताव रखा गया।
- अक्टूबर 1868 ई. में दिनकर राव ने अनाज की राहदारी की महसूल (चुंगी) माफ कर दी। जिससे राज्य को 71000 रुपये का वार्षिक घाटा हुआ।
- उन्होंने इसकी क्षतिपूर्ति के लिए राज्य में क्रय और विक्रय की जाने वाली वस्तुओं पर 'कट्टी-भरती' (विक्रय कर) का नियम लागू किया और इसके क्रियान्वयन का दायित्व 'तवारीख-ए-बघेलखण्ड' के लेखक मौलवी रहमान अली को सौंपा। लेकिन कभी भी चार लाख रुपयों की वसूली नहीं हो पायी।

परिणाम

- इस प्रकार सर दिनकर राव के सुधारों का भी कोई सार्थक परिणाम न निकला। बल्कि रीवा राज्य की अर्थव्यवस्था और भी बदतर हो गयी।
- क्योंकि महाराजा रघुराजसिंह द्वारा शिकार, शिकारगाह, यज्ञों, तीर्थ यात्राओं और तुलादान आदि में लाखों रुपये खर्च कर दिये जाते थे। वस्तुतः सुधारों से जो थोड़ी-बहुत आय बढ़ती भी थी, उससे कहीं ज्यादा रघुराज सिंह की फिजूलखर्ची थी।





→ ऐसी स्थिति में अगस्त 1870 ई. में महाराजा रघुराजसिंह को अपने कर्मचारियों के वेतन भुगतान के लिए ब्रिटिश सरकार से दस लाख रुपये कर्ज लेने पड़े। इसीलिए राज्य पर कर्ज बढ़ते-बढ़ते 26 लाख रुपये हो गया था।

बघेलखण्ड एजेन्सी की स्थापना (अप्रैल 1871 ई.)

- जनवरी 1871 ई. में महाराजा रघुराज सिंह ड्यूक ऑफ एडिनबरा से भेंट करने के लिए कलकत्ता गये। उसी दौरान रीवा रियासत की अव्यवस्था के सम्बन्ध में रघुराजसिंह ने ब्रिटिश सरकार से चर्चा की।
- ब्रिटिश सरकार ने अप्रैल 1871 ई. में 'बघेलखण्ड एजेन्सी' की स्थापना की।
- इस एजेन्सी के अन्तर्गत पाँच रियासतें रीवा, मैहर, नागौद, सोहावल और कोठी को रखा गया।
- इस एजेन्सी का खर्च रीवा दरबार को सौंपा गया।
- बघेलखण्ड एजेन्सी के प्रथम एजेन्ट के रूप में कैप्टन गुड फेलो 10 मार्च 1871 ई. को रीवा आया। उसके बाद ब्रेड फोर्ड, बेनरमैन, मेट्टलैण्ड, बर्कली, मारटेली, डब्ल्यू.के. बार ने एजेन्सी का पदभार ग्रहण किया।
- बघेलखण्ड एजेन्सी के स्थापित हो जाने के बाद भी राज्य की वित्तीय व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हुआ। बल्कि ऊपर से एजेन्सी का खर्च और बढ़ गया।

रायल कॉसिल

- अतः 1872 ई. में रघुराज सिंह गवर्नर जनरल नार्थब्रुक से मिलने बम्बई गये। वहाँ से वापस आकर उन्होंने रियासत की कुल आय का आकलन करवाया; जो बारह लाख रुपये निर्धारित की गयी।
- इस धनराशि को तीन भागों में विभाजित करके इसकी वसूली के लिए तीन व्यक्तियों को ठेके में दे दिया गया। लेकिन इससे भी इच्छित लाभ न मिल सका।
- तब 1873 ई. में 'रायल कॉसिल' की स्थापना की गयी। किन्तु उससे भी निराशा ही हाथ लगी।

प्रबन्ध काल (1875–1895 ई.–Superintendency Period)

- अन्ततः विवश होकर उन्होंने 1875 ई. में रीवा राज्य का प्रबन्ध ब्रिटिश सरकार को हस्तान्तरित कर दिया; जो 1875 से 1895 ई. तक ब्रिटिश प्रशासन द्वारा संचालित किया गया।
- यह प्रशासन 'सुपरिनेण्डेन्सी' (मुन्तज़मी) शासन के नाम से जाना जाता है।
- सुपरिनेण्डेन्सी शासन के स्थापित होने के साथ ही रीवा राज्य में आधुनिक प्रशासनिक प्रणाली का सूत्रपात हुआ।
- पं. हेतराम
 - बेनरमैन ने रियासत की 'भू राजस्व व्यवस्था' के प्रबंधन के लिए बरेली (उ.प्र.) के पं. हेतराम (डिप्टी कलेक्टर बाँदा) को 'नायब दीवान' के पद पर नियुक्त किया; जिन्होंने 14 जून 1875 ई. को पदभार ग्रहण किया।
 - पं. हेतराम दीवान दीनबन्धु की मृत्यु (5 जुलाई 1879 ई.) के पश्चात 5 सितम्बर 1879 ई. को इन्वार्ज दीवान बनाये गये और फिर आगे 11 अगस्त 1881 ई. को उन्हें रीवा राज्य का दीवान नियुक्त कर दिया गया।
 - पं. हेतराम ने बड़ी कुशलता के साथ रीवा राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था को पटरी पर लाकर विभिन्न क्षेत्रों का पर्याप्त विकास किया। इसीलिए पं. हेतराम को आधुनिक रीवा राज्य का निर्माता माना गया।

❖ व्यंकटरमण

- व्यंकटरमण रामानुज प्रसाद सिंह का राज्याभिषेक 8 अक्टूबर 1880 ई. को जनरल डेली के द्वारा करवाया गया था।
- वह अल्पव्यस्क थे तो अंग्रेजों के द्वारा शासन संचालन के लिए 'बघेलखण्ड रीजेंसी' की स्थापना की गई, ब्रिटिश सरकार ने उन्हें राज्य की सत्ता नवम्बर 1895 ई. में सौंपी।
- कुछ राजकीय पदाधिकारी रीवा राज्य का शासन अंग्रेजी सरकार के अधीन ही रखना चाहते थे और व्यंकटरमण सिंह को राजकार्य के लिए अयोग्य ठहराया था।
- इसीलिए सत्तारूढ़ होते ही 15 नवम्बर 1895 ई. को महाराजा व्यंकटरमण सिंह ने तीन घोषणाएँ की थीं।
- पहली घोषणा में विरोध करने वालों को 24 घंटे के अन्दर रीवा राज्य से बाहर चले जाने के लिए आदेशित किया गया।



- दूसरी घोषणा में हिन्दी को राजकीय भाषा और तीसरी घोषणा में अपने हितैषियों को इलाके, भूमि, पद आदि देकर सम्मानित किया गया।
- 1903 – दिल्ली दरबार में शामिल हुए।
- 1905 – प्रिन्स ऑफ बेल्स से मुलाकात की – इंदौर

व्यंकटरमण सिंह के कार्य

प्रशासनिक सुधार

- 1904 ई. में प्रताप सिंह की मृत्यु के पश्चात 'दीवान' के पद को समाप्त करके उसके स्थान पर राजस्व (माल) और न्याय विभाग के लिए दो कमिशनर नियुक्त किये गये।
- सकत्तरी के पद पर पं. जानकी प्रसाद को नियुक्त किया गया और कमाण्डर-इन-चीफ का पद महाराजा ने अपने पास रखा।
- सुपरिनेटेण्डेन्सी शासन में गठित सलाहकारणी सभा (शाही कौसिल) को समाप्त करके प्रशासन के विभिन्न विभागों के लिए चार सचिवों की नियुक्ति की गयी।

न्यायिक सुधार

- राज्य को उत्तरी रीवा और दक्षिणी रीवा में विभाजित कर दोनों भागों में न्यायालय स्थापित करके दो मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये।
- लेकिन फौजदारी और सिविल मुकदमों का फैसला करने का अधिकार कमाण्डर-इन-चीफ को भी दिया गया।
- साथ ही माल और दीवानी मुकदमों के निर्णय के लिए 1897 ई. में मुख्य स्थानों पर 'चौरे' स्थापित किये गये।
- 1898 ई. में कोर्ट फीस और स्टाम्प के भी नियमों में सुधार लाया गया।
- चोर और डाकुओं के लिए दण्ड विधान को कठोरता से लागू किया गया तथा मृत्युदण्ड (फाँसी) को बहाल रखा गया।

भूमि सुधार कार्य

- 1905 ई. में राज्य की भूमि की पुनः पैमाइश करवायी गयी और भूमि सम्बन्धी पूर्ण जाँच की गयी।

आर्थिक कार्य

- जेल में कैदियों को दस्तकारी सिखाने की व्यवस्था की गयी; ताकि वे जेल से मुक्त होने के बाद दस्तकारी के माध्यम से अपना जीवन निर्वाह कर सकें।
- इसके अतिरिक्त जेल में निर्मित किये गये कम्बल, गाजी, दरी आदि से राज्य को आमदनी भी होने लगी।
- यातायात की सुविधाओं को बढ़ाने और व्यापार को समुन्नत बनाने के लिए कुछ सड़कों का भी निर्माण करवाया गया; जिनमें रीवा-उमरिया सड़क महत्वपूर्ण थी।
- कोयला, कुरन्द, सोहागा, रामरज, एल्यूमीनियम, शीशा, अभ्रक आदि खनिज पदार्थों की खदानों को शुरू किया गया।
- साथ ही कुछ कारखाने भी स्थापित किये गये: जिनमें 'उमरिया' की लेदर फैक्ट्री' प्रमुख थी।
- राज्य की आय को बढ़ाने के लिए अफीम और शराब के उत्पादन को भी राजकीय संरक्षण दिया गया।

शैक्षणिक कार्य

- प्रारंभिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया। ग्रामीण अंचलों में कई पाठशालाएँ खोली गयीं।
- संस्कृत-शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया और रीवा में वेद पाठशाला को स्थापित किया गया।
- साथ ही पटवारियों के लिए टेकिनिकल स्कूल की स्थापना की गयी।
- 1896 ई. में स्कूलों के निरीक्षण के लिए इन्सपेक्टर की भी नियुक्ति की गयी।
- शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पुस्तकालय स्थापित किये गये।
- रीवा-किला में 'सरस्वती भण्डार' नामक पुस्तकालय की स्थापना करके उसमें अनेक हस्तलिखित महत्वपूर्ण ग्रन्थों को संग्रहीत किया गया। बाद में यही पुस्तकालय 'वेंकट विद्या सदन' के नाम से जाना गया।
- 1902 ई. में 'दरबार प्रेस' को स्थापित किया गया। जिससे कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों को प्रकाशित किया गया।
- साथ ही 'भारत भ्राता' हिन्दी समाचार पत्र को विशेष प्रोत्साहन दिया गया। इसके अतिरिक्त रीवा से हिन्दी साप्ताहिक पत्र 'शुभ चिन्तक' भी प्रकाशित किया जाने लगा।





स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य

- राज्य के प्रमुख कस्बों में अस्पताल खोले गये। जिनमें मुफ्त दवा की व्यवस्था की गयी।
- डाक प्रबन्ध को व्यवस्थित किया गया और आवश्यकतानुसार जगह-जगह डाकघर स्थापित किये गये।

निर्माण सम्बन्धी कार्य

- आधुनिक शैली में कई इमारतों का निर्माण करवाया गया; जिनमें 'वेंकट भवन' नामक महल – अद्वितीय है।
- वेंकट भवन (निर्माण 1908 ई.) से लगा हुआ 'कोठी बाग' को विकसित किया गया।

पर्यावरण एवं जैव विविधता सम्बन्धित कार्य

- जंगल के नियमों को कठोरता से लागू किया गया।
- बाघों के वध पर प्रतिबन्ध लगाया गया और जंगल के विस्तार का प्रयास किया गया।
- 'कोठी बाग' में विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों को पोषित किया गया।

कानून एवं व्यवस्था सम्बन्धित कार्य

- पुलिस व्यवस्था का विस्तार किया गया। थानों की संख्या बढ़ायी गयी।
- प्रजा के जान-माल की सुरक्षा का पूर्ण दायित्व पुलिस को सौंपा गया। लेकिन रीवा में फौज ही पुलिस का कार्य करती थी।

सैन्य कार्य

- 27 जुलाई 1904 ई. को महाराजा व्यंकटरमण सिंह ने स्वयं 'कमाण्डर-इन-चीफ' का पद ग्रहण करके फौज का पुनर्गठन किया और रीवा, बाँधवगढ़, बघुज तथा सतना में फौजी छावनियों को निर्मित करवाया।
- रिसाला, पल्टनें और तोपखाने को विकसित किया गया।
- फौज के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया।
- 1914 ई. में प्रथम विश्वयुद्ध के समय ब्रिटिश सरकार द्वारा सहायता माँगे जाने पर व्यंकटरमण सिंह ने यथा शक्ति धन और घोड़े तो प्रदान किये; लेकिन अपनी पूरी फौज के द्वारा सहायता नहीं किये।

जनकल्याणकारी कार्य

- 1896–97 ई., 1899–1900 ई. और 1907 के भीषण अकाल में व्यंकटरमण सिंह ने राहत कार्य का प्रबंध करवाया और विकलांगों एवं वृद्धजनों को अन्न, वस्त्र और रूपये प्रदान किये।
- साथ ही किसानों को बीज और तकाबी ऋण उपलब्ध करवाकर प्रजा वात्सल्य की मिसाल प्रस्तुत की।
- इस प्रकार महाराजा व्यंकटरमण सिंह ने सुपरिनेटेण्डेन्सी शासन के अन्तर्गत शुरू की गयी प्रशासनिक व्यवस्था को विकसित एवं व्यवस्थित करने का सफल प्रयास किया।

राज-प्रतिनिधि काल (1918–1922 ई.)

- अक्टूबर 1918 ई. में व्यंकटरमण सिंह की मृत्यु के समय उनके पुत्र गुलाब सिंह (जन्म मार्च 1903 ई.) नाबालिग थे।
- अतः ब्रिटिश सरकार ने रतलाम नरेश सजन सिंह को रीवा राज्य का रीजेन्ट नियुक्त किया। जिन्होंने प्रशासन को संचालित करने के लिए सात सदस्यीय समिति (Council of Regency) का गठन किया।
- इस कौंसिल ने अपने चार वर्ष की अवधि में विभिन्न सुधार कार्य करके रीवा राज्य के प्रशासन में फेरबदल किया।

सैन्य व्यवस्था में परिवर्तन

- खर्च को कम करने के लिए फौज को अत्यन्त सीमित किया गया।
- अब चार पल्टनों के स्थान पर एक पल्टन 'व्यंकट बटालियन', दो रिसालों में सिर्फ एक रिसाला 'रघुराज लान्सर' और तोपखाने में चार बैटरी के बजाय एक बैटरी रखी गयी।
- इसके अतिरिक्त बाँधवगढ़ के बड़े तथा बैण्ड में भी कमी कर दी गयी। इस प्रकार रीवा-फौज में मात्र डेढ़ हजार सैनिक शेष बचे।

पुलिस व्यवस्था में सुधार

- पुलिस व्यवस्था को एक ब्रिटिश इन्सपेक्टर जनरल के अधीन करके ब्रिटिश शैली में उसका विस्तार किया गया।





→ राज्य को तीन जिलों रीवा, बघऊ और उमरिया में विभाजित करके प्रत्येक में सुपरिन्टेंडेन्ट नियुक्त किये गये।

→ सुपरिन्टेंडेन्ट के नीचे इन्सपेक्टर रखे गये। नये थाने स्थापित करके उनमें सब-इन्सपेक्टर पदस्थ किये गये।

→ अंग्रेजी पद्धति से पुलिस प्रशिक्षण शुरू हुआ। पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों का वेतन दोगुना किया गया।

न्याय व्यवस्था में सुधार

→ 1920 ई. में विधि समिति का गठन किया गया। जिसके सदस्यों का चयन रीजेन्ट कॉसिल के मेम्बरों में से किया गया।

→ यह 'विधि समिति' वर्तमान उच्च न्यायालय का प्रारम्भिक स्वरूप थी। इस समिति में जिला मजिस्ट्रेट और सेशन जजों के फैसलों की अपील की जाती थी।

→ जिलों में जिला मजिस्ट्रेट और सेशन जज तथा तहसीलों में डिप्टी मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये।

→ माल (राजस्व) विभाग का दायित्व तहसीलदारों को दिया गया।

बन्दोबस्त सर्वेक्षण

→ रीजेन्ट-कॉसिल के राजस्व सदस्य वी. के. मुले की अध्यक्षता में राज्य के सर्वे सेटिलमेन्ट के लिए 1920 ई. में वम्फोर्ड को नियुक्त किया गया, जिसने 1925 ई. में बन्दोबस्त का कार्य पूरा किया।

→ इससे धन की बर्बादी हुई और प्रजा का शोषण हुआ, रिपोर्ट सही तैयार नहीं की जा सकी। फलतः प्रजा में घोर असंतोष व्याप्त हो गया।

लोक निर्माण के कार्य

→ रीवा में राजनिवास सहित तीन शासकीय आवास एवं रीवा-सिरमौर व रीवा-गुढ़ रोड का निर्माण करवाने के लिए 1920 ई. में एक अंग्रेज इंजीनियर की नियुक्ति की गयी।

→ जिसने पुरानी कच्ची सड़कों को सीधा करने के नाम पर धन और 'कृषि भूमि' दोनों को बर्बाद किया।

शैक्षणिक सुधार

→ शिक्षा विभाग को व्यवस्थित करने के उद्देश्य से शिक्षा मंत्री और स्कूलों के निरीक्षण के लिए इन्सपेक्टर की नियुक्ति की गयी।

→ शिक्षा का बजट बढ़ाया गया। कुछ अपर प्राइमरी स्कूलों को हिन्दी मिडिल स्कूल का दर्जा दिया गया।

→ कुछ नये स्कूल खोले गये, जिनमें रीवा का 'मार्टण्ड हिन्दी मिडिल स्कूल' तथा उमरिया का 'गुलाब मिडिल स्कूल' प्रमुख हैं।

→ हिन्दी स्कूलों की फीस बन्द कर दी गयी और अंग्रेजी स्कूलों की फीस आधी कर दी गयी।

→ अनुदान प्राप्त स्कूल खोलने का भी नियम निर्मित किया गया; जिससे स्कूलों की संख्या में और वृद्धि हुई।

स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार

→ स्वास्थ्य सुविधाओं को सुव्यवस्थित करने बावत् सुपरिन्टेंडेन्ट की देखरेख में स्वास्थ विभाग की स्थापना की गयी।

→ जिसके तहत चेचक का टीकाकरण, कुओं की सफाई, मलेरिया की रोकथाम और जेल विभाग का प्रबन्धन किया गया।

→ सफाई विभाग के लिए एक स्वास्थ्य अधिकारी भी नियुक्त किया गया।

दुर्भिक्ष और राजकीय राहत

→ 1919—20 ई. में राज्य में भयंकर अकाल पड़ा। इस दौरान राहत कार्य और तकावी ऋण आदि की व्यवस्था नहीं की गयी।

→ बल्कि प्रति सप्ताह राजकोष से धन प्राप्त करके तहसीलदारों के माध्यम से ग्रामीण जनता को नकद धनराशि बाँटने का प्रबन्ध किया गया। जिसमें जनता को कम और कर्मचारियों को ज्यादा राहत मिली।

अन्य कार्य

→ अन्य कार्यों के अन्तर्गत लेखा विभाग को व्यवस्थित किया गया। जिसमें आय-व्यय का ब्यौरा संग्रहीत किया जाने लगा; साथ ही बजट बनाने की विधि को विकसित किया गया।

→ अभिलेखागार को स्थापित करके पुराने दस्तावेज एवं कागजातों को संवर्धित किया गया।

→ सतना और उमरिया में नगरपालिकाएँ स्थापित की गयीं।

→ रीवा से प्रकाशित होने वाले हिन्दी समाचार पत्र 'भारत भ्राता' को बन्द करवा दिया गया था।

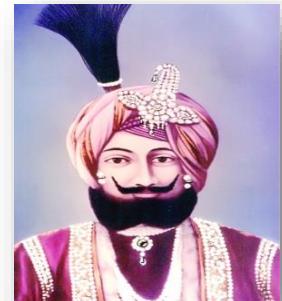




- ◇ वस्तुतः रीजेन्सी शासन के कार्यों से रीवा राज्य की जनता ऊब चुकी थी और उसका असंतोष बढ़कर आक्रोश में बदलना शुरू हो गया था। लेकिन तब तक रीजेन्सी शासन का कार्यकाल ही समाप्त हो गया।

◆ गुलाब सिंह

- 1922 ई. में गुलाब सिंह डेली कालेज इन्डौर से अपनी शिक्षा पूर्ण कुरके रीवा वापस आये महाराजा गुलाब सिंह का प्रत्यक्ष शासन (1922–1946 ई.) प्रारंभ हुआ।
- गृहस्थ जीवन में प्रवेश होते ही 31 अक्टूबर 1922 ई. को ब्रिटिश सरकार ने रीवा राज्य का शासन महाराजा गुलाब सिंह को सौंप दिया।
- इन्होंने शासन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए एक कमेटी का गठन किया; जिसमें कालाबिन नामक अंग्रेज को सलाहकार, पं. जानकी प्रसाद चतुर्वेदी को राज्य सचिव, यशवन्त सिंह (ताला) को निजी सचिव, रामपाल सिंह (कठहा) को व्यक्तिगत सचिव और बलवन्त सिंह को सैन्य सचिव नियुक्त किया गया।
- इस कमेटी के प्रत्येक पदाधिकारी के अधिकार में राज्य के भिन्न-भिन्न विभाग रखे गये। इसके अतिरिक्त न्याय एवं माल विभाग के प्रबन्धन के लिए चार आयुक्तों की एक समिति बनायी गयी।
- गुलाब सिंह ने प्रशासनिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन करके जन-हित को सर्वोपरि मानकर रीवा राज्य को एक 'आदर्श राज्य' बनाने के लिए विभिन्न सुधार किये थे।



महाराजा गुलाब सिंह के प्रमुख सुधार

◆ आर्थिक सुधार –

- गुलाब सिंह ने फिजूल खर्चों को नियंत्रित किया और राजकोष की समृद्धि के लिए 'मितव्ययिता की नीति' को अपनाया।
- 1935 ई. में किसानों को खेती करने की विधि, उत्तम बीज, खाद के प्रयोग तथा पशुपालन के तौर-तरीकों आदि को बताने के लिए 'कृषि फार्म' की स्थापना की गयी।
- 1939 ई. में 'लिलजी' जैसे बांधों और कई तालाब-पोखरों का निर्माण करवाकर सिंचाई की सुविधाओं को विकसित किया गया ताकि कृषि उत्पादन में वृद्धि हो सके।
- गुलाब सिंह के द्वारा उद्योग-धंधों और व्यापार को भी प्रोत्साहन दिया गया।
- उन्होंने 'कस्टम एण्ड एक्साइज एक्ट' में सुधार किया और राज्य के प्रमुख स्थानों पर नये बाजारों को स्थापित किया।
- जिसके फलस्वरूप अप्रैल 1940 ई. में सतना में 'श्री बघेलखण्ड फ्लावर मिल' की स्थापना हुई।
- इस प्रकार इन सभी कार्यों से राज्य की आय में वृद्धि हुई।
- कृषि एवं व्यापार की उन्नति के लिए ऋण की परम्परा भी शुरू की गयी। इसके लिए 1934 ई. में रीवा में 'बैंक आफ बघेलखण्ड' की स्थापना की गयी; जिसकी शाखाएँ सभी तहसील मुख्यालयों एवं मुख्य बाजारों में खोली गयीं।

◆ शैक्षणिक सुधार –

- उन्होंने 1926 ई. में हिन्दी मिडिल की परीक्षा का केन्द्र प्रयाग (इलाहाबाद) से हटाकर सतना को बनाया।
- 1932 ई. में शिक्षा संचालक की नियुक्ति की गयी।
- 1934 ई. में रीवा में शिक्षा बोर्ड की स्थापना करके राज्य की शिक्षा व्यवस्था को 'उत्तर प्रदेश बोर्ड' से पृथक कर इससे सम्बद्ध किया गया।
- इसी वर्ष प्राथमिक और माध्यमिक स्तर तक के लिए पृथक-पृथक पाठ्य पुस्तकों निर्धारित की गयीं तथा परीक्षा प्रणाली की नियमावली बनायी गयी।
- इसी वर्ष रीवा में स्त्री शिक्षा के विकास हेतु सुदर्शन कुमारी बालिका उच्चतर विद्यालय खोला गया।
- 1936 ई. में 'पंचवर्षीय शिक्षा योजना' बनायी गयी। जिसके अन्तर्गत इच्छुक विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए बाहर जाने की सुविधा थी।





- संस्कृत और अंग्रेजी शिक्षा के विकास के लिए क्रमशः 1937 ई. में लक्ष्मण बाग रीवा में संस्कृत महाविद्यालय और 1938 ई. में 'शिक्षा मंदिर' नामक अंग्रेजी स्कूल स्थापित हुआ।
 - संस्कृत के विद्यार्थियों को प्रोत्साहन के बतौर राजकीय कोष से आर्थिक अनुदान भी दिया जाता था।
 - 1937 ई. में उच्चतर विद्यालय रीवा को 'दरबार इन्टर मीडिएट कालेज' का दर्जा मिला; जो 1944 ई. में 'दरबार डिग्री कॉलेज' में परिवर्तित कर दिया गया।
 - इसी वर्ष माध्यमिक विद्यालय शहडोल को 'रघुराज उच्चतर विद्यालय' का नाम दिया गया।
 - इनके अतिरिक्त शिक्षकों के प्रशिक्षण, तकनीकी शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया गया।
 - 1935 ई. में दलित वर्ग के लिए भी सभी शिक्षण संस्थाओं के द्वारा खोल दिये गये और आगे 1944 ई. में गरीब विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति हेतु 'गरीब छात्र हितकारी कोष' की भी स्थापना की गयी।
 - साथ ही शिक्षा के संवर्धन के लिए कुछ पुस्तकालयों की भी स्थापना हुई।
- ◊ इस प्रकार रीवा राज्य में किये गये शैक्षणिक विकास से यहाँ के जन-जागरण को बल मिला: जो स्वतंत्रता आन्दोलन में सहायक सिद्ध हुआ।

♦ सामाजिक सुधार –

- उन्होंने 1935–36 ई. में समाज में प्रचलित कई कुप्रथाओं एवं कुरीतियों जैसे बाल विवाह, हलवाही प्रथा, अस्पृश्यता आदि को समाप्त करने के लिए कानून बनाया।
 - उन्होंने विधवाओं की स्थिति को सुधारने हेतु विधवा विवाह कानून लागू किया, विधवा पुर्णविवाह प्रारम्भ किया और रीवा में 'विधवा आश्रम' की स्थापना की।
 - वर्ष व्यवस्था को मिटाने के लिए उन्होंने 'सहभोज–प्रथा' को प्रारंभ किया; जिसमें सभी जातियों के लोग साथ बैठकर भोजन करते थे।
 - वे स्वयं ग्रामीण क्षेत्रों में दौरा करके हरिजन सम्मेलनों का आयोजन करते थे और दलितों को शिक्षा की ओर उन्मुख करने के लिए आवाहन करते थे।
 - उन्होंने हरिजनों को मंदिरों में प्रवेश करने की भी अनुमति प्रदान की। समाज के नैतिक स्तर को उठाने के लिए उन्होंने 'बघेलखण्ड बालचर मण्डल' की स्थापना करके स्वयं चीफ–स्काउट बने।
 - 1942–43 ई. में रीवा और सतना में अनाथ बच्चों की शिक्षा तथा प्रगति के लिए अनाथालय भी स्थापित किये गये।
- ◊ इस प्रकार गुलाबसिंह ने सामाजिक क्षेत्र में विभिन्न सुधार करके एक नये अध्याय की शुरूआत की थी। इसलिए उन्हें अपने युग का प्रथम समाज सुधारक नरेश माना जा सकता है।

♦ स्वास्थ्य संबंधी सुधार –

- बान्धवेश महाराजा ने अपने नागरिकों के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधायें भी मुहैया करवायीं।
- उन्होंने आवश्यकतानुसार राज्य में कई डिसपेन्सरी स्थापित करवायीं।
- 1938 ई. में रीवा में 'जुबली जनाना अस्पताल' और वैदिक औषधालयों को स्थापित करके उनमें योग्य पुरुष–महिला चिकित्सक रखे गये।
- मुख्य नगरों में नगरपालिका परिषदों को कायम करके स्वास्थ्य अधिकारियों की नियुक्ति की गयी; ताकि नगरों की साफ–सफाई तथा स्वच्छता निरन्तर बनी रहे।

♦ पत्र–पत्रिकाओं को प्रोत्साहन

- गुलाबसिंह ने अपनी बान्धवीय प्रजा में जागरण लाने के लिए पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन को भी प्रोत्साहन दिया।
 - उन्होंने 1932 ई. में 'दरबार प्रेस रीवा' से पाक्षिक 'रीवाराज गजट' का प्रकाशन शुरू किया।
 - इसी वर्ष साप्ताहिक पत्र 'प्रकाश' का प्रकाशन नरसिंहराम शुक्ल के द्वारा प्रारम्भ किया गया।
 - 1942 ई. में 'बान्धव' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन होने लगा।
- ◊ इस प्रकार इन पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से राज्य में राजनीतिक जागृति सम्बन्ध हुई जो स्वाधीनता आन्दोलन की सक्रियता में सार्थक सिद्ध हुई।



♦ लोक निर्माण के कार्य

- राज्य में यातायात की सुविधाओं को बढ़ाने एवं व्यापार को समुन्नत बनाने के लिए गुलाबसिंह ने सड़कों और पुलों का निर्माण करवाया।
- जिनमें मुख्य सड़कें रीवा-उमरिया, रीवा-अमरकंटक, रीवा-सीधी सिंगरौली, रीवा-सिरमौर और सतना सेमरिया हैं। मुख्य पुलों में घोघर का विक्रमादित्य पुल, बिछिया पुल, माधोगढ़ पुल, चाकघाट पुल और दियापीपर पुल (शहजोल) हैं।
- इन्हीं महाराजा के समय में अनूपपुर-चिरमिरी रेलवे लाईन का भी निर्माण करवाया गया।
- भवन इमारतों के निर्माण में भी ध्यान दिया गया। गुलाबसिंह के द्वारा जिला एवं तहसील मुख्यालयों में कार्यालयों, न्यायालयों, डाक बैंगले, अस्पतालों, विद्यालयों, जेल आदि के लिए कई भवनों एवं इमारतों का निर्माण करवायां गया।
- जिनमें उज्जैनी महारानी मेमोरियल हाल (1938 ई.) बैजू धर्मशाला (1941 ई.) और महाराजा व्यंकटरमण की स्टैच्यू विशेष महत्व की हैं।

♦ पवाई रुल्स

- रीवा राज्य की चालीस प्रतिशत भूमि कोठार कहलाती थी। इस जमीन पर खेती करने वाले किसान रीवा दरबार से संबद्ध थे।
- जबकि साठ प्रतिशत जमीन इलाकेदारों और पवाईदारों के अधिकार में थी।
- ये लोग अपने अधीन किसानों से मनमानी लगान वसूल करते थे और उनके साथ अन्याय एवं ज्यादती भी करते थे। जिससे किसानों की हालत दयनीय थी।
- इसलिए गुलाब सिंह ने इलाकेदारों और पवाईदारों के अधिकारों को सीमित करने के लिए 13 मार्च 1934 ई. को राज्य में 'पवाई रुल्स' को लागू किया।

प्रावधान

- वनोपज पर रीवा दरबार का अधिकार होगा। पवाईदार या इलाकेदार वनोपज पर निर्धारित 'कर' का चौथाई भाग भुगतान करने के बाद ही उसका उपयोग कर सकेंगे।
- इलाकेदारों और पवाईदारों को पुरानी परम्परा के अनुसार ही रीवा दरबार में उपस्थित होना पड़ेगा; अन्यथा उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जायेगी।
- 1923 ई. के सर्वे सेटलमेन्ट के दौरान जो जमीन लगान से वंचित थी, उसे जब्त कर लिया गया। ऐसी जमीन का उपभोग अभी तक इलाकेदार और पवाईदार करते थे।
- लगान 4-5 गुना बढ़ा दी गयी।

परिणाम

- वस्तुतः पवाई रुल्स से इलाकेदारों एवं पवाईदारों के विशेषाधिकार समाप्त हो गये और उनकी निरंकुशता पर विराम लग गया।
- इन नियमों ने स्पष्ट कर दिया कि 'पवाई' एक देन होती है, जो महाराजा की सेवा के एवज में दी जाती है।
- पवाई रुल्स को राज्य के पवाईदारों और इलाकेदारों ने 'काला कानून' की संज्ञा दी और 'पवाईदार संघ' का गठन करके इसके विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया।
- यद्यपि यह आन्दोलन प्रायः असफल ही रहा; किन्तु भविष्य में इलाकेदारों और पवाईदारों की यह नाराजगी महाराजा के लिए घातक सिद्ध हुई।

महाराजा गुलाबसिंह पर अभियोग और राजच्युत किया जाना

- गुलाबसिंह के प्रगतिशील विचारों के कारण ब्रिटिश सरकार और अभिजात वर्ग (इलाकेदार व पवाईदार) दोनों ही उनसे क्षुब्ध हो गये।
- 13 मार्च 1934 ई. को जब राज्य में पवाई रुल्स लागू किये गये, तब इसके विरुद्ध अभिजात वर्ग ने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए 'पवाईदार संघ' का गठन करके एक आन्दोलनात्मक अभियान चलाया, 'बघेलखण्ड कांग्रेस कमेटी' की स्थापना की।



- महाराजा गुलाबसिंह के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार के पास निराधार शिकायतों का पुलन्दा भेजना शुरू किया। शिकायतें मुख्य रूप से महाराजा के व्यक्तिगत कार्यों और प्रशासनिक अव्यवस्था से सम्बंधित थीं।
- इस संदर्भ में भी अभिजात वर्ग द्वारा गुलाबसिंह की शिकायत की गयी कि उनके द्वारा कांग्रेस के विरुद्ध कोई खास कदम नहीं उठाया जा रहा है।
- गुलाबसिंह 'रीवा रियासत' में राष्ट्रीय विचारों की वाहक संस्थाओं में रुचि ले रहे थे। 1937 ई. में उन्होंने बघेलखण्ड कांग्रेस कमेटी पर लगे प्रतिबन्धों को हटा दिया था। यहाँ तक कि 1939 ई. में कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में उन्होंने रीवा से हाथी पर सुभाषचन्द्र बोस की तस्वीर रखकर जुलूस के साथ छः हाथियों को भेजा था।
- अतः ब्रिटिश सरकार ने गुलाबसिंह को 10 फरवरी 1942 ई. को इन्दौर बुलाकर उनके विरुद्ध प्राप्त शिकायतों की जाँच की अनिवार्यता से अवगत कराया और 17 फरवरी 1942 ई. को उनके समस्त राज्याधिकारों को अस्थायी तौर पर निलंबित कर दिया।
- तत्पश्चात् 4 जून 1942 ई. को 5 सदस्यीय जाँच आयोग का गठन किया गया। जाँच की निष्पक्षता के लिए जाँच-अवधि में गुलाबसिंह को रीवा राज्य की सीमा से 100 मील दूर रहने का निर्देश दिया गया।
- इस दौरान रीवा राज्य के प्रशासन का दायित्व ब्रिटिश सरकार ने अपने अधिकारियों को सौंप दिया।
- ब्रिटिश सरकार की इस कार्यवाही के विरोध में 19 फरवरी से 8 अगस्त 1942 ई. तक अभिजात वर्ग को छोड़कर शेष सभी लोगों ने महाराजा की साधिकार रीवा वापसी के लिए निरन्तर आन्दोलन किया। लेकिन ब्रिटिश सरकार पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा।
- अन्ततः काफी कशमकश के बाद जाँच आयोग ने 29 नवम्बर 1943 ई. को गुलाबसिंह पर आरोपित आरोपों को निराधार पाकर उन्हें निर्दोष करार दिया।
- तब ब्रिटिश सरकार ने कुछ शर्तों के साथ गुलाबसिंह को रीवा जाने की अनुमति प्रदान की। लेकिन उनके रीवा जाने से पूर्व रियासत में नवीन शासन व्यवस्था के लिए सात सदस्यीय मंत्रीमण्डल का गठन किया गया; जिसमें सी. सी.एच. स्मिथ को मुख्यमंत्री और महाराजा गुलाबसिंह को सभापति बनाया गया। लेकिन शासन में गुलाबसिंह को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं था।
- 1944 ई. में रक्षाबन्धन के दिन 'बान्धवीय प्रजा मण्डल कोष' की स्थापना की और उसके माध्यम से राज्य की जनता को शिक्षित करने के लिए अभियान शुरू किया।
- उन्होंने 16 अक्टूबर 1945 ई. को बघेलखण्ड कांग्रेस कमेटी के द्वारा मौँग की जा रही, उत्तरदायी शासन की घोषणा कर दी।
- उन्होंने घोषणा में कहा कि 'रीमा रिमहों का है, अस्तु रिमहों का शासन रिमहों के लिए रिमहों के द्वारा हो' इस घोषणा का भारत में सर्वत्र स्वागत हुआ।
- पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपने वक्तव्य में कहा था कि 'महाराजा रीवा की घोषणा दूरगामी महत्व की है। मैं रीवा के लिए उसका स्वागत करता हूँ। यह अन्य रियासतों के लिए एक मिसाल के बतौर है।'
- उत्तरदायी शासन की घोषणा से ब्रिटिश शासन में घोर प्रतिक्रिया हुई और कुछ ही दिन बाद ब्रिटिश शासन के द्वारा युवराज मार्टण्ड सिंह को प्रशासनिक प्रशिक्षण के लिए विदेश (इंगिट) भेजने का निर्णय लिया गया।
- ब्रिटिश क्राउन के प्रतिनिधि की सिफारिश पर 31 जनवरी 1946 ई. को गुलाबसिंह को राज-सत्ता से हटाकर युवराज मार्टण्ड सिंह को राज्याधिकारी बनाया गया।
- अक्टूबर 1946 ई. में गुलाबसिंह पर से प्रतिबन्ध हटा लिया गया; लेकिन उन्हें रीवा जाने की अनुमति नहीं दी गयी। अतः वे प्रयाग आ गये और वहीं से बघेलखण्ड की जनता के संगठन का भरसक प्रयत्न किया।
- मई 1947 ई. में भारतीय विधान सम्मेलन के लिए चुनाव हुआ जिसमें गुलाबसिंह के – समर्थन के कारण यादवेन्द्र सिंह ने नर्मदा सिंह को पराजित करके निर्वाचित हुए।
- 15 अगस्त 1947 ई. को जब भारत को स्वतंत्रता मिल गयी। तब गुलाब सिंह 22 अगस्त 1947 ई. को रीवा आ गये। लेकिन भारतीय सरकार ने उन्हें रीवा छोड़ने का आदेश दिया। अतः वे बम्बई चले गये।
- भारत सरकार ने उन्हें दिल्ली बुलाकर नजरबन्द कर दिया। बीच में 12 अप्रैल 1948 ई. को वे पुनः रीवा आ गये। लेकिन भारत सरकार ने उन्हें इस बार दिल्ली के केन्द्रीय कारागार में रख दिया।



- नवम्बर 1949 ई. को उन्हें बम्बई भेजा गया; जहाँ 13 अप्रैल 1950 ई. को बीकानेर भवन की ऊँचाई से गिरकर इस दुनिया से चल बसे।

❖ मार्टण्ड सिंह

- 6 फरवरी 1946 ई. को राघव महल में मार्टण्ड सिंह का राजतिलक सम्पन्न हुआ। 1 अप्रैल 1946 ई. को मेमोरियल हाल में एक भव्य समारोह में ब्रिटिश गवर्नर जनरल के सहायक द्वारा महाराजा मार्टण्ड सिंह को राजकीय अधिकारों सौंपे गये।
- महाराजा मार्टण्ड सिंह ने सत्ता संभालते ही राज्य की बकाया लगान लगभग साढ़े तीन लाख रुपये माफ करने और पाँच सौ रुपये से कम वेतन पाने वाले कर्मचारियों को एक माह का वेतन पारितोषिक रूप में देने की घोषणा की।
- साथ ही रीवा राज्य के लिए लोकसत्तात्मक शासन विधान का निर्माण करने के लिए सात सदस्यीय 'संवैधानिक सुधार समिति' की भी घोषणा की; जिसका अध्यक्ष 'हरीसिंह गौड़' को बनाया गया।
- अंतिम शासक, 1 नवंबर 1956 को वर्तमान म.प्र. में मिला लिया।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और बघेलखण्ड

→ विन्ध्य की धरा पर महापुरुषों एवं शूरवीरों का जन्म हुआ। जिनमें ठाकुर रणमत सिंह, श्यामशाह, धीरसिंह और पंजाब सिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

क्रांति का प्रारंभ

- बघेलखण्ड में क्रांति का वास्तविक श्रीगणेश अगस्त 1857 ई. में जगदीशपुर (बिहार) के कुँवरसिंह के रीवा आगमन पर हुआ।
- जिनके आने की सूचना पाकर विन्ध्य के क्रांतिकारियों का उत्साह और अधिक बढ़ गया था। इसी के पश्चात् से ही विन्ध्यक्षेत्र की क्रांति का स्वरूप व्यापक हुआ।

तिलंगा की गिरफ्तारी

- कुँवरसिंह के रीवा आगमन से जो स्वतंत्रता क्रांति की ज्वाला उठने वाली थी, उसके लक्षण सर्वप्रथम अगस्त 1857 में तिलंगा (तेलगू) ब्राह्मण में दिखलाई दिये। यह तिलंगा ब्राह्मण अंग्रेजी फौज का एक सैनिक था।
- इसे रीवा के ब्रिटिश पोलिटिकल एजेन्ट आसबर्न ने बड़ी चतुराई से गिरफ्तार करवा लिया। अतः तिलंगा की जान बचाने के लिए श्यामशाह, रणमतसिंह, धीरसिंह और पंजाब सिंह ने आपस में मिलकर प्रयास किये।
- आसबर्न इन चारों बघेल सरदारों की गतिविधियों को शीघ्र ही भाँप गया और राजा रघुराजसिंह के पास इनके बागी होने ही सूचना भेजी।
- अतः रघुराजसिंह ने स्वयं को अंग्रेजों के संदेह से बचाने के लिए उक्त चारों बघेल सरदारों को रीवा दरबार की नौकरी से मुक्त करके राज्य से बाहर चले जाने का आदेश दिया। इस आदेश के क्रियान्वयन में विशेष रुचि नहीं ली।
- रणमतसिंह अपने साथियों के साथ रीवा राज्य में रहकर अंग्रेज विरोधी गतिविधियों में लीन रहे और यहाँ तक कि वे रीवा स्थित आसबर्न के बंगले (वर्तमान मार्टण्ड हायर सेकण्ड्री स्कूल) को घेर लिये। परन्तु आसबर्न किसी तरह अपनी जान बचाकर भाग निकला।
- इस घटना से रघुराजसिंह अत्यधिक भयभीत हो गये और रीवा राज्य की कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए अपने राज्य से 2000 आदमियों को आसबर्न की सेना में भर्ती करवा कर अंग्रेजों की सहायता की।

मुक्त फौज का गठन

- परिस्थितियों से प्रेरित होकर चारों बघेल सरदारों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध खुले आम विद्रोह करके लूट-मार प्रारंभ कर दी।
- सघर्ष को और अधिक प्रभावशील एवं प्रबल बनाने के उद्देश्य से इन लोगों ने 'मुक्त फौज' का गठन भी कर लिया; जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, मुसलमान आदि सभी जातियों के लोग अपने सभी भेदभावों को भुलाकर सम्मिलित और संगठित हुए।
- इन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर एक दूसरे का सहयोग किया और विद्रोह की लौ को तेज करने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी।





- श्यामशाह की गतिविधियाँ ज्यादातर कटनी, क्योटी और शहडोल की तरफ सक्रिय रहीं। लेकिन अंग्रेजों के सहयोगी बुढ़वा (ब्यौहारी, जिला शहडोल) के ठाकुर ने अपने आदमियों के द्वारा पत्थर मार-मार कर इनकी हत्या करवा दी।
- श्यामशाह की मृत्यु के पश्चात् मुक्त फौज का नेतृत्व ठा. रणमतसिंह ने करके इसे नई दिशा प्रदान की। उस समय रणमतसिंह के प्रमुख साथियों में से धीरसिंह, पंजाबसिंह, रामप्रताप सिंह, भवानीसिंह, पहलवानसिंह चन्देल, लोचनसिंह, प्रतिपाल सिंह, अनन्त सिंह, भोला बारी, कामता लोहार, वृन्दावन कहार, तालिब बेग, गोपाल मुसलमान तथा सहामत खाँ थे। सहामत खाँ ने रणमतसिंह का मृत्युपर्यन्त तक साथ दिया था।
- मुक्त फौज के गठन में पूर्ण धर्मनिरपेक्षता की नीति का पालन किया गया था।
- क्रांतिकारियों के कुछ ऐसे पत्र भी प्राप्त हुए हैं जिनसे सिद्ध होता है कि रणमतसिंह, धीरसिंह और पंजाब सिंह का सम्बंध जगदीशपुर के कुँवरसिंह, बाँदा के नवाब एवं तात्याटोपे से भी रहा है।
- इन्होंने रानी लक्ष्मीबाई से भी सम्बंध स्थापित करने का प्रयास किया था। धीरसिंह की अधिकांश गतिविधियाँ प्रायः बाँदा की ओर और पंजाब सिंह की गतिविधियाँ झाँसी की ओर सक्रिय थीं; वैसे तो पंजाब सिंह, ठा. रणमत सिंह के प्रमुख संदेशवाहक के रूप में कार्य करते थे।

नागौद में क्रांति

- बघेलखण्ड की छोटी-छोटी रियासतों पर नियंत्रण रखने के लिए कम्पनी सरकार ने नागौद में उप-एजेन्सी स्थापित की थी। वहाँ पर अंग्रेजी फौज की एक छावनी थी। क्रांति के समय नागौद का 'पोलिटिकल एजेन्ट मेजर एलिस' था।
- उसने क्रांति का पूर्णतः दमन करने के लिए नागौद नरेश तथा आस-पास के कुछ अन्य राजाओं को अपने पक्ष में मिलाकर उनका सहयोग प्राप्त कर लिया था।
- उस समय नागौद में 50वीं बंगाल नेटिव इन्फैन्ट्री सक्रिय थी। कुँवरसिंह के इस ओर आने की सूचना पाकर दस्ता उसके विरुद्ध भेजा गया।
- किन्तु दस्ते के कुछ सिपाहियों ने देशभक्तों के विरुद्ध युद्ध करना उचित नहीं समझा और नागौद वापस आकर 27 अगस्त 1857 ई. को एजेन्सी में आग लगाकर खूब लूटपाट की।
- नागौद के राजा राघवेन्द्र सिंह ने ब्रिटिश एजेन्सी के अधिकारियों और उनके परिवारजनों की सहायता करके उन्हें मिर्जापुर सुरक्षित भेजा।
- रणमतसिंह को जैसे ही नागौद की फौज के विद्रोही होने की सूचना मिली, वैसे ही वे तत्काल नागौद के क्रांतिकारियों से जा मिले और वहाँ के अंग्रेजों तथा उनके सहयोगियों का सफाया कर दिये।
- वे मेजर एलिस को खत्म कर देना चाहते थे, किन्तु वह बड़ी चालाकी से भिल्लसांय (जिला—पन्ना) की ओर भाग निकला।

भिल्लसांय का युद्ध (अक्टूबर 1857 ई.)

- जब मेजर एलिस नागौद से भागकर भिल्लसांय की ओर गया, तब रणमतसिंह भी उसका पीछा करते हुए भिल्लसांय पहुँच गये।
- अजयगढ़ का राजा रनजोर सिंह अंग्रेजों का सहयोगी था, जो मेजर एलिस को अपने किले में संरक्षण प्रदान कर रणमतसिंह का सामना करने के लिए अपनी एक विशाल सेना भिल्लसांय की ओर रवाना की, जहाँ अक्टूबर 1857 ई. में दोनों सेनाओं के मध्य भयंकर युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में रणमतसिंह के पास तोपें नहीं थीं, जबकि दूसरी ओर अजयगढ़ की तोपें आग के गोले उगल रही थीं।
- इस कारण जब रणमतसिंह की सेना के पांच उखड़ रहे थे, ठीक उसी समय रणमतसिंह का भतीजा अजीतसिंह घुड़सवारों की एक बड़ी सेना लेकर अजयगढ़ की सेना पर टूट पड़ा और अजयगढ़ की तोपें के मुँह में बाँस टूँसकर सारी तोपें को निष्क्रिय कर दिया।
- लेकिन तोपें के मुँह में बाँस डालते समय ही अजीतसिंह को तोप के एक गोले ने बुरी तरह घायल कर दिया, जिससे वे वीरगति को प्राप्त हुए।
- इस प्रकार अजीत सिंह की सहायता से रणमतसिंह को युद्ध क्षेत्र में काफी राहत मिली थी। इस युद्ध में अजयगढ़ का सेनापति केशरीसिंह मारा गया और रणमतसिंह को भी अपनी जीवन रक्षा हेतु घायल अवस्था में भागना पड़ा था।



→ इस भगदड़ में रणमत सिंह की तलवार, जिसकी मूँठ पर 'तलवार-रणमत सिंह बघेला' खुदा हुआ था, युद्ध स्थल में ही छूट गई थी, जो केशरीसिंह के वंशजों के पास अभी भी सुरक्षित है।

→ इस युद्ध में रणमतसिंह को रीवा, कोठी के अलावा बमुरहा के परिहार, नागौद के विद्रोही सैनिकों तथा जसों के जागीरदार की सेना का भी सहयोग प्राप्त हुआ था।

रणमतसिंह और उनके साथियों की गतिविधियाँ बाँदा की ओर

→ भिल्लसांय-युद्ध के पश्चात् रणमतसिंह ने अपनी अँग्रेज विरोधी गतिविधियों को बाँदा क्षेत्र की ओर तेज करना प्रारंभ किया और शीघ्र ही उन्होंने बाँदा जिले के दो परगने छींबू एवं टरहुआँ को पूर्ण-रूपेण अपनी गतिविधि का केन्द्र बना लिया।

→ इन क्षेत्रों में मुख्य क्रांतिकारी के रूप में रीवा के सरदार रणमतसिंह, धीरसिंह, पंजाबसिंह और कर्वी (बाँदा) के नारायणराव का दीवान राधागोविन्द का नाम उल्लेखनीय है।

→ इन क्रांतिकारियों को कोठी एवं सोहावल के राजाओं तथा कालिंजर के चौबों की भी सहायता प्राप्त थी। ये लोग नाना साहब के नाम पर क्रांति का झण्डा फहरा रहे थे।

→ इसी बीच 29 अप्रैल 1858 ई. को बाँदा के कलेक्टर एवं मजिस्ट्रेट के रूप में एफ.ओ. मयने ने चार्ज संभाला और इस क्षेत्र की क्रांतिकारी गतिविधियों से निपटने के लिए अधिक सक्रियता दिखलाई।

→ 19 अगस्त 1858 ई. को पंजाबसिंह तथा धीरसिंह ने एक हजार से अधिक सेना लेकर छींबू परगना के अन्तर्गत बरगढ़ नामक गाँव पर आक्रमण करके उस पर कब्जा कर लिया; तत्पश्चात् वे अपना अगला कदम मऊ की ओर बढ़ाये, जहाँ के अंग्रेज थानेदार और तहसीलदार दोनों डर कर राजापुर भाग गये।

→ इनकी बढ़ती हुई गतिविधियों को अंग्रेज सहन नहीं कर सके और छतरपुर-सेना के कमाण्डर कैप्टन ग्रिफिन ने मऊ से क्रांतिकारियों को भगा दिया।

→ सितम्बर 1858 ई. तक में ब्रिगेडियर कारपेंटर ने छींबू परगने को भी क्रांतिकारियों से मुक्त करवा लिया।

नौगाँव एजेन्सी पर आक्रमण

→ भिल्लसांय-युद्ध के समय ही रणमतसिंह को यह सूचना मिल गई थी कि नौगाँव में भी क्रांति हो गयी है। अतः ये अपने दलबल के साथ मौका पाते ही वहाँ पहुँचकर एजेन्सी को लूट लिया।

→ नौगाँव ब्रिटिश एजेन्सी पर आक्रमण के समय ही इनकी सहायता के लिए बाँदा की तरफ से एक अन्य क्रांतिकारी जत्था भी आ पहुँचा।

→ इन लोगों ने अंग्रेजों की चलती तोपों का मुँह तक बन्द कर दिया और हजारों अंग्रेज सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। यहाँ की एजेन्सी की लूट में सारी युद्ध सामग्री रणमतसिंह के हाथ लगी।

रणमतसिंह बरौंधा में

→ बरौंधा (जिला-सतना) प्रारंभ से ही बघेलखण्ड की रियासतों के ग्रुप में एक छोटा-सा राज्य था। यहाँ के शासक रघुवंशी राजपूत थे।

→ अंग्रेजों ने इसे सनद देकर एक राज्य स्वीकार कर लिया था। यह राज्य 1857 ई. की क्रांति का एक सक्रिय केन्द्र था।

→ इस राज्य के अंतर्गत स्थित पिंडरा नामक गाँव के बाग में दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी गयी थी जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने इस गाँव पर आक्रमण करके कई लोगों को गोलियों से भून दिया तथा गाँव को लूट कर आगजनी की।

→ रणमतसिंह इस घटना को सुनते ही बरौंधा पहुँचे और हतोत्साहित क्रांतिकारियों का उत्साहवर्धन करके उन्हें संगठित बने रहने का हौसला दिया; तत्पश्चात् वे चित्रकूट की ओर प्रस्थान कर गये।

चित्रकूट का युद्ध

→ जब रणमतसिंह चित्रकूट में हनुमान धारा के पास थे, उसी समय अंग्रेज पन्ना और अजयगढ़ के सैनिकों को लेकर अचानक चित्रकूट पहुँच गये और रणमतसिंह के शिविर को घेर लिया।

→ इस आकस्मिक आक्रमण से रणमतसिंह और उनके साथी जो जिस हालत में था अपने हथियार लेकर शत्रुओं पर टूट पड़ा।





- दोनों पक्षों के बीच घमासान युद्ध हुआ, जिसमें रणमतसिंह के भी कई सैनिक मारे गये। स्वयं रणमतसिंह घायल होकर कोठी की तरफ भाग निकले।
- रणमतसिंह कोठी राज्य को सुरक्षित समझ कर कुछ दिन विश्राम कर अपने घावों को ठीक करने के उद्देश्य से वहाँ गये, किन्तु रणमतसिंह के आने की सूचना पाते ही वहाँ का शासक अवधूत सिंह (1852–66 ई.) अपने परिवार सहित कोठी को छोड़कर कछिया टोला (माधवगढ़) चला गया।
- इधर रणमतसिंह कोठी की गढ़ी को खाली पाकर आराम से ठहर गये। मगर उनके घाव पूर्णतः सूख भी नहीं पाये थे कि नौगांव की अंग्रेज फौज ने कोठी की गढ़ी को आकर घेर लिया।
- फलतः रणमतसिंह अपने साथियों सहित खखरा (जिला—रीवा) के जंगल में जा छिपे।
- इसी समय इन्हें रसद सामग्री की कमी महसूस हुई, अतः इन्होंने पन्ना राज्य के अन्तर्गत स्थित बिरसिंहपुर पर आक्रमण करके लूटपाट की।
- इनका पीछा करती हुई नौगांव की अंग्रेजी फौज बिरसिंहपुर भी जा धमकी। लेकिन उसके वहाँ पहुँचते ही रणमतसिंह अपने दल सहित जंगल की ओर चले गये।

उभौरा का युद्ध

- रणमतसिंह बिरसिंहपुर के जंगलों में छिपे हुए थे, उस समय उन्हें खबर मिली कि उभौरा (जिला—रीवा) में हनुमान प्रसाद भूमिहार ब्राह्मण के नेतृत्व में क्रांतिकारियों का एक अच्छा दल संगठित हो रहा है।
- उसकी मदद के लिए वे शीघ्र ही उभौरा पहुँच गये। वहाँ के प्रमुख क्रांतिकारी नेता रणजीतराय दीक्षित ने रणमतसिंह को अपनी गढ़ी में ठहराकर काफी स्वागत स्तकार किया।
- लेकिन वहाँ रणमतसिंह बाँदा की अंग्रेजी फौज द्वारा घेर लिये गये। अतः दोनों के मध्य भयानक युद्ध हुआ। इसी बीच इनका पीछा करती हुई नौगांव की अंग्रेजी फौज भी उभौरा पहुँच गई। इससे अंग्रेजों का पलड़ा भारी हो गया।
- इस युद्ध में रणजीतराय लड़ते—लड़ते देश के लिए बलिदान हो गये तथा रणमतसिंह बरगढ़ होते हुए इलाहाबाद चले गये।

इलाहाबाद की ब्रिटिश छावनी पर रणमतसिंह का आक्रमण

- इलाहाबाद में स्वतंत्रता की क्रांति का नेतृत्व एक, वेश्या कर रही थी। वह अंग्रेज विरोधी गतिविधियों को प्रबल बनाने में प्रमुख भूमिका निभा रही थी।
- जब रणमतसिंह इलाहाबाद पहुँचे, तो इन्होंने कई अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया और वहाँ की ब्रिटिश छावनी पर आक्रमण करके बहुत सारी रसद सामग्री प्राप्त कर ली।
- इलाहाबाद—युद्ध के दौरान कुछ अंग्रेज सैनिक भागकर रीवा राज्य के उत्तरी क्षेत्र के जंगलों में जा छिपे। अतः रणमतसिंह अपने दल के साथ इस जंगल में धावा बोलकर बघौरा, देवरा आदि स्थानों पर इन्होंने अंग्रेजों को शिकस्त देकर मार भगाया।
- रीवा पोलिटिकल एजेन्ट आसबर्न रीवा—फौज की सहायता से लगातार रणमतसिंह का पीछा कर रहा था।
- इस कारण इन्हें मङ्गवास (जिला—सीधी) मनिका आदि स्थानों पर छिपना पड़ा और अन्त में इन्होंने क्योंटी गढ़ी (जिला—रीवा) को सुरक्षित समझकर उसे अपना अड्डा बनाया।

क्योंटी का युद्ध

- जब आसबर्न को क्योंटी में रणमतसिंह के छिपे होने की सूचना मिली, तो उसने रीवा—फौज को क्योंटी की ओर भेजा तथा उसके पीछे अपनी अंग्रेजी फौज को भी रवाना किया।
- इस युद्ध में रीवा राजा रघुराज सिंह ने कूटनीति से काम लिया और क्योंटी पर अंग्रेजों के आक्रमण की पूर्व सूचना रणमतसिंह के पास भेजकर इन्हें सतर्क कर दिया।
- साथ ही रीवा फौज का सेनापति दलथर्मन सिंह, जो रणमतसिंह के प्रति सहानुभूति रखता था, इस युद्ध में उसने पूर्व नियोजित योजना के अनुसार नकली बारूद का प्रयोग करके रणमतसिंह से कृत्रिम युद्ध किया।
- इस प्रकार रणमतसिंह ने रीवा—फौज की तरफ से निश्चित होकर पूरी शक्ति के साथ अंग्रेजी फौज पर आक्रमण किया, जिसमें कई अंग्रेज सैनिक एवं अधिकारी मारे गये।





- इस युद्ध में रणमतसिंह को अंग्रेजों की बहुत सारी युद्ध सामग्री प्राप्त हुई, जिनमें इंग्लैण्ड की बनी एक तलवार भी शामिल थी।
- अंग्रेजी फौज को नष्ट करने के पश्चात् रणमतसिंह ने दलथम्भन सिंह के इशारे पर क्योटी छोड़कर अपने साथियों सहित जंगल में जाकर शरण ली।
- दलथम्भन सिंह ने दिखावे के तौर पर इन क्रांतिकारियों का कुछ दूर तक पीछा किया, जिससे कि उस पर अंग्रेज किसी प्रकार का शक न करें।

बहुटी के जंगलों में रणमतसिंह का संघर्ष

- क्योटी छोड़ने के पश्चात् रणमतसिंह अपने साथियों सहित बहुटी (तहसील मऊगंज, रीवा) के जंगलों में जाकर बेलन नदी के किनारे स्थित एक छोटी सी गढ़ी को अपना अड्डा बनाया।
- उस समय मिर्जापुर की ओर से आने वाली अंग्रेजी फौज को इसका पता चला, तो उसने इस गढ़ी पर आक्रमण कर दिया।
- इस युद्ध में भी रणमतसिंह कई अंग्रेजों को मारकर चौंग-भखार (जिला—सरगुजा, म.प्र.) की झाँसी-डोंगरी की ओर चले गये।

रणमतसिंह की गिरफ्तारी एवं फाँसी पर चढ़ना

- अंग्रेज उन्हें गिरफ्तार करने का हर संभव प्रयास कर चुके थे, किन्तु असफल रहे; तब उन्होंने राजा रघुराजसिंह पर रणमतसिंह के गिरफ्तारी की बलात् जिम्मेदारी लाद दी, साथ ही राजा को यह धमकी भी दी गई कि अगर वह रणमतसिंह को गिरफ्तार करने में असफल होता है तो उसे राजगद्दी से बेदखल कर दिया जायेगा।
- अतः गद्दी छिन जाने के डर से रघुराजसिंह ने शीघ्र ही एक पत्र लिखकर रणमतसिंह को अपनी मदद के नाम पर रीवा बुलवा लिया।
- उस समय रघुराजसिंह इतना डर गये थे कि उन्होंने रणमतसिंह की माँ से उन सभी गुप्त पत्रों को जला देने या वापस करने के लिए भी कहा था, जो उन्होंने क्रांतिकारियों के सहयोग और समर्थन में लिखे थे।
- रणमतसिंह अपनी मातृभूमि के ऊपर खतरा देखकर तुरन्त रीवा आ गये। रीवा पहुँचने की सूचना दीवान दीनबच्चु ने आसबर्न के पास भेजकर रणमतसिंह को गिरफ्तार करवा दिया।
- तदुपरान्त इन्हें बाँदा ले जाया गया, जहाँ अंग्रेजों ने न्याय का नाटक करके अगस्त 1860 ई. में इस वीर सपूत को फाँसी पर लटका दिया।

संयुक्त राज्य विन्ध्य प्रदेश का गठन

- जनवरी 1948 ई. में टीकमगढ़ में आयोजित अधिवेशन में प्रेम नारायण खरे ने विन्ध्यप्रदेश के निर्माण की योजना प्रस्तुत की, जिसे सर्वसम्मति से मान्य कर लिया गया।
- बघेलखण्ड और बुंदेलखण्ड के अन्तर्गत 35 रियासतें थीं।
- संविधान सभा ने रीवा राज्य को व्यक्तिगत प्रतिनिधित्व प्रदान कर दिया; जिसे भारत सरकार के गृह विभाग ने मान्यता दे दी।
- इस प्रकार बघेलखण्ड और बुंदेलखण्ड की सभी रियासतों को मिलाकर 'संयुक्त राज्य विन्ध्यप्रदेश' की स्थापना हुई। जिसमें बघेलखण्ड और बुंदेलखण्ड के लिए पृथक—पृथक मंत्रिमण्डलों का गठन किया गया।
- दोनों मंत्रिमण्डलों का मुख्यालय क्रमशः रीवा और नौगाँव में केन्द्रित किया गया।
- 'संयुक्त राज्य विन्ध्यप्रदेश' का राज्य—प्रमुख रीवा महाराजा 'मार्टण्ड सिंह' को और उप—राज्य—प्रमुख 'महाराजा पन्ना' को बनाया गया।
- 4 अप्रैल 1948 ई. को नौगाँव—मंत्रिमण्डल के प्रधानमंत्री पद पर 'कामता प्रसाद सक्सेना' को और 15 मई 1948 ई. को रीवा—मंत्रिमण्डल के प्रधानमंत्री पद पर 'कप्तान अवधेश प्रताप सिंह' की नियुक्ति की गयी।
- लेकिन संयुक्त विन्ध्यप्रदेश की यह विभाजित शासन प्रणाली बोझिल एवं अव्यवहारिक प्रतीत हुई।
- अतः 3 जून 1948 ई. को बघेलखण्ड और बुंदेलखण्ड का संयुक्त मंत्रिमण्डल 'विन्ध्यप्रदेश मंत्रीमण्डल' के नाम से राजधानी रीवा में गठित हुआ; जिसमें प्रधानमंत्री के रूप में कप्तान अवधेश प्रताप सिंह को और उप—प्रधानमंत्री के रूप में कामता प्रसाद सक्सेना को मनोनीत किया गया।





- किन्तु 19 जनवरी 1950 ई. को भारत सरकार ने विन्ध्यप्रदेश को केन्द्र शासित राज्य बनाकर 'वी.के.वी. पिल्लई' को चीफ कमिश्नर नियुक्त किया।
- 1952 ई. में सम्पूर्ण देश के साथ विन्ध्यप्रदेश में भी आम चुनाव हुए और 'पं. शंभूनाथ शुक्ल' विन्ध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री निर्वाचित हुए।
- बाद में 1 नवम्बर 1956 ई. को विन्ध्यप्रदेश को मध्यप्रदेश में विलय कर दिया गया।

प्रशासनिक व्यवस्था

❖ राजा –

- राजा वंशानुगत था, तथा वह कार्यकारी, न्यायिक एवं विधायी शक्तियों का केन्द्र था।
- वह अपने मंत्रियों एवं अधिकारियों को नियुक्त करने या हटाने का अधिकार रखता था।
- किन्तु सामान्यतः वह नीति निर्धारण एवं प्रशासन सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों में मंत्रियों से विचार-विमर्श करता था।

❖ राजसभा –

- राजा के सलाहकारों से राजसभा का निर्माण होता था, जिसके अंतर्गत निम्नलिखित पदाधिकारी आते थे –
 1. अमात्य – वित्त मंत्री
 2. सचिव – ग्रहमंत्री
 3. मंत्री – अन्य विभाग के प्रमुख
 4. राजवैध
 5. राजपुरोहित – धर्म सम्बन्धी अधिकार

❖ राजकीय कर्मचारी –

- वीरभानुउदय काव्यम् से दो राजकीय कर्मचारियों का उल्लेख मिलता है –
 नियोगी
 भूत्य → पुलिस सम्बन्धी अधिकारी

❖ सैन्य व्यवस्था –

- राज्य की सुरक्षा और उसके विस्तार के लिए बघेल राजाओं ने एक शक्तिशाली सेना का गठन किया था, जो प्राचीन सैन्य प्रणाली पर आधारित था।
- राज्य की सेना में पैदल, अश्वारोही और गजारोही सेना होती थी।
- रसद सामग्री तथा युद्ध सामग्री होने के लिए ऊँटों का भी दल होता था, उनमें अश्वारोही सेना का प्रमुख स्थान था।

अस्त्र-शस्त्र –

- ✓ मुख्य हथियार धनुष-बाण के साथ-साथ तलवार कला, बल्लम, फरसा आदि।
- ✓ बांधव राज्य में सैनिकों के साथ-साथ घोड़े व हाथियों को भी प्रशिक्षित किया जाता था।

दुर्ग –

- ✓ मध्यकाल में दुर्गों का बहुत महत्व था, इनसे कई उद्देश्यों की पूर्ति होती, प्रथम – राजपरिवार और सेना के निवास हेतु तथा धन की सुरक्षा एवं खाद्यान्न व शस्त्र-अस्त्र के संग्रहण हेतु किया जाता था।

❖ गुप्तचर व्यवस्था –

- बघेल राज्य में दो प्रकार के गुप्तचर थे –
 1. आंतरिक गुप्तचर
 2. बाह्य गुप्तचर



❖ न्याय एवं दण्ड व्यवस्था

- बघेल शासक न्यायप्रिय थे तथा वे विधिवेत्ताओं के सहयोग से वादी-प्रतिवादी दोनों की बात सुनकर न्याय करते थे।
- रिश्वत लेने वाले अधिकारियों को पदच्युत करके उनकी सम्पत्ति राजसात कर ली जाती थी।
- इसी तरह अन्यायी तथा उददण्ड सामन्तों की भूमि एवं धन छीनकर उन्हें उनके इलाके से बेदखल कर दिया जाता था, छोटे-मोटे अपराधियों पर भी जुर्माना निश्चित किया जाता था।
- लेकिन राज्य पर आक्रमण करने वाले को फाँसी दी जाती थी, ताकि दूसरे शत्रु इस राज्य पर आक्रमण न करे।

❖ ग्राम व्यवस्था –

- प्रत्येक गांव में एक चौकीदार होता था, जो बल्लम लेकर रात के समय सीठी बजाते हुए गाँव में गश्त लगाता था, ग्रामीण विवादों का निपटारा स्थानीय स्तर पर गठित किया जाता था।
- कुछ निम्न जातियों में जातीय पंचायत होती थी जिनके द्वारा जातीय विवादों का निर्णय किया जाता था।
- ग्रामीण स्तर पर दण्ड व्यवस्था के अंतर्गत सामान्य तौर पर अर्थदण्ड ही दिया जाता था।
- अंतिम अपील सीधे राजा के पास की जाती थी।

स्थापत्य

भूमिका –

- तेरहवीं शताब्दी में बघेल राज्य की नींव गहोरा में पड़ चुकी थी, परन्तु इस राज्य की कला- परम्परा का शुभारंभ राजा बुल्लारदेव के काल में हुआ –

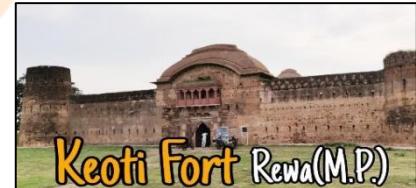
विशेषता –

- बघेली स्थापत्य में बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया था।
- बघेली स्थापत्य में मुगल तथा राजपूत कला स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है।

प्रमुख दुर्ग एवं गढ़िया –

केवटी दुर्ग –

- रीवा में महाना नदी तट पर स्थित
- दुर्ग की आधारशिला चन्देल शासक हमीरदेव ने रखी किन्तु इसका निर्माण कार्य बघेल शासकों ने पूरा कराया।



Keoti Fort Rewa(M.P.)

मैहर दुर्ग

- सतना
- निर्माता – बघेल शासक भैदचन्द्र
- इसमें मोती महल, हाथी महल आदि भवन स्थित हैं।



बांधवगढ़ दुर्ग

- उमरिया
- बांधव नामक पहाड़ी पर स्थित
- इसके मुख्य द्वार को कर्ण द्वार कहते हैं।



कालिन्जर दुर्ग –

- इसका निर्माता स्पष्ट नहीं है, किन्तु इस दुर्ग को बघेल राजा रामचन्द्रदेव ने शेरशाह के उत्तराधिकारियों के पतन के बाद में बिजली खां से खरीदा, कालान्तर में इसे अकबर द्वारा रामचन्द्रदेव से छीन लिया गया।
- इस महल में मोती महल, रंगमहल और जकीरा महल का निर्माण बघेलों ने कराया।





रीवा किला –

- बिछिया तथा बीहड़ नदियों के संगम पर स्थित
- इसकी नींव शेरशाह सूरी के छोटे पुत्र जलाल खां ने रखकर गढ़ी का निर्माण कराया, जिसे विक्रमजीत ने विस्तृत करा कर किला का रूप दिया।



सोहावल दुर्ग –

- इस किले का निर्माण 10 वीं शताब्दी में हुआ, बघेल राजा फतेह सिंह ने गोमांझियों से सोहावल के दुर्ग को छीना।
- इस किले का मुख्य द्वारा हाथी द्वारा कहलाता है।



अमरपाटन की गढ़ी – उमरिया

- इसका निर्माण बघेल राजा भावसिंह ने अपनी पत्नी रानी कुंज कुंवरि के निवास हेतु करवाया था।



माधवगढ़ का किला

- इस किले का निर्माण महाराजा विश्वनाथ सिंह (1833–1854 ई.) के अनुज रावेन्द्र लक्ष्मण सिंह ने करवाया था।
- यह किला सतना–रीवा मार्ग पर टमस नदी के तट पर स्थित है।
- इस किले में मुख्य तीन भवन हैं, जो बरुआ महल, दरियाई महल और आरवा महल के नाम से जाने जाते हैं।
- इसमें तीन आँगन और 100 कमरे हैं।
- इस किले की मुख्य विशेषता 'मटका' आकार की बनी छत है।
- इसके अतिरिक्त दरियाई महल की डॉटदार छतों की सुन्दर चित्रकारिता आज भी आकर्षण का केन्द्र बनी हुई हैं।



गोविन्दगढ़ का किला

- यह किला रीवा से दक्षिण में 12 मील दूरी पर स्थित है।
- इसका निर्माण 1855–56 ई. में महाराजा रघुराज सिंह ने करवाया था।
- इस किले के मुख्य भवनों में हवा महल, संगमरमर की बारहदरी, पंच मंदिर और सेतदीप हैं।
- पहले रघुराज सिंह ने यहाँ पर भगवान रमा गोविन्द का मंदिर बनवाया और इसी मंदिर के नाम से गोविन्दगढ़ नगर बसाया। गोविन्दगढ़ का पुराना नाम खान्धो था।
- रघुराज सिंह ने यहाँ पर एक विशाल तालाब का भी निर्माण करवाया: जिसका नाम 'विश्वनाथ सागर' रखा।
- विश्वनाथ सागर से लगा हुआ उन्होंने 'लेक पैलेस' नामक भव्य भवन बनवाया।
- किले के नज़दीक ही 'खखरी' नामक एक कोठी भी है, जिसमें रीवा–महाराजा विश्राम करते थे।





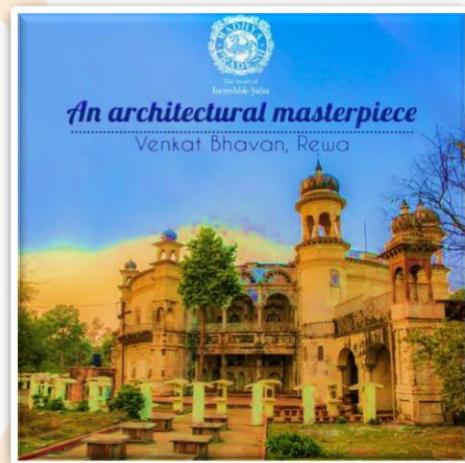
लक्ष्मण बाग के मंदिर

- लक्ष्मण बाग की स्थापना महाराजा विश्वनाथ सिंह ने 1841 ई. में करवायी थी; जहाँ रघुराज सिंह ने विभिन्न मंदिरों का निर्माण करवाकर चारोंधाम के देवताओं को प्रतिष्ठित करवाया था।
- इन मंदिरों में गोदा रंगनाथ जी का मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से बेजोड़ है। यह मंदिर एक कच्छप के ऊपर निर्मित है।
- यह स्थान रीवा में बिछिया नदी के तट पर स्थित है।
- इसकी स्थापना रघुराजसिंह के गुरु स्वामी मुकुन्द्राचार्य के निवास हेतु करवायी गयी थी। इसलिए यह 'रीवा राजाओं का गुरुद्वारा' भी कहलाता है।



व्यंकट भवन

- इस भवन का निर्माण महाराजा व्यंकटरमण सिंह ने 1908 ई. में करवाया था।
- यह भवन रीवा में कोठी कम्पाउण्ड के अन्दर स्थित है। पूरा भवन आधुनिक शैली से बना है।
- यह पत्थरों की मोटी दीवारों और मजबूत खम्भों पर आधारित है।
- इस भवन के नीचे लम्बी सुरंगें हैं, जिनमें प्रवेश करने के लिए भवन के बायें बुर्ज से घुमावदार सीढ़ियाँ निर्मित हैं।
- भवन के भूतल में एक वृत्ताकार वातानुकूलित हौज है; जो 'तोरण—ताल' कहलाता है।
- यह तोरण—ताल स्नानागार के रूप में उपयोग किया जाता था। इससे लगे हुए बारह दरवाजे हैं, जो वर्तमान में बन्द कर दिये गये हैं।
- अब यह भवन पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।



❖ चित्रकला

- बघेलखण्ड के नरेश चित्रकला के भी शौकीन थे। इसलिए इनके द्वारा चित्रकारों को प्रश्रय दिया जाता था।
- बघेलखण्ड में कई चित्रकार राजस्थान से आये थे। यहाँ के चित्रकारों में भरतशरण बावनी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।
- भरतशरण के पूर्वज चतुर्भुजी सिंह और उनके पुत्र गंगासिंह बावनी महाराजा विश्वनाथ सिंह के समकालीन थे।
- विश्वनाथ की इच्छानुसार उन्होंने 'भागवत' के आधार पर 54 चित्रों का चित्रांकन किया था।
- उन्होंने सोन महल में बाल्मीकी 'रामायण' के आधार पर भगवान राम के चरित्र से सम्बंधित भित्तीय चित्रों का भी अंकन किया था।
- चित्रकार गंगासिंह ने विश्वनाथ सिंह के चित्र, विशेषकर दशहरा दरबार और आखेट सम्बन्धी चित्रों को चित्रित किया था।
- रीवा के बादल महल में और अमरपाटन की गढ़ी में विश्वनाथ सिंह के सुन्दर भित्तीय चित्रों का अंकन किया गया है।
- महाराजा रघुराज सिंह के शासनकाल में रीवा के राधोमहल में विभिन्न चित्रों का अनुपम चित्रांकन किया गया।
- व्यंकटरमण सिंह के समय में सैन्य संचालन सम्बन्धी युद्धों को अधिकाधिक निर्मित करवाया गया।
- महाराजा गुलाब सिंह की बहन 'सुदर्शन कुमारी' को चित्रकला के प्रति विशेष अनुराग था। उन्होंने स्वयं अनेक चित्रों को चित्रित किया है। कई तैल चित्र भी निर्मित किये।





- ◆ इनके द्वारा निर्मित अधिकांश चित्र बीकानेर के पुराने किले में संग्रहीत हैं।
- ◆ यहाँ की चित्रकला पूर्णरूपेण राजपूत शैली से प्रभावित है, क्योंकि अधिकांश चित्रों का चित्रांकन राजस्थानी चित्रकारों द्वारा किया गया था।

❖ संगीत कला –

- ◆ संगीत के क्षेत्र में बघेलखण्ड का विशिष्ट स्थान था, यहाँ के शासक संगीत और गायन विद्या के बहुत शौकीन थे।
- ◆ बघेल शासक रामचन्द्र देव संगीत प्रेमी थे, साथ ही तानसेन जैसे महान संगीतज्ञ को संरक्षण दिया, जिसने बघेल दरबार में धृपद राग की रचना की।
- ◆ आधुनिक काल में संगीत के मनीषी मोहम्मद खाँ हुए; जो महाराजा विश्वनाथ सिंह के दरबारी गायक थे। ये धृपद शैली में गायन करते थे। इन्हें अनेक रागनियाँ सिद्ध थीं।
- ◆ उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, जिन्होंने बघेलखण्ड को दुबारा संगीत-संसार में प्रतिष्ठित किया। वास्तव में अलाउद्दीन खाँ की दृष्टि में संगीत-कला श्रद्धा का प्रतीक थी। वे धृपद गायन के ज्ञानी और सौ से अधिक वाद्यों के ज्ञाता थे।
- ◆ 1918 ई. में मैहर राज्य के राजा बृजनाथ सिंह (1918–47 ई.) ने इन्हें अपना गुरु बनाकर मैहर बुला लिया।
- ◆ 1918 ई. में उन्होंने मैहर में 'वाद्य वृन्द' की स्थापना करके संगीत के स्वर को बघेलखण्ड के साथ-साथ देश-विदेश में फेलाया।

❖ नृत्यकला –

- ◆ संगीत कला के साथ-साथ बघेलखण्ड के राजा और प्रजा दोनों ही नृत्यकला के भी शौकीन थे। क्योंकि जहाँ संगीत होता है, वहाँ नृत्य का होना स्वाभाविक है।
- ◆ बघेलखण्ड के प्रत्येक क्षेत्र में संगीत और नृत्य दोनों कलाओं का अद्भुत विकास हुआ, जिसमें विभिन्न लोक संगीत और लोक नृत्यों का भी विकास सम्मिलित है।
- ◆ यहाँ के राजा नृत्य प्रेमी भी थे, राजधानी में गणिकायें और रूपाजीवायें बसती थीं, जो सैनिकों का मनोरंजन भी करती थीं।
- ◆ यहाँ के मुख्य वाद्यों में ढोल, नागाड़ा और मंजीरा हैं।
- ◆ लोकगीतों में सोहर, विवाह गीत, ददरिया, होली गीत (फाग), देवार गीत, सुवागीत, बौसगीत इत्यादि हैं और लोक नृत्यों में करमा नृत्य, शैला नृत्य, सुवा नृत्य आदि हैं।
- ◆ शैला नृत्य पुरुषों द्वारा और सूवा नृत्य महिलाओं द्वारा किया जाता है। जबकि करमा नृत्य में स्त्री-पुरुष दोनों सहभागी होते हैं।

साहित्य

- बघेलखण्ड की साहित्य परम्परा राजा वीरसिंह देव से प्रारम्भ होती है। यह साहित्य प्रेमी था, इसी के दरबार में रामचन्द्र भट्ट ने संस्कृत में राधाचरित लिखा।
 - ✓ वीरभानु के दरबारी माधव ऊरव्य ने वीरभानुदाय काव्यम्
 - ✓ वीरभद्र ने संस्कृत के दो ग्रन्थ – कन्दर्पचूडामणि तथा दशकुमारपूर्वकथासार की रचना की।
 - ✓ पदमनाथ मिश्र – वीरभद्रदेव चम्पू
 - ✓ नीलकण्ठ शुक्ल – अमरेश विलास (राजा अमर सिंह)
 - ✓ रूपणि शर्मा – बघेलवंश वर्णनम् (भाव सिंह)
 - ✓ रघुराज सिंह – भक्तमाल
- जयसिंहदेव (1809–1833 ई.) विश्वनाथ सिंह (1833–1854 ई.) और रघुराज सिंह (1854–1880 ई.) जैसे नरेश साहित्यकार के रूप में मिलते हैं।
- जयसिंहदेव हिन्दी और संस्कृत दोनों के श्रेष्ठ विद्वान थे। इनका प्रकाशित ग्रन्थ 'हरिचरित-चन्द्रिका' है। इनकी रानी सुल्तान कुँवरि स्वयं गायन में दक्ष थीं; उन्होंने 'गीत गोविन्द' नामक भजनावली की रचना की थी।
- महाराजा विश्वनाथ सिंह की भी साहित्यिक सर्जना हिन्दी और संस्कृत दोनों क्षेत्रों में उपलब्ध है। इन्होंने 18 ग्रन्थों की रचना की थी; जिसमें 'आनन्द रघुनन्दन' नाटक, 'ध्रुवाष्टक' और 'कवीर बीजक' प्रमुख हैं।





- इनके दरबार में कवि माथुरि चतुर्वेदी तुलाराम के पुत्र गंगाराम ने 'संगीत रत्नाकर की टीका' हिन्दी में की है।
- विश्वनाथ सिंह के दोनों अनुज रावेन्द्र लक्ष्मण सिंह और रावेन्द्र बलभद्र सिंह का भी साहित्यिक क्षेत्र में योगदान रहा है।
- लक्ष्मण सिंह का हिन्दी ग्रन्थ 'कृष्णायन' और बलभद्र सिंह के चार संस्कृत ग्रन्थ यथा— 'वृत्तिबोध', 'लोचन ग्रन्थ', 'कृष्ण विवरण' और 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' रीवा किले के सरस्वती कोष भण्डार में सुरक्षित हैं।
- विश्वनाथ सिंह की महारानियों एवं उनकी दोनों पुत्रियों का भी साहित्य सर्जना में पर्याप्त योगदान रहा है।
- इनकी महारानी सुभद्र कुँवरि ने 'चन्द्रकथा' नामक काव्य खण्ड की रचना की और महारानी निधान कुँवरि ने उर्दू में श्रीकृष्ण की जीवनी पर लेखनी चलायी थीं। निधान कुँवरि को उर्दू और फारसी का अच्छा ज्ञान था।
- महाराजा रघुराज सिंह ने भी अपने पिता की भाँति हिन्दी और संस्कृत दोनों भाषाओं में साहित्य—सर्जन किया। ये आशुकवि भी थे। इन्होंने 28 ग्रन्थों की रचना की है; जिसमें 'भक्तमाल', 'रामस्वयम्बर', 'आनन्दाम्बुनिधि', 'जगदीश शतक', 'रघुराज विलास' और 'रुक्मणी परिणय' प्रमुख हैं।
- रघुराज सिंह की महारानियाँ भी विदुषी थीं; उनमें लक्ष्मी प्रसादकुँवरि ने 'भजनावली' शिवदान कुँवरि ने 'सिया स्वयंवर', धर्मराज, कुँवरि ने 'बघेली लोकगीतों और करमन कुँवरि ने गुजराती भाषा में काव्य रचना की थीं। उनकी मुख्य रचनाओं में 'कीर्तिअमल', 'कीर्तिसुधा', 'कीर्तिलता', 'कीर्तिमाधुरी' उल्लेखनीय हैं।
- इनकी अधिकांश रचनाएँ कृष्ण भक्ति पर आधारित हैं। ये बघेलखण्ड की पहली महिला उर्दू रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुईं।
- गुलाब सिंह की बहन सुदर्शन कुमारी का नाम आता है, जिन्होंने हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में अनेक गज़लें लिखीं।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि बघेल नरेशों का साहित्य से अटूट संबंध रहा, इनके नेतृत्व में बघेलखण्ड का संगीत और साहित्य उन्नति की प्राकृत्य पर पहुंच गया था।



4

सिंधिया / शिंदे वंश



- मूल निवास – कान्हेरखेड़ा (सतारा) महाराष्ट्र
- कान्हेरखेड़ा के पाटिल
- प्रारंभ में शिंदे बहमनी सल्तनत में शिलदार (घुड़सवार) के रूप में काम किया करते थे।
- शिंदेवंश को शिंदेशाही के नाम से भी जाना जाता था।

❖ राणोजी सिंधिया (1726–1745 ई.)

- सिंधिया वंश का संस्थापक
- पिता – जनको जी सिंधिया।

मराठा सेना में सेवाएँ

- राणोजी शिंदे ने मराठा सेना में अपनी सेवाएँ पेशवा बालाजी विश्वनाथ के समय से देनी शुरू की।
- शीघ्र ही इन्हें बाजीराव – I के निजी, सेवक बना दिया गया।
- बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के पश्चात अगला पेशवा बाजीराव – I बना, जिसका विरोध दरबार के वरिष्ठ लोगों ने किया।
- परिणामस्वरूप बाजीराव – I ने उन युवाओं को पदोन्नत किया, जो कभी भी दक्कन में पहले शासकों के अधीन वंशानुगत देशमुखी अधिकार नहीं रखते थे, इनमें प्रमुख थे— राणोजी, मल्हारराव होल्कर, पवार बंधु आदि शामिल थे।
- उन्होंने 1731 में पेशवा बाजीराव द्वारा संचालित दिल्ली–कूच अभियान में भी भाग लिया।



मालवा के प्रभारी

- 1728 में 'अमझेरा के युद्ध' में राणोजी ने असीम पराक्रम दिखाया, जिससे प्रसन्न होकर पेशवा ने मालवा का प्रभारी बनाया।

राजधानी

- 1731 में राणोजी ने 'उज्जैन' को राजधानी बनाया जो 1801 तक सिंधियाओं की राजधानी रही।

उत्तर भारत की आय

- 1766 में उत्तर भारत की आय के बैंटवारे से पेशवा सरकार को 46% तथा होल्करों एवं सिंधिया को 21% भाग प्राप्त होता था।

→ इनकी मृत्यु शाजापुर में हो गयी।

❖ जयप्पाराजे सिंधिया (1745–1755 ई.)

- पेशवा ने उत्तराधिकार को मान्यता दी और उन्हें अपने पिता की जागीर और सरंजम (वफादारी सुनिश्चित करने के लिए एक राजनीतिक उपाय) प्रदान किया।
- उन्होंने राजस्व प्रणाली में सुधार के प्रयास किए।
- वह मराठा शासन के तहत एक शक्तिशाली शासक बन गया परन्तु ईर्ष्या के कारण नागौर के राजा विजय सिंह ने 1755 ईस्वी में उसकी हत्या कर दी।

❖ दत्ताजी सिंधिया (1755–1760 ई.)

नागौर पर आक्रमण

- भाई की हत्या के प्रतिशोध में, उसने नागौर पर आक्रमण किया और विजय सिंह को हराया। उसने उसे अपमानजनक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया और आगरा और अजमेर के कुछ हिस्सों को उससे जीत लिया।

नजीब खान पर आक्रमण

- वह बंगाल पर आक्रमण करना चाहता था और उसने नजीब खान से मदद मांगी, जिस पर उसने दत्ताजी की मदद करने से इनकार कर दिया। दत्ताजी ने उस पर हमला कर दिया।



- 9 जनवरी 1760 को दत्ताजी को 'शुक्रताल के युद्ध' में हार का सामना करना पड़ा और उनकी मृत्यु हो गई।

❖ जानकोजी सिंधिया (1760–1761 ई.)

- वह जयप्पाराजे सिंधिया के सबसे बड़े पुत्र थे।
- उन्होंने अहमद शाह अब्दाली के खिलाफ 'पानीपत के तीसरे युद्ध' में भाग लिया।
- उन्हें बंदी बना लिया गया और बाद में 6 जनवरी 1761 ई. को उनकी हत्या कर दी गई।

❖ महादजी सिंधिया (1761–1794)

- 1761 में पानीपत के तृतीय युद्ध के पश्चात राणोजी सिंधिया के जीवित पुत्रों में मात्र महादजी सिंधिया ही जीवित बचे।

ग्वालियर दुर्ग की प्राप्ति

- पानीपत के तृतीय युद्ध से लौटते ही, 1765 ई. में सिंधिया ने ग्वालियर का किला लोकेन्द्र सिंह जाट से छीन लिया।



सैन्य सुधार

- इसने अपनी सेना पश्चिमी ढंग से तैयार करने हेतु, फ्रेंच सैनिक डीबोयन को नियुक्त किया।

शाहआलम –II की ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्ति

- महादजी सिंधिया ने मुगल सम्राट शाहआलम –II को ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्त करा इलाहाबाद से लाकर दिल्ली की गद्दी पर आसीन किया।
- जिससे प्रसन्न होकर शाहआलम –II ने महादजी सिंधिया को वकील-उल-मुतलक तथा अमीर-उल-उमरा की उपाधि दी।

बारह-भाई परिषद के सदस्य

- महादजी सिंधिया माधवनारायण राव के संरक्षण हेतु बनी बारह-भाई परिषद के भी सदस्य रहे।

सालबाई की संधि (1782)

- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध के पश्चात सालबाई की संधि (1782) में मध्यस्थता की।
- इसी सालबाई की संधि के अनुसार महादजी सिंधिया को स्वतंत्र शासक मान लिया गया तथा यमुना के पश्चिम क्षेत्र सिंधियाओं के तथा यमुना के दक्षिणी क्षेत्र पेशवा को दे दिये।

दुर्गनी की सेना पर विजय

- अफगानिस्तान शासक तैमूर शाह दुर्गनी की सेना को पराजित कर सोमनाथ मंदिर के तीन चांदी के दरवाजे वापस ले लिए जो उज्जैन के महाकालेश्वर और गोपाल मंदिर में लगे हुए हैं।

शाह-आलम –II की सहायता

- महादजी ने 1786 में गुलाम कादिर के नेतृत्व से रोहिल्ला सेना को हराकर शाह-आलम –II को पुनः सत्ता पर स्थापित किया।

राजस्थान का अभियान

- महादजी के राजस्थान के अभियान में अहिल्याबाई द्वारा सेना व सैन्य सामग्री के द्वारा महादजी को सहयोग किया गया था।
- अहिल्याबाई द्वारा नाना फडनवीस को भी आग्रह किया गया कि वह तुकोजी होल्कर को महादजी के सहयोग हेतु राजस्थान भिजवाए।
- जुलाई 1788 में तुकोजी होल्कर तथा अक्टूबर 1788 में अलीबहादुर, राजस्थान में महादजी के सहायतार्थ पहुँचे।

उत्तर में स्थिति

- महादजी द्वारा उत्तर में स्थिति सुदृढ़ कर ली गई तथा गुलाम कादिर को नियंत्रित किया गया किन्तु, उसने शिकायत दर्ज कराई थी कि नाना फडनवीस द्वारा तुकोजी होल्कर को अधिक तवज्जो दी जाती है।
- महादजी शिंदे को असीरगढ़ दिये जाने की सूचना मिलने पर, तुकोजी और महादजी के मध्य मतभेद बढ़ गए।



लखेरी का युद्ध

- जब हैदराली के विरुद्ध अभियान में जाने हेतु पुणे दरबार से आदेश हुआ तो तुकोजी द्वारा शर्त रखी गई कि महादजी शिंदे यदि कर्नाटक में जाता है तभी वह भी हैदराली के विरुद्ध जाएगा। इस कारण तुकोजी व नाना फड़नवीस के मध्य वैमनस्य बढ़ा।
- महादजी सिंधिया ने मई/जून 1793 ई. में 'लखेरी के युद्ध' में अहिल्याबाई होल्कर के सेनापति 'तुकोजीराव होल्कर' को हराया।
- 1793 ई. में लखेरी के युद्ध में दोनों के मतभेद इतने बढ़ गये कि तुकोजी की युद्ध क्षेत्र से वापसी करने पर स्वयं अहिल्याबाई होल्कर द्वारा उसे चेतावनी दी गई थी।
- दोनों पक्षों में सुलह के समाचार प्राप्ति पर वह संतुष्ट हो सकी थी परन्तु यह अस्थायी सुलह थी।
- नाना फड़नवीस द्वारा अलीबहादुर को मध्यस्थता हेतु बुंदेलखण्ड भेजा गया किन्तु महादजी की शिकायतें यथावत् रही।

उत्तराधिकारी

- महादजी के कोई पुत्र नहीं था, केवल एक ही पुत्री थी, जिसका नाम बाला था।
- बाद में महादजी ने आनन्द राव के पुत्र दौलत राव को गोद लेकर उसे सिंधिया राजवंश का अगला महाराज घोषित किया।

❖ दौलतराव सिंधिया (1794–1827)

- पिता – आनन्द राव
- स्लीमेन – 'दौलतराव, महादजी सिंधिया का अयोग्य उत्तराधिकारी साबित हुआ।'

कुदरला की लड़ाई

- उन्होंने हैदराबाद के निजाम से चौथ प्राप्त करने के लिए कुदरला की लड़ाई लड़ी। यह उनका पहला युद्ध था। उसने 12 मार्च 1794 में निजाम की सेना को हराया।



लासवाड़ी का युद्ध

- शिंदे द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध 15 अनुशासित दल नर्मदा पार भिजवाये थे।
- अम्बाजी इंगले (जो मालवा क्षेत्र व आगरा क्षेत्र हेतु शिंदे का प्रतिनिधि सुबेदार था) को सेना दायित्व दिया गया।
- जनरल लेक द्वारा भरतपुर से 22 मील दूर लासवाड़ी में इंगले की सेना को पराजित किया।
- शिंदे की 71 तोपें अंग्रेजों के द्वारा जप्त की गई।

द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध एवं सुर्जीअर्जन गाँव की संधि

- 1803 में द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध के पश्चात लोर्ड बेलेज़ली के साथ 'सुर्जीअर्जन गाँव की संधि' की।

सुर्जी अर्जुनगाँव की संधि -1803 ई.

- 30 दिसंबर 1803 ई. को उक्त संधि सम्पन्न हुई।
- अंग्रेजों की तरफ से ऑर्थर बेलेज़ली व शिंदे की ओर से अंतु महादेव, मुसीफ, कंवलजीत, यशवंतराव गुणपरख व नारे हरि ने हस्ताक्षर किये थे।
- संधि की पुष्टि, गर्वनर जनरल बेलेज़ली ने इसे 13 फरवरी 1804 को स्वीकार कर लिया।

प्रमुख प्रावधान

- शिंदे शासक के यमुना नदी पर स्थित दिल्ली का क्षेत्र, गंगा–यमुना के मध्य दोआब, बुंदेलखण्ड के कुछ क्षेत्र व जोधपुर तथा गोहद के उत्तर के प्रदेश, दुर्ग व वहाँ के अधिकारों को अंग्रेजों के हित में त्याग देगा।
- गुजरात में भड़ौच, गुजरात के कुछ क्षेत्र तथा दक्षिण में अहमदनगर का दुर्ग व जिला व उससे जुड़े हुए क्षेत्र अंग्रेजों को देगा।
- गोदावरी नदी के पास तथा अजंता की पहाड़ियों के मध्य का क्षेत्र तथा जालनापुर व गाणगापुर क्षेत्र पर अधिकार का त्याग कर देगा।
- शिंदे (सिंधिया) पेशवा, गायकवाड व निजाम व मुगल सम्राट पर से सारे अधिकार त्याग देगा।





5. असीरगढ़ का दुर्ग, बुरहानपुर का नगर चांदवड, घोड़न, जातना दासलगाँव, पावागढ़ तथा दोहद के दुर्ग शिंदे राज्य को लौटाये गये।
6. शिंदे के निवेदन पर मान लिया धौलपुर, बारी, व राजा कुँआ का क्षेत्र शिंदे के पास रहेगा व महाराणी बायजाबाई की जागीर व कुछ अन्य अधीनस्थों की जागीरें भी बहाल की जाएंगी जिसमें कमलनयन आदि थे।
7. पेशवा द्वारा शिंदे को दिये गये कुछ गाँव उसे लौटा दिये जायेंगे जैसे – जामगाँव, रोजणगाँव, उमर व पैठन, नेवाई के प्रदेश उसकी अपील पर उसे लौटा दिये जायेंगे।
8. विभिन्न राजाओं या शासकों से की गई संधियों को शिंदे स्वीकार करेगा मान ली गई।
9. शिंदे के राज्य में अंग्रेज सेना की शर्त को शिंदे ने स्वीकार नहीं किया। परंतु एक अंग्रेज रेजीडेंट 'जॉन मैल्कम' उसके राज्य में अंग्रेज रेजीडेंट के रूप में रखना स्वीकार किया।
- **बुरहानपुर की संधि** – 17 फरवरी 1804 ई. की संधि के अनुसार एक सेना शिंदे के राज्य की सीमा के समीप क्षेत्र में रखने का वचन दिया गया यद्यपि यह भी कहा गया कि वे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

सुल्तानपुर की संधि -1805 ई.

- जॉन बार्लो ने गर्वनर जनरल का पद संभाला। उसने दौलतराव शिंदे के साथ 'सुल्तानपुर की संधि' की।
- संधि पर अंग्रेज कम्पनी की ओर से लेप्टिनेंट जनरल जॉन मैलकम व शिंदे की ओर से कमल नयन ने 22 सितंबर, 1805 ई. को हस्ताक्षर किये थे।

प्रमुख प्रावधान

1. चंबल नदी, शिंदे अंग्रेज प्रदेशों की सीमा मान ली गई। चंबल के उत्तरी प्रदेशों पर शिंदे ने अधिकार त्याग दिये।
2. अंग्रेज जयपुर, जोधपुर, कोटा, मेवात व मालवा के किसी नरेश से संधि नहीं करेंगे जो शिंदे द्वारा उनसे पूर्व में की जा चुकी है।
3. गोहद व ग्वालियर दुर्ग अंग्रेजों द्वारा शिंदे को वापस लौटा दिये गये।
4. चंबल तथा ताप्ति नदियों के मध्य शिंदे द्वारा लिये गये होल्कर प्रदेशों के मामले में अंग्रेज हस्तक्षेप नहीं करेंगे।
5. शिंदे द्वारा सुरजी अर्जुन गाँव की संधि की धाराओं की पुष्टि की गई। संधि पर हस्ताक्षर के दौर में शिंदे को दिये जाने वाले 15 लाख रुपयों के बकाया राशि अंग्रेज देंगे।

राजधानी परिवर्तन

- 1810 में इसने अपनी राजधानी उज्जैन से 'ग्वालियर' स्थानान्तरित कर ली।
- **तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध** एवं ग्वालियर की संधि
- 1817 में दौलतराव सिंधिया ने तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के पश्चात हेस्टिंग्स से 'ग्वालियर की संधि' कर ली, जो एक सहायक संधि थी। इसके माध्यम से पिण्डारियों का दमन किया।

ग्वालियर की संधि - 1817 ई.

- दौलतराव, मराठा शासकों में सर्वाधिक शक्तिशाली था। उस पर नियत्रण हेतु अंग्रेजों ने उससे हंडिया व असीरगढ़ की माँग की। राजपूत राज्यों पर से दावे समाप्त करने को कहा। उस पर पिण्डारियों को आश्रय देने का आरोप लगाया गया। अंग्रेज कंपनी की सेना, शिंदे की राजधानी ग्वालियर के समीप पहुँच गई।
- 3 नवंबर 1817 ई. को असमंजस में दौलतराव शिंदे द्वारा संधि की गई। 5 नवंबर 1817 ई. को यह संधि हस्ताक्षरित हुई।
- इस संधि पर केप्टन क्लोज व महाराजा शिंदे की ओर से रामचंद्र भास्कर के हस्ताक्षर सम्पन्न हुए थे।

प्रमुख प्रावधान

1. सभी पक्ष अंग्रेज, शिंदे सरकार व उनके मित्र पिण्डारियों को घेरकर उनका दमन करेंगे।
2. पिण्डारी, ग्वालियर महाराजा या पड़ोसियों के राज्यों में बस गये हैं, उन्हें भी दोनों पक्ष निकाल बाहर करेंगे। जिन राज्यों में उन्होंने जमीनें हथियाई हैं, वह भी मालिकों को लौटाई जाएँगी।
3. महाराजा दौलतराव इन पिण्डारियों को भविष्य में कभी आश्रय नहीं देगा।
4. महाराजा को छ: हजार अश्वारेहियों की सेना रखने की अनुमति दी गई। यह सेना व अपने संसाधनों पर उसका अधिकार रहेगा।
5. महाराजा की सेना के पैदल, घुड़सवार, तोपखाना किसी युद्ध के समय अंग्रेजों के निर्देशों के अनुसार ही चलेंगे।





6. मित्रता के नाते हंडिया व असीरगढ़ के दुर्गों में अंग्रेजों की फौज रहेगी।
7. सूर्जी अर्जुनगाँव की संधि की धाराओं पर इस संधि का कोई प्रभाव नहीं रहेगा।

साहित्य संरक्षण

- इनके दरबार में कवि पदमाकर ने 'अलीजाह प्रकाश' की रचना की।

निर्माण कार्य

- 1810 में, उन्होंने 'लश्कर शहर' (ग्वालियर) की स्थापना की।
- ग्वालियर में 'फूलबाग' बनवाया।

❖ बायजाबाई/बैजा बाई शिंदे (1784–1863)

- पति – दौलतराव सिंधिया

अस्साय का युद्ध

- यह 23 सितंबर 1803 को मराठा साम्राज्य और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच लड़ी गई दूसरी एंग्लो-मराठा युद्ध की एक प्रमुख लड़ाई थी।
- अस्साय के युद्ध में आर्थर बेलेजली को हराया।



चारित्रिक गुण

- **कुशल योद्धा** – उन्हें एक बेहतरीन घुड़सवार के रूप में जाना जाता था और उन्हें तलवार और भाले से लड़ने का प्रशिक्षण दिया गया था।
- **साहसी** एवं **नेतृत्वकर्ता** – वह अंग्रेजों के साथ मराठा युद्धों के दौरान अपने पति के साथ थीं और उन्होंने अस्साय के युद्ध में आर्थर बेलेजली को हराया।
- **राजनितिज्ञ** – पिंडारियों के खिलाफ ब्रिटिश अभियान के दौरान, उन्होंने अपने पति से पेशवा बाजी राव द्वितीय का समर्थन करने का आग्रह किया था।
- **मातृभूमि प्रेम** – बायजाबाई 1857 की क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्याटोपे की सहायता करती रहीं।
- **राज्यहितैषी** – जब दौलत राव ने अंग्रेजों की मांगों को मान लिया, तो उन्होंने उन पर कायरता का आरोप लगाते हुए कुछ समय के लिए उन्हें छोड़ भी दिया। वह अजमेर को अंग्रेजों के हवाले करने के भी सिंधिया के सख्त खिलाफ थीं।
- **प्रशासन संचालक/महत्वाकांक्षी** – जनकोजी के रेजीडेन्ट के रूप में बायजाबाई (1827–1833 ई.) ने सारे प्रशासनिक अधिकार अपने हाथों में ले लिए।
- **जनहितैषी** – बायजाबाई ने "मक्ता" पद्धति पर भी अंकुश लगाया गया, जिसके तहत ताकतवर लोग जनता से "मक्ता" अवैध रूप से वसूलते थे।

सैन्य सुधार

- कर्नल अबेक नामक एक आर्मीनियन जो दौलतराव शिंदे की सेवा में था, की सेना के संगठन हेतु सेवायें ली गईं।
- कर्नल जॉन बैटिस फिलोज एक फ्रांसीसी सेनापति "जॉन बत्तीस" ने भी शिंदे प्रशासन की सैन्य व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ठगों का दमन

- ग्वालियर राज्य में पदस्थ कर्नल स्टीमन व कर्नल मैकलोड को बायजाबाई द्वारा 'ठगों के दमन' हेतु सहायता दी गई।

निर्माण कार्य

- वेनी माधव मंदिर (1833 – प्रयागराज), सिंधिया घाट (1830 – वाराणसी) का निर्माण करवाया।
- 'विश्वनाथ मन्दिर' का जीर्णोद्धार अहिल्याबाई ने करवाया, जबकि इस मन्दिर में एक 'ज्ञानवापी मण्डप' का निर्माण बैजाबाई द्वारा करवाया गया। इसके चारों ओर एक कालोनी का भी निर्माण करवाया था।
- उज्जैन के द्वारिकाधीश 'गोपाल मंदिर' का निर्माण 19 वीं शताब्दी में रानी बैजाबाई ने करवाया था। गोपाल मंदिर में बैजाबाई की प्रतिमा विराजमान है।
- महारानी बैजाबाई ने शिवपुरी छतरी में राम-सीता एवं राधाकृष्ण मंदिर, भद्रैयाकुण्ड, शिवपुरी में गोमुख एवं बारादरी का निर्माण कराया था।



- ग्वालियर का बैजाताल भी बैजाबाई के नाम से बनाया गया था।

दौलतराव सिंधिया का उत्तराधिकारी

- दौलतराव सिंधिया की मृत्यु के पश्चात उनका कोई पुत्र न होने के कारण जनकोजी को उत्तराधिकारी चुना गया तथा दौलतराव सिंधिया की पत्नी बायजाबाई को उनकी रेजीडेन्ट घोषित किया गया।

1857 की क्रांति में शामिल

- शासन चले जाने के पश्चात भी बायजाबाई 1857 में रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्याटोपे की सहायता करती रही।
- रानी के इशारे पर ग्वालियर के शाही खजाने से सेना को 5-5 महीने की पगार और रसद आपूर्ति कर आर्थिक सहायता की गई जिससे विद्रोही सेना में स्फूर्ति का संचार हुआ।
- तात्या टोपे ने उनके साथ एक पत्राचार किया, जिसमें उसे ग्वालियर के शासन को संभालने का आग्रह किया गया था।

❖ जनकोजी सिंधिया (1827-1843 ई.)

- जनकोजी, बायजाबाई के नियंत्रण से मुक्ति प्राप्त करने के लिए अंग्रेज रेसीडेन्सी चले गये।

रीजेंट ताराबाई

- जनकोजी के मामा कृष्णराव को अंग्रेज शासन की स्वीकृति से रीजेंट बनाया गया। यद्यपि सरदार खासगीवाले राज्य के दीवान व महारानी ताराबाई रीजेंट बनाई गई। (1843)
- खासगीवाले एवं ताराबाई गुट ने अंग्रेजों का विरोध करना प्रारंभ किया परन्तु अंततः अंग्रेजों ने उनसे संधि कर विरोध को दबा दिया।

शिन्दे राज्य व आंग्ल शासन की संधि – जनवरी 1844 ई.

- पूर्व में की गई सभी संधियों की धाराएँ जस की तस मान्य होंगी।
- सैन्य व्यय पर 18 लाख रुपये से अधिक व्यय होगा तो दिये गये क्षेत्रों की आय के बावजूद इस अतिरिक्त व्यय का भार ग्वालियर का शासक उठायेगा।
- इन क्षेत्रों से व्यवस्थित आय प्राप्ति हेतु इन क्षेत्रों का प्रशासन भी कम्पनी के द्वारा देखा जायेगा।
- शासक जियाजीराव शिन्दे 19 मार्च 1853 ई. को 18 वर्ष पूर्ण कर वयस्क बन जाने पर भी पूर्व में नियुक्त रिजेंसी मण्डल की सलाह मानेंगे व यह सलाहकार भी ब्रिटिश रेजीडेंट की सलाह पर ही प्रशासकीय निर्णय की सलाह देंगे।
- राजामाता ताराबाई को 3 लाख रुपये पेंशन निश्चित की गई।

❖ जयाजीराव सिंधिया (1843-1886)

- जनकोजी राव सिंधिया की मृत्यु के बाद जयाजीराव सिंधिया शासक बना, इसका मूल नाम भागीरथ राव था।

1857 की क्रांति एवं सिंधिया रियासत

- 1857 के सैनिक विद्रोह के समय जयाजीराव सिंधिया ग्वालियर के शासक थे, महारानी लक्ष्मीबाई ने जयाजीराव सिंधिया से आग्रह किया कि वह भी 1857 की क्रांति में क्रांतिकारियों का साथ दे, किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया।
- किन्तु ग्वालियर सैना विद्रोहियों में शामिल होना चाहती थी, अतः सम्पूर्ण सैना ने लक्ष्मीबाई तात्या टोपे एवं नाना साहब का समर्थन किया। इन्हें बायजा बाई ने भी सहायता प्रदान की।
- महाराजा के दो सलाहकार सर दिनकर राव (राजवाड़े) व रेजीडेंट चालर्स मैकफरसन ने जयाजीराव को सलाह दी कि विजय अंग्रेजों की होगी।



अमरचंद वांठिया

- 1857 की क्रांति में जयाजीराव सिंधिया के खजानची वांठिया ने लक्ष्मी बाई के लिए खजाने के द्वारा खोल दिये गये।
- परिणामस्वरूप 'अमरचंद वांठिया' को सराफा बाजार में नीम के पेड़ से फांसी दे दी गयी।

मुरार छावनी में विद्रोह

- ग्वालियर छावनी में विद्रोह मुरार की सैनिक छावनी में विद्रोह होने से रेजीडेंट को स्वयं – आगरा भाग जाना पड़ा।



- तात्या टोपे व रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर अधिकार करने की योजना बनाई थीं, महाराजा जयाजीराव से आग्रह किया गया कि वह भी उनका सहयोग करें।
- जयाजीराव अंग्रेजों के पंजों में जकड़े होने से साहस नहीं दिखा सके।

शासक का आगरा पलायन

- ग्वालियर सेना में मात्र सुरक्षा गार्डों को छोड़ सेना का प्रत्येक सिपाही स्वतंत्रता प्रेमी सेना से जा मिला।
- स्थिति को भाँपकर असुरक्षा के भय से सर दिनकरराव व जयाजीराव आगरा चले गये।

ग्वालियर पर अधिकार

- स्वयं तात्या टोपे, नाना साहेब पेशवा, रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर पर अधिकार कर चुके थे।

हुरोज का आक्रमण व रानी की शहादत

- हुरोज ने ग्वालियर पर आक्रमण किये। नाना साहेब व तात्याटोपे निकल चुके थे। रानी ग्वालियर दुर्ग की दीवार से छलांग लगाकर कालपी – ग्वालियर की ओर गई।
- अंततः 18 जून, 1858 को युद्ध के मैदान में रक्त की अंतिम बूंद तक लड़ते हुए रानी लक्ष्मीबाई की शहादत हो गई।

पुनः ग्वालियर का शासक बनना

- 20 जून को हुरोज व मैकफरसन की सुरक्षा में शासक – जयाजीराव पुनः ग्वालियर का शासक बनाया गया।
- सेना को सीमित कर दिया गया एवं ग्वालियर रियासत के अनेक क्षेत्र अंग्रेजों के आधिपत्य में चले गए।

❖ रेलवे क्षेत्र में योगदान

- ✓ 1872 में आगरा – ग्वालियर रेलवे लाइन के लिए ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे को 75 लाख रुपये प्रदान किए।
- ✓ 1873 में इंदौर नीमच लाइन के लिए राजपूताना– मालवा रेलवे को भी इतने ही रुपए प्रदान किए।

❖ भवन निर्माता

- ✓ इन्होंने ग्वालियर में मोती महल, जय विलास पैलेस, कंपू कोठरी, विकटोरिया भवन, गोरखी द्वार, डफरिन सराय, कमलाराजा भवन तथा उज्जैन में विकटोरिया महाविद्यालय का निर्माण कराया।

❖ पुनर्निर्माण

- ✓ इन्होंने कोटेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण कर पूरे राज्य में 69 शिव मंदिरों का निर्माण करवाया।
- ✓ ग्वालियर किले की दीवार, मान मंदिर गुजरी महल और जौहर कुण्ड के पुनर्निर्माण के लिए 15 लाख रुपए दिये।

❖ माधवराव सिंधिया (1886–1925)

- अंग्रेजों द्वारा 'सर' की उपाधि दी गई थी।
- माधवराव सिंधिया में शिवपुरी को अपनी ग्रीष्म कालीन राजधानी बनाया था।



निर्माण कार्य

- इन्होंने शिवपुरी में माधव विलास पैलेस ग्राउंड होटल, जॉर्ज कैसल भवन सेलिंग क्लब आदि का निर्माण कराया।

अन्य प्रमुख कार्य

- ग्वालियर, उज्जैन जैसे क्षेत्रों में महाविद्यालयों, अस्पतालों की स्थापना की।
- ग्वालियर मेले का प्रारंभ - 1905 में इस मेले की शुरुआत पशुओं के व्यापार के लिए सिंधिया राजघराने ने की थी। अब यह एशिया का सबसे बड़ा व्यापार मेला बन गया है।
- तानसेन समारोह का प्रारंभ - 1924-25 में तत्कालीन ग्वालियर शासक माधवराव के समय ग्वालियर में 'तानसेन समारोह' प्रारंभ करवाया।

❖ जीवाजीराव सिंधिया (1925–1961 ई.)

- अंतिम सिंधिया शासक
- भारत में विलय
- 23 जनवरी 1948 में जीवाजीराव ने ग्वालियर रियासत को भारत में विलय कर दिया।





- स्वतंत्रता के समय जीवाजीराव को मध्य भारत का राज प्रमुख बनाया गया।

काउंसिल ऑफ रिजेंसी

- जीवाजीराव सिंधिया की अल्पआयु के कारण उनकी माँ चिन्कूराजे सिंधिया की अध्यक्षता में काउंसिल ऑफ रिजेंसी ऐजेंसी का गठन किया गया।

विवाह

- इनका विवाह राजपूत कन्या 'लेखा दिव्येरी' से हुआ। जो सागर से संबंधित थी। कालांतर में इन्होंने 'विजयराजे' के नाम से जाना गया।

❖ शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

- ✓ कमलाराजा महाविद्यालय तथा विक्टोरिया कॉलेज की स्थापना।
- ✓ MITS इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना।

❖ प्रशासन के क्षेत्र में योगदान

- ✓ भारत सरकार को 54 करोड़ रुपये की राशि दी।

❖ निर्माण

- ✓ जयारोग्य अस्पताल, कमलाराजा महिला अस्पताल, मोती महल, जलविहार महल आदि का निर्माण कराया।

सिंधिया स्थापत्य

सिंधिया राजवंश की छतरियाँ

- अपनी वास्तुशिल्प प्रतिभा और सुंदर संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध, छतरियाँ एक सुंदर बगीचे में स्थित हैं।
- छतरी बाजार में स्थित, सिंधिया राजवंश की छतरियाँ ग्वालियर शहर के प्रमुख आकर्षणों में से एक हैं।
- ग्वालियर, उज्जैन, शिवपुरी में शिन्दे शासकों की छतरियाँ पाई गई हैं। इनमें छतरीबाग, ग्वालियर व शिवपुरी की छतरियाँ अपने स्थापत्य वैभव में बेजोड़ हैं।
- पहली छतरी 1817 ई. में जयाजी राव सिंधिया की स्मृति में बनाई गई थी।
- जीवाजी राव सिंधिया, दौलत राव सिंधिया और जनको जी राव सिंधिया की छत्रियाँ प्रसिद्ध हैं।
- माधव राव सिंधिया और महारानी सांख्य राजे सिंधिया की छतरियों के बीच एक बड़ा सुंदर तालाब है।
- शिन्दे परिवार की छतरियाँ को स्थापत्य की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—
 - उज्जैन की छतरियाँ — पूर्व परंपरानुसार, राणोंजी शिंदे की मूल छतरी स्थापत्य का प्रथम प्रमाण है।
 - ग्वालियर व शिवपुरी के आसपास की छतरियाँ।
- प्रथम प्रकार की छतरियाँ डेक्कन ट्रेप की बनी हैं।
- गोलाकार या अष्टकोनी निर्माण, गुम्बदयुक्त छत से जगती पर बनी, समुख चोबदार या जगती पर पशु पौधे, हाथी आदि उकेरे गये हैं।
- उज्जैन में बनी छतरी की दीवारों पर चित्र बने हैं।
- गंगाबाई की छतरी पर राजपूत शैली का प्रभाव है जो इस्लामिक शैली से प्रभावित थी।

विशेषताएं

- ये ऊंचे, गुंबद के आकार के मंडप हैं जिनका उपयोग भारतीय वास्तुकला में एक तत्व के रूप में किया जाता है।
- ये छतरियाँ मध्यकाल की सुंदरता को बरकरार रखती हैं और हाथियों, घोड़ों और बाघों की पत्थर की नक्काशी से सजाई गई हैं।
- इन स्मारकों का निर्माण 'गुलाबी और सफेद पत्थरों' से किया गया है।
- 'मुगल—मराठा—राजपूत शैली' के साथ इस दौर में बनी छतरियों पर आंग्ल प्रभाव विशेष रूप से इनके शिखरनुमा निर्माण व छज्जों पर है।



◆ शिंदे छत्री

- ◆ वानावाडी, पुणे में स्थित है।
- ◆ यह महादजी शिंदे को समर्पित एक स्मारक है।
- ◆ यह एक हॉल है जो 12 फरवरी 1794 को महादजी शिंदे के दाह संस्कार के स्थान को चिह्नित करता है।
- ◆ यह राजपूत स्थापत्य शैली में तीन मंजिला स्मारक है।



◆ गोरखी महल

- ◆ इसका निर्माण दौलत राव सिंधिया ने ग्वालियर में करवाया था (जब उन्होंने अपनी राजधानी उज्जैन से ग्वालियर स्थानांतरित की थी)।

विशेषताएं

- ◆ इसे बलुआ पत्थरों की 'इंटर-लॉकिंग' का उपयोग करके बनाया गया है।
- ◆ इसका मुख्य प्रवेश द्वार 'हथियापुर' के नाम से जाना जाता है।
- ◆ यह वास्तुकला की 'मराठा और राजपूत शैली' के मिश्रण को दर्शाता है।



◆ मोती महल ग्वालियर

- ◆ इसका निर्माण 18वीं शताब्दी ईस्वी में महाराजा जयाजी राव सिंधिया ने करवाया था।
- ◆ सिंधिया राज्य काल के दौरान इसका उपयोग मध्यभारत के सभा भवन के रूप में किया जाता था।
- ◆ विशेषता – रंगमाला, हॉल की दीवारों पर खूबसूरती से पेंटिंग बनाई गई हैं।
- ◆ वर्तमान में इस भवन में ग्वालियर संभाग के कमिशनर का कार्यालय है।



◆ जयविलास पैलेस

- ◆ 1874 में महाराजा जयाजी राव सिंधिया के तत्त्वावधान में ब्रिटिश लेफिटनेंट कर्नल सर माइकल फिलोस द्वारा डिजाइन किया गया।

विशेषताएं

- ◆ ग्वालियर में स्थित, यह यूरोपीय शैली का महल है जिसके कुछ कमरों को जीवाजी राव सिंधिया संग्रहालय में बदल दिया गया है।
- ◆ महल की पहली मंजिल टस्कन है, दूसरी इतालवी-डोरिक है और तीसरी कोरिंथियन डिजाइन से प्रेरित है।



◆ माधव विलास पैलेस

- ◆ माधवराव सिंधिया द्वितीय द्वारा निर्मित।
- ◆ शिवपुरी में स्थित है।
- ◆ इसे शाही निवास भी कहा जाता था और इसका उपयोग ग्रीष्मकालीन महल के रूप में किया जाता था।
- ◆ विशेषता – यह मुगल, यूरोपीय और भारतीय वास्तुकला पैटर्न के संयोजन में बनाया गया है।



◆ जॉर्ज कैसल भवन

- ◆ यह माधव राष्ट्रीय उद्यान, शिवपुरी के अंदर स्थित है।
- ◆ यह महल इंगलैंड के राजा जॉर्ज पंचम के रात्रि विश्राम के लिए बनाया गया था, जिन्हें बाघ की शूटिंग के लिए जंगल का दौरा करना था।





- इन्हें मूलरूप से एम मथुरा के चरवाहा जाति या कृषक वंश के रूप में जाना जाता था। कालांतर में यह जाति मथुरा जिले से आकर दक्कन के गाँव 'होल' या 'हल' में आकर बस गये, इसी कारण यह होल्कर कहलाये।
- होल्कर मूलतः धनगर मूल का एक मराठा वंश था।

❖ मल्हार राव होल्कर

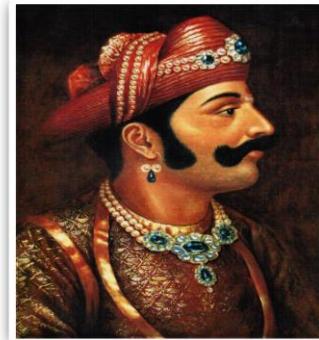
- पिता – खाण्डजी

मराठा सेना में सेवा

- मल्हारराव होल्कर प्रारंभ में गड़रिया जीवन व्यतीत कर रहे थे, किन्तु बाद में यह मराठा सेना में भर्ती हो गये, बाजीराव –I ने इनकी सैन्यकुशलता से प्रसन्न होकर इनको 500 घुड़सवार देकर उत्तर भारत की विजय हेतु भेज दिया।

सारगपुर का युद्ध

- 1724 में सारगपुर के युद्ध में गिरधर नामक मुगल प्रतिनिधि को पराजित किया।
- सारगपुर के युद्ध की सफलता से प्रसन्न होकर बाजीराव – I ने 1728 में मल्हारराव होल्कर को 12 जिलों की जर्मींदारी प्रदान की।



पालखेड़ा का युद्ध

- 1728 में बाजीराव –I ने मल्हार राव होल्कर की सहायता से निजाम को पालखेड़ा के युद्ध में पराजित किया

तिरला का युद्ध

- 1731 में पुनः मल्हारराव होल्कर ने तिरला के युद्ध में मुगल प्रतिनिधि दयाबहादुर को पराजित कर मालवा पर अधिकार कर लिया।

होल्कर वंश की स्थापना

- इस प्रकार बाजीराव –I ने मालवा की सूबेदारी मल्हार राव होल्कर को सौंप दी अब मल्हार राव होल्कर ने इंदौर को अपनी राजधानी बनाकर होल्कर वंश की स्थापना की।

दिल्ली अभियान

- 1737 में मोहम्मद शाह रंगीला के विरुद्ध बाजीराव –I ने दिल्ली अभियान में भाग लिया।

पानीपत का तृतीय युद्ध

- 1761 ई. में पानीपत के तृतीय युद्ध में भाग लिया, किंतु सदाशिवराव भाऊ से वैचारिक मतभेद के कारण पानीपत के तृतीय युद्ध से लौट आये तथा इंदौर में आकर अपना प्रशासन चलाने लगे।

समाधि

- 1766 में मल्हार राव होल्कर की भिण्ड के आलमपुर में मृत्यु हो गई। यही उनकी समाधि स्थित है।

निर्माण कार्य

- इंदौर स्थित राजवाड़ा की नीव मल्हार राव होल्कर ने डाली तथा इसके निर्माण कार्य को पूर्ण अहिल्याबाई तथा तुकोजी होल्कर ने किया।

खाण्डेराव

- मल्हार राव होल्कर के पुत्र खाण्डेराव का विवाह महाराष्ट्र के चौड़ी गाँव के पाटिल की पुत्री अहिल्याबाई होल्कर के साथ हुआ।

कुम्हेर का युद्ध

- पिता के शासन काल में ही 1754 ई. में 'कुम्हेर के युद्ध' में खाण्डेराव, सूरजमल जाट से पराजित होकर मारा जाता है।

मालेराव

- खाण्डेराव तथा अहिल्याबाई होल्कर से एक पुत्र हुआ, जिसका नाम मालेराव था।





- ♦ मल्हाराव होल्कर की मृत्यु के पश्चात होल्कर वंश का शासक मालेराव बना तथा मालेराव की संरक्षिका उसकी माता अहिल्याबाई होल्कर नियुक्त हुई।
- ♦ किंतु 1766 में ही मालेराव की भी मृत्यु हो गई, अब राज्य का शासन भार अहिल्याबाई होल्कर ने संभाल लिया।

❖ अहिल्याबाई – (1725 – 1795)

- ♦ जन्म – 1725 में औरंगाबाद के चौड़ी में हुआ
- ♦ पिता – माणकोजी पाटिल (चौड़ी ग्राम)
- ♦ माता – सुशीला बाई
- ♦ विवाह – 8 वर्ष की उम्र में इनका विवाह 1733 में सूबेदार मल्हारराव होल्कर के पुत्र खाण्डेराव के साथ हुआ।
- ♦ खाण्डेराव तथा अहिल्याबाई से एक पुत्र मालेराव तथा पुत्री मुक्ताबाई का जन्म हुआ, मुक्ताबाई का विवाह यशवंतराव फड्से से हुआ।
- ♦ 1754 में कुम्हेर के युद्ध में सूरजमल जाट के विरुद्ध खाण्डेराव पराजित हुआ तथा मारा गया।
- ♦ 1766 में मल्हाराव होल्कर की मृत्यु हो गयी, इसी वर्ष इनके पुत्र मालेराव की भी मृत्यु हो गयी।
- ♦ अहिल्याबाई ने अब शासन बागड़ोर अपनी हाथों में ली।
- ♦ अहिल्याबाई ने अपना सेनापति तुकोजीराव होल्कर को बनाया।



◆ राजधानी परिवर्तन

- 1767 में अहिल्याबाई ने होल्कर वंश की राजधानी 'महेश्वर' को बनाया।

◆ धार्मिक कार्य

- उन्होंने गुजरात में सोमनाथ का मंदिर, काशी में विश्वनाथ का मंदिर, आयोध्या तथा मैसूर में मंदिर का निर्माण करवाया। महेश्वर में मंदिर का निर्माण करवाया।
- उन्होंने 1777 में काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

◆ महिला सशक्तिकरण

- होल्कर साम्राज्य में विधवा की सम्पत्ति को राजसात कर लिया जाता था। देवी चन्द नामक व्यापारी की विधवा की विनती पर अहिल्याबाई ने यह नियम बदल दिया।
- अहिल्याबाई पहली शासिका थी जिसने महिला सेना की टुकड़ी तैयार की।
- उन्होंने महिलाओं के लिए पृथक घाटों का निर्माण करवाया।

◆ योग्य सेनापति के रूप में

- वे मल्हाराव होल्कर के साथ भिंड अभियान में भी गई थी। उन्होंने भिंड के आलमपुर में मल्हाराव होल्कर की छतरी का निर्माण करवाया।
- मंदसौर के युद्ध में चंद्रावतों को हराया।
- उन्होंने फ्रांसिसी दुदुराने के द्वारा अपनी सेना का प्रशिक्षण करवाया।
- उनकी सेना में ज्वाला नामक तोप थी।

◆ धर्म निरपेक्षता

- अहिल्याबाई एक धर्म निरपेक्ष शासिका थी।
- शरीफभाई नामक मुस्लिम सैनिक उनके अंगरक्षक दल में सम्मिलित था।
- धर्म निरपेक्ष छवि होने के कारण सोमनाथ, काशी, आयोध्या तथा मैसूर में मुस्लिम शासन होने के बाद भी मंदिरों का निर्माण करवाने में सफल रहीं।
- उन्होंने मैसूर के शासक टीपू सुल्तान की रेशम व्यापार में सहायता की।

◆ साहित्य कला का संरक्षण

- रानी अहिल्याबाई ने मराठी कवि मोरपंत और संस्कृत विद्वान खुशाली राम को अपने दरबार में शरण दी।



- अनंत फंदी ने रानी अहिल्याबाई की प्रेरणा से साहित्य सृजन प्रारंभ किया

◆ कुशल प्रशासक

- अहिल्याबाई एक कुशल प्रशासक थी।
- उन्होंने इंदौर में व्यापार की उन्नति पर ध्यान दिया।
- व्यापारियों के लिए सरायों का निर्माण करवाया।
- प्रजा के कल्याण के लिए निरंतर प्रयास किए।
- राज्य में शांति व्यवस्था स्थापित करने के लिए भीलों का दमन किया तथा इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले यशवंतराव फणसे का अपनी पुत्री मुक्ताबाई से विवाह करवाया।

◆ चतुर कूटनीतिज्ञ

- अहिल्याबाई एक चतुर कूटनीतिज्ञ भी थी।
- उन्होंने दीवान गंगाधर के षड्यंत्र को विफल कर दत्तक पुत्र की योजना को अस्वीकार कर दिया।
- उन्होंने रघुनाथराव (राघोबा) को होल्कर साम्राज्य पर आक्रमण न करने के लिए पत्र लिखा तथा सामने महिला सैनिक टुकड़ी खड़ी कर दी।

❖ स्थापत्य निर्माण

- इन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण करवाया। यहाँ इन्होंने अहिल्या घाट का निर्माण करवाया।
- इन्होंने 'राजराजेश्वरी मंदिर', 'महेश्वर का किला' तथा 'शाही महल' का निर्माण करवाया।

समाधि

- महेश्वर 13 अगस्त 1795 को इनकी मृत्यु हो गई, इनकी समाधि 'महेश्वर' में निर्मित है।

❖ तुकोजीराव होल्कर

- अहिल्याबाई होल्कर की मृत्यु के पश्चात अगला शासक तुकोजीराव होल्कर बने।
- तुकोजीराव होल्कर को महादजी सिंधिया ने 1793 में 'लखेरी के युद्ध' में पराजित किया।
- तुकोजीराव होल्कर के चार पुत्र थे— काशीराव, मल्हार राव –II विठ्ठू जी, यशवंत राव।

❖ काशीराव

- तुकोजी का उत्तराधिकारी काशीराव हुआ, जो विकलांग थे, काशीराव को सदैव डर रहता था कि कहीं उसके भाई उससे सिंहासन छीन न लें।
- काशीराव ने दौलतराव सिंधिया के साथ मिलकर अपने भाई मल्हार राव होल्कर – II की हत्या करवा दी।

❖ यशवंतराव होल्कर

पुणे पर आक्रमण

- दौलत राव सिंधिया तथा पेशवा बाजीराव –II ने मिलकर यशवंतराव होल्कर के भाई विठ्ठूजी की हत्या पुणे में की।
- परिणामस्वरूप यशवंतराव होल्कर ने पुणे पर आक्रमण कर पेशवा तथा सिंधियाओं की संयुक्त सेना को पराजित किया तथा उज्जैन पर अधिकार कर लिया।



अन्य क्षेत्रों पर विजय

- पुणे से लौटने पर उसने जोहरा, तराना, रामपुरा, भानपुरा, निवाली, सोंधवाड़ा, राजगढ़, शुजालपुर, आष्टा, सारंगपुर, अकरा, बरखेड़ा आदि पर अधिकार कर लिया।
- मालवांचल में उसने धन वसूली भी की।

शाह आलम –II को मुक्त कराना

- इसने मुगल सम्राट शाह आलम –II को मुक्त कराने का फैसला किया, लेकिन असफल रहे।
- इनकी बहादुरी से प्रभावित होकर शाह आलम ने इन्हें 'महाराजाधिराज राजराजेश्वर अलीजा बहादुर' की उपाधि दी।





अंग्रेजों से संघर्ष

- यशवंतराव होल्कर ने तत्कालीन भारत में सभी राजाओं से अंग्रेजों के खिलाफ सहयोग मांगा, किन्तु किसी ने यशवंतराव होल्कर का साथ नहीं दिया।
- यह एक मात्र भारतीय ऐसे शासक थे, जिनके साथ अंग्रेज हर हाल में बिना शर्त समझौता करना चाहते थे, इसलिए प्रसिद्ध इतिहासकार एन.एस इनामदार ने इन्हें 'मराठों का नेपोलियन' कहा।

वेलेजली का आदेश एवं उस पर प्रतिक्रिया

- वेलेजली ने भी को आदेशित किया कि, यशवंतराव होल्कर वंश में सर्वाधिकार प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील है, उसे नियंत्रित किया जाये।
- यशवंतराव होल्कर ने अपने वकील के माध्यम से कुछ शर्तें रखीं जिन्हें अंग्रेजों ने मानने से इंकार कर दिया, परिणामस्वरूप दोनों के मध्य युद्ध हुए।
- मरे व मौलसन नामक सेनानायक मिलकर यशवंतराव को पराजित करने हेतु मालवा क्षेत्र में भेजा गया।

मौलसन की पराजय

- होल्कर ने 7 जुलाई, 1804 को अंग्रेज सेना पर आक्रमण करके कोटा से दक्षिण में मुकुंदरा घाटी में मौलसन को पराजित किया।
- पुनः बनास नदी के तट पर पराजित होने पर 31 अगस्त 1804 ई. तक वह बमुश्किल आगरा पहुँचा।

दिल्ली एवं मथुरा आक्रमण

- होल्कर ने अब दिल्ली पर आक्रमण का प्रयास किया। होल्कर के पास विशाल सेना थी जिसके द्वारा मथुरा पर आक्रमण कर विजित किया गया। यहाँ से होल्कर दोआब में प्रविष्ट हुआ।
- परंतु दिल्ली अभियान में आक्टरलोनी व फर्स्टखाबाद में जनरल लेक से पराजित हुआ। अब भरतपुर के जाट शासक से उसने सहायता माँगी।

भरतपुर के जाट शासक से सहायता

- जाट शासक रणजीतसिंह ने डींग के दुर्ग में उसे आश्रय देकर दिवान रायसिंह तथा पुत्र लछमनसिंह को सेना सहित होल्कर के सहायतार्थ भेजा।
- 7 जनवरी से 10 अप्रैल तक भरतपुर का घेरा चलता रहा। अंग्रेजों को भयंकर नुकसान उठाना पड़ रहा था।

भरतपुर से अंग्रेजों की संधि

- अंग्रेजों की विफलता के समाचार मिलने पर दौलतराव शिंदे की सेना के बुरहानपुर की तरफ बढ़ने का समाचार मिला व अंग्रेजों ने जाट शासक रणजीतसिंह से भरतपुर में 10 अप्रैल 1805 ई. को संधि कर ली।
- डींग का दुर्ग 3 लाख रुपये अंग्रेजों के पास अपने एक पुत्र को रखने की शर्त पर शासक ने संधि स्वीकार कर ली।

◆ राजपुर घाट की संधि

- सभी ओर से सहयोग न मिलने पर यशवंतराव होल्कर ने संधि करना उचित समझा।
- मालवा के पॉलिटिकल एजेण्ट जॉन मैलकम ने भी संधि प्रस्ताव भेजा। यह संधि अंग्रेजों की तरफ से प्रस्तावित थी।
- होल्कर ने लॉर्ड लेक के शिविर में व्यास नदी के किनारे अपने दो प्रतिनिधियों बालाराम सेठ व शेख हबीबुल्लाह को भेजा।
- परिणाम स्वरूप द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान यशवंतराव ने लॉर्ड वेलेजली के साथ 1805 में 'राजपुर घाट की संधि' की।

प्रमुख प्रावधान

- यशवंतराव होल्कर अंग्रेजों के साथ मित्रता स्थापित करेगा।
- यशवंत राव होल्कर ने टोंक, रामपुरा, बुंदी, लाखेरी, मामणगाँव आदि बुंदी की पहाड़ियों के उत्तर के प्रदेश जो अंग्रेज प्रभाव में थे, के सारे अधिकार त्याग दिये।
- होल्कर ब्रिटिश के अतिरिक्त अन्य किसी यूरोपियन को अपनी सेवा में नहीं रखेंगे।
- ईस्ट इण्डिया कंपनी भविष्य में चंबल के दक्षिण में मालवा या हाड़ौती क्षेत्र या मेवाड़ में होल्कर वंश के पूर्व अधिकृत प्रदेशों पर दावा नहीं करेगी। ब्रिटिश ने मेवाड़ पर होल्कर के अधिकार को बनाये रखा।





5. ताप्ती नदी के दक्षिण में चोखण्ड दुर्ग छोड़कर तथा आम्बेर व शोगाँव परने के अलावा किसी होल्कर वंशीय प्रदेश पर भी दावा नहीं करेगी। ब्रिटिश ने ताप्ती नदी के दक्षिण में होल्कर के अधिकार को मान्यता दी।
 6. बुंदेलखण्ड क्षेत्र में कूच का क्षेत्र दो वर्ष तक होल्कर से ले लिया जायेगा। यदि इस अवधि में यशवंतराव का व्यवहार अंग्रेजों के प्रति शांतिपूर्ण व सहयोगात्मक रहा तो यह क्षेत्र उसकी पुत्री भीमाबाई के लिये बहाल किया जायेगा।
 7. यशवंतराव पटियाला, कैथल व जिंद तथा जयपुर रियासतों का मार्ग छोड़कर हिंदुस्तान (अपने प्रदेश) में लौटेगा व रास्ते में कोई लूटपाट आदि नहीं करेगा न कंपनी के मित्रों को नुकसान पहुँचायेगा।
- जॉर्ज बालों द्वारा पदग्रहण करने पर एक और संशोधन किया गया कि, बूंदी के उत्तरी पहाड़ियों की सीमा के क्षेत्र व टोंक तथा रामपुरा पुनर्श्च होल्कर को दे दिये गये।

प्रयत्न

- यशवंतराव पुनः मराठा संघ को संगठित करने के लिए प्रयत्नशील रहा।
- इन्होंने मंदसौर के 'भानपुरा' में गोला-बारूद का कारखाना स्थापित किया।

समाधि

- इनकी समाधि मंदसौर के 'भानपुरा' में स्थित है।



◆ भीमाबाई

- इनके पिता यशवंतराव होल्कर एवं माता माजी केशरी बाई थीं।
- उन्होंने अपने छोटे भाई मल्हार राव को सलाह दी 'अंग्रेजों को हमारे कार्यों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है और उन्हें रोकना चाहिए'।
- महिदपुर का युद्ध – तृतीय आंगल–मराठा युद्ध के दौरान महिदपुर (मालवा क्षेत्र के एक कस्बे) में सर थॉमस हिसलोप के नेतृत्व में हुआ था।
- सर थॉमस हिसलोप ने 21 दिसंबर 1817 को हमला किया और महिदपुर के युद्ध में महाराजा मल्हार राव होल्कर द्वितीय, हरि राव होल्कर और भीमा बाई होल्कर के नेतृत्व वाली सेना को हराया।
- इसी दौरान भीमा बाई होल्कर स्त्री होते हुए अंग्रेजों से वीर योद्धा की तरह लड़ी महिदपुर के युद्ध में ब्रिटिश 'कर्नल मॉल्कम' को गोरिल्ला युद्ध में हराया।
- होल्करों को निर्णायक रूप से ब्रिटिश सेना द्वारा कुचल दिया गया था।
- 6 जनवरी 1818 को मंदसौर (मंदसौर की संधि) में संधि की पुष्टि की गई थी।
- उन्हें जब पता चला कि उनके भाई मल्हार राव ने अंग्रेजों से संधि कर ली तो उसका उन्होंने विरोध किया और मातृभूमि की रक्षा के लिए संघर्ष का मार्ग ही उचित समझा।

◆ मल्हार राव होल्कर – II

तृतीय आंगल मराठा युद्ध / महीदपुर की लड़ाई

- तृतीय आंगल–मराठा युद्ध के दौरान मल्हार राव – II की बहन भीमा बाई होल्कर ने 1817 में महीदपुर की लड़ाई में कर्नल मॉल्कम को पराजित किया।
- तृतीय आंगल मराठा युद्ध के दौरान मल्हार राव होल्कर – II की संरक्षिका व उनकी विमाता तुलसाबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का झण्डा उठाया किन्तु तुलसाबाई के विश्वासघाती सैनिकों ने इनका सिर काटकर क्षिप्रा नदी में फेंक दिया।

1818 मंदसौर की संधि



- कालांतर में मल्हार राव होल्कर – II ने मालकम के साथ 'मंदसौर की संधि' 1818 में कर ली।

- मल्हारराव द्वितीय के संरक्षक तात्या जोग तथा ब्रिगेडियर जनरल जॉन मालकम के हस्ताक्षर किए गए।

□ प्रमुख प्रावधान

1. होल्कर महाराजा मल्हारराव तृतीय को कंपनी का संरक्षण।





2. अमीर खां को होल्कर से स्वतंत्र कर, टौक क्षेत्र प्रदान किया गया।
3. होल्कर शासक सतपुड़ा के दक्षिणी भागों से अपने अधिकार त्याग देगा।
4. होल्कर बूंदी पहाड़ी के उत्तर के क्षेत्र व रामपुरा आदि, क्षेत्रों पर अधिकार त्याग देगा।
5. सेंधवा का दुर्ग पर अंग्रेजों या उसके वंशजों का कोई नियंत्रण नहीं रहेगा।
6. होल्कर राज्य की आंतरिक सुरक्षा व शास्ति हेतु अंग्रेज शासन एक सेना रखेगा। इसका मुख्यालय ब्रिटिश सरकार की मर्जी पर होगा। महू में ब्रिटिश छावनी स्थापित की जाएगी।
7. उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी व करवली राज्य से जो कर होल्कर शासक वसूलता था वे अधिकार ब्रिटिश शासन को सौंप देगा।
8. महाराजा अंग्रेज कंपनी के मित्रों व आश्रितों पर आक्रमण नहीं करेगा न ही शत्रुतापूर्ण व्यवहार करेगा।
9. मल्हारराव होल्कर अपनी सेवा में अंग्रेज शासन की अनुमति के बगैर किसी यूरोपियन या अमेरिकी को सेवा में नहीं रखेगा।
10. महाराजा के राज्य में अंग्रेज प्रतिनिधि (रजीडेंट) रहेगा। महाराजा भी गवर्नर जनरल के पास अपना वकील रखेगा।
11. संधि के लागू होते ही अंग्रेज महाराजा होल्कर के विजित क्षेत्र लौटा देंगे।
12. महाराजा मल्हारराव होल्कर पर पेशवा (श्रीमंत) या उसके किसी वंशज का नियंत्रण नहीं रहेगा।
13. इस संधि के साथ होल्कर का पूर्ण समर्पण हो गया।

राजधानी परिवर्तन

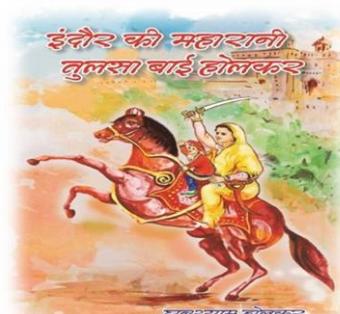
- मल्हारराव होल्कर – II ने पुनः 1818 ई. में राजधानी महेश्वर से 'इंदौर' स्थापित की।

उत्तराधिकारी

- मल्हारराव होल्कर – II के पश्चात मार्तण्डराव, हरिराव, खाण्डेराव-II आदि होल्कर शासक हुये।

❖ तुलसाबाई होल्कर

- यशवंतराव होल्कर की दूसरी पत्नी तथा मल्हारराव होल्कर द्वितीय की सौतेली माँ थीं।
- 28 अक्टूबर, 1811 को महाराजा यशवंत राव होल्कर की मृत्यु के बाद उनका 4 वर्षीय पुत्र महाराजा मल्हारराव होल्कर द्वितीय राजगद्दी पर बैठा। तुलसा बाई ने संरक्षक बनकर राजगद्दी की बागड़ेर संभाली थी।
- अंग्रेजों द्वारा भानपुर, गंगधार, आलोक के किले में तुलसा बाई पर हमले हुए जिनका वीरांगना तुलसा बाई ने बहादुरी के साथ डंटकर मुकाबला किया।
- द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध के समय 19 दिसंबर, 1817 को 'महिदपुर के युद्ध' में षड्यंत्र कर अंग्रेजों ने तुलसा बाई और उनके पुत्र महाराजा मल्हारराव होल्कर द्वितीय को घेर लिया।
- वहीं उनकी रियासत के विश्वासघाती सैनिकों ने तलवार से वार कर तुलसा बाई का सर धड़ से अलग कर दिया और (रक्तरंजित अवशेष) नदी में फेंक दिए।



❖ मार्तण्डराव होल्कर (1834)

- यशवंतराव होल्कर की पत्नियों गौतमाबाई व कृष्णाबाई होल्कर (मल्हारराव II की माँ) के द्वारा गोद लिया गया।
- लोगों के विरोध करने पर पद त्याग दिया।

❖ कृष्णाबाई होल्कर या माजी केसर बाई

- द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध के पश्चात होल्कर साम्राज्य को संभाले रखा और शासन संचालन किया।
- कृष्णाबाई ने 'तात्या जोग' को मंत्री नियुक्त किया एवं उनकी सहायता से होल्कर राज्य का अस्तित्व बनाये रखा।
- इन्होंने होल्कर उत्तराधिकार के निर्णय में अंग्रेजों से मान्यता प्राप्त कराई।
- उन्होंने इंदौर में हनुमान मंदिर, गोपाल मंदिर का निर्माण कराया।
- 1849 में म्रत्यु हो गई एवं इनकी समाधि इंदौर में कान्ह नदी के तट पर स्थित है।



❖ हरिराव होल्कर (1834-1843)

- मार्तण्डराव होल्कर के पश्चात् होल्कर वंश का शासक बना।
- 16 जून 1841 ई. को प्रथम रेसीडेन्सी विद्यालय स्थापित हुआ जिसे हरिराव होल्कर के काल में कृष्णपुरा के खान नदी के घाट पर स्थित धर्मशाला में 7 अप्रैल 1843 ई. स्थानांतरित किया गया। इसे 'इंदौर मदरसा' कहा गया।

❖ खंडेराव होल्कर (1843-1844)

- हरिराव होल्कर राव का दत्तक पुत्र
- ब्रिटिश कंपनी द्वारा इसे मान्यता दी गई।

❖ तुकोजी राव होल्कर-II (1844-1886)

प्रशासन परिषद

- तुकोजीराव होल्कर द्वितीय के अल्पवयस्क होने के कारण एक परिषद द्वारा प्रशासन की देखभाल की जाती थी।
- 1852 में जाकर तुकोजीराव होल्कर को पूर्ण स्वायत्ता दी गई।

निर्माण कार्य

- तुकोजीराव द्वितीय ने एम.टी.एच अस्पताल, शिव विलास महल, लालबाग का निर्माण करवाया।



अन्य प्रमुख कार्य

रेलवे विकास

- 1864 में रेलवे को लेकर अंग्रेजों और होल्कर के मध्य समझौता हुआ।
- उन्होंने खंडवा-इंदौर रेलवे लाइन के लिए अंग्रेजों को कर्ज दिया।
- 2 अप्रैल 1870 ई. को महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वारा इंदौर राज्य के लिए अंग्रेज सरकार 'द ग्रेट इंडियन पेनिनसुला' रेलवे कंपनी द्वारा रेलवे के निर्माण हेतु समझौता किया गया। इसे होल्कर स्टेट रेलवे कहा जायेगा।

पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ

- 1878 में 'पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ' समझौता किया गया।
- 1885 ई. में राज्य का प्रथम डाक टिकट जारी हुआ जिसका मूल्य आधा आना था व इस पर चित्र शासक तुकोजीराव द्वितीय का अंकित था जिसे लंदन की कम्पनी "वाटरलो एण्ड संस" द्वारा मुद्रित किया गया था।
- महाराजा तुकोजीराव तृतीय के काल में 14 जनवरी 1905 ई. में सर्विस डाक टिकट जारी हुआ।

पोस्टकार्ड

- महाराजा शिवाजीराव के समय 1/4 आने का पोस्टकार्ड तथा 1/2 आने का लिफाफा भी जारी हुआ जिस पर शासक शिवाजीराव का चित्र था।

→ कर्नल हीड ने तुकोजीराव होल्कर द्वितीय के राजस्व प्रशासन की प्रशंसा की है।

1857 की क्रांति और होल्कर राज्य

- इंदौर के लिए महू नामक स्थान पर ही ब्रिटिश छावनी 1817 ई. में स्थापित हो चुकी थी।
- 13 मई 1857 ई. को इंदौर रेसीडेन्सी में आगरा से एक तार द्वारा संदेश प्राप्त हुआ था जिसके द्वारा दिल्ली में कत्लेआम की सूचना दी गई थी।
- इंदौर के स्थायी रेजीडेंट हैमील्टन स्वास्थ्य की खराबी के कारण इंग्लैण्ड चले गये थे व उनके स्थान पर चार्ज कर्नल ए.एम. ऊरुंड को दिया गया था।
- उनके द्वारा मालवा की अन्य छावनी सीहोर से अतिरिक्त बल सुरक्षा हेतु बुलवाया गया था।
- 20 मई तक मालवा के भील सिपाही इंदौर पहुँच चुके थे।





- नंसीराबाद, नौमच, झाँसी आदि स्थानों से विद्रोह की खबर मिलते ही ऊरुंड को होल्कर दरबार द्वारा चेतावनी दी गई कि रेसीडेंसी का खजाना व अंग्रेज परिवारों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया जाय।
- 24 जून से 27 जून तक सादत खा, बंस गोपाल, अरराव सिंह व नवाब वारिस मोहम्मद एकजुट हुए और 1 जुलाई 1857 को महू छावनी और इंदौर से क्रांति नेतृत्व किया। इन्होंने ब्रिटिश छावनी को लूटा।
- ऐसा कहा गया कि 1857 के विद्रोह के समय अपनी सेनाओं पर नियंत्रण नहीं रख सके।
- ऊरुंड साथियों सहित सीहोर भाग गया और वहां से भोपाल की बेगम सिकंदर जहाँ ने उसकी सहायता की।
- इसी दौरान भीमा नायक ने बड़वानी से रियासत में भील विद्रोह का भी नेतृत्व किया।
- 1859 में भीमा नायक व उनके साथियों को रामगढ़ इलाके में पकड़ लिया गया, भीमा नायक को मंडलेश्वर की जेल में रखा गया जहाँ उसकी मृत्यु हो गई।
- सेन्ट्रल इण्डिया फील्ड फोर्स का अधिकार सर ह्यूरोज को था जिसमें यूरोपियन सैनिक व घुड़सवार थे।
- 6 जनवरी 1858 ई. को इंदौर से सर ह्यूरोज व सर रॉबर्ट हैमिल्टन ने सेन्ट्रल इण्डिया एजेन्सी की कमान संभाली और ग्वालियर पर विजय व जावरा व अलीपुर के विद्रोह दमन हेतु जून 1858 ई. तक सक्रिय रही।

❖ शिवाजी राव होल्कर

- शिवाजी राव होल्कर ने इंदौर में कर मुक्त बाजार बनाया।
- इन्होंने चाँदी के सिक्के जारी किये।

❖ तुकोजीराव होल्कर – III (1903–1926 ई.)

- नवम्बर 1911 को उन्हें पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हुआ।

प्रमुख निर्माण

- एक टाउन हॉल का निर्माण किया गया जिसका उद्घाटन सप्राट जॉर्ज पंचम ने किया तथा उच्च न्यायालय के लिए एक नई इमारत का निर्माण किया गया।

अन्य प्रमुख कार्य

- नागदा-मथुरा रेलवे लाइन का विकास।
- 1914 में इंदौर में हुकुमचंद मिल की स्थापना की गई तथा पिपरिया में कृषि अनुसंधान केन्द्र खोला गया।
- प्रथम विश्व युद्ध उनके शासनकाल के दौरान हुआ और उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य का समर्थन किया।
- 1919 में वायसराय चेम्सफोर्ड इंदौर आये।
- उन्होंने कई शैक्षणिक संस्थाएं बनवाईं।
- उन्होंने 1918 में ब्रिटिश सरकार से नाइट ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ इंडिया की उपाधि प्राप्त की।
- वास्तुकार और नगर योजनाकार पैट्रिक गेडेस ने 1918 में शहर का पहला मास्टर प्लान तैयार किया था।



❖ यशवंत राव होल्कर – II

- होल्कर वंश का अंतिम शासक, 'आधुनिक इंदौर के निर्माता'
- इनका जन्म लालकोठी में हुआ, इसके बाद लालकोठी का नाम 'यशवंत निवास कोठी' पड़ गया।

❖ आर्थिक कल्याण

- 3 फरवरी 1935 को 'श्री क्षत्रिय धनगर सेवा संघ' की स्थापना।
- 1939 में समाज भवन के लिए प्रिंस यशवंत रोड पर दो भूखंड व आर्थिक सहायता प्रदान की।
- इन्दौर को वायुसेवा से जोड़ने के लिए उन्होंने बिजासन टेकरी के निकट तात्कालिक योजना स्वीकृत कराई। 1935 में हवाई अड्डे का निर्माण पूरा हुआ।





♦ जनकल्याण

- इन्दौर की बढ़ती जनसंख्या को दृष्टिगत रखते हुए गंभीर नदी पर 1939 में जलाशय बनाया, जो 'यशवंत सागर' नाम से जाना जाता है।
- सत्ता समाप्त होने के बावजूद यशवंतराव द्वितीय ने रेसीडेन्सी क्षेत्र में गरीबों के लिए निःशुल्क सात मंजिला प्रदेश का सबसे बड़ा चिकित्सालय 'महाराजा यशवंतराव चिकित्सालय' (M.Y.H) बनवाया। उस समय यह एशिया का सबसे बड़ा अस्पताल था।
- 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध में यशवंतराव द्वितीय ने तानाशाह हिटलर के विरुद्ध अपनी आर्थिक एवं सेना सहायता भेजी। साथ ही 1943 में अपने सैनिकों का हालचाल पूछने स्वयं ही जा पहुंचे।

♦ खेल व अन्य कलाओं के क्षेत्र में योगदान

- मध्यप्रदेश क्रिकेट संघ की स्थापना 1940–41 में होल्कर क्रिकेट इसोसिएशन के रूप में की गई थी।
- उनके द्वारा स्थापित 'होल्कर क्रिकेट टीम' की अंतर्राष्ट्रीय जगत में बहुत ख्याति थी।
- 1935 में महात्मा गांधी के इन्दौर आगमन पर यशवंतराव द्वितीय ने 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' को आर्थिक सहायता प्रदान की थी।

♦ राष्ट्रवाद

- यशवंतराव द्वितीय पहले महाराजा थे जिन्होंने देश के प्रति अपने राज्य का विलय बिना किसी शर्त पर मंजूर कर लिया।
 - स्वतंत्रता के पश्चात् यशवंतराव होल्कर द्वितीय को मध्यभारत का उपराजप्रमुख बनाया गया।
 - इन्होंने 16 जून 1948 ई. में अपने राज्य का विलय मध्य भारत में किया।
- इनकी मृत्यु 1961 में मुम्बई में हुई।

होल्कर स्थापत्य

- मालवा में स्थित होल्कर शासकों द्वारा मराठा शैली में स्थापत्य निर्माण को प्रोत्साहन दिया गया।
- इस काल में छत्रियों, महल, स्मारक एवं बाग आदि का निर्माण किया गया।
- होल्कर स्थापत्य में पारंपरिक हिन्दू स्थापत्य के साथ—साथ मुगल, ब्रिटिश, फ्रेंच आदि का प्रभाव भी दिखता है।

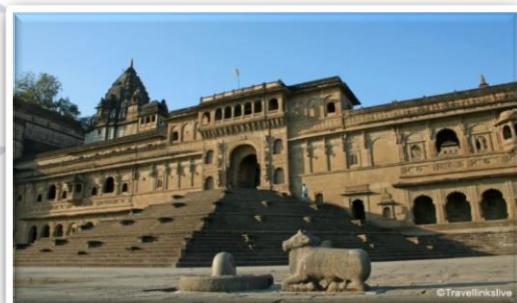
शासकों के काल में निर्मित स्थापत्य

□ मल्हार राव होल्कर

- 1747 – 'राजवाड़ा' महल का निर्माण (इंदौर)
- 1754 – 'छतरीबाग' की स्थापना

□ देवी अहिल्याबाई –

- हिन्दू मंदिरों का निर्माण व पुनरुद्धार जैसे – काशी विश्वनाथ, सोमनाथ मंदिर
- घाट बनवाये जैसे – महेश्वरघाट
- अहिल्या महल (महेश्वर – 18वीं शती)
- मल्हारराव की छतरी (आलमपुर 1766)



□ तुकोजीराव – II एवं शिवाजीराव होल्कर –

- लालबाग पैलेस (इंदौर)

□ तुकोजीराव होल्कर – III –

- नवरत्न मंदिर (1922 – इंदौर)





प्रमुख स्थापत्य एवं उनकी विशेषताएँ

♦ राजवाड़ा पैलेस

- मल्हारराव होल्कर (निर्माता)

विशेषताएँ -

- मराठा शैली में निर्मित 7 मंजिला महल (इंदौर)
- यह पत्थर एवं लकड़ी से निर्मित है
- इसमें प्रवेश द्वार (तोरण के समान), उद्यान, रानी अहिल्याबाई की मूर्ति, फब्बारे स्थित है।



♦ लाल बाग पैलेस

- खान नदी को तट पर स्थित।
- इस महल का निर्माण तुकोजीराव – II द्वारा शुरू करवाया गया जिसे बाद में शिवाजीराव होल्कर तथा तुकोजी – III द्वारा पूर्ण करवाया गया।
- यह महल अपनी अनौखी शैली के कारण भारत का स्टाइलिस्ट निवास कहलाता है।
- इसमें बकिंघम पैलेस की नकल की गई।
- वर्तमान में संग्रहालय में परिवर्तित।



विशेषताएँ -

- 3 मंजिला पैलेस (इंदौर),
- भारत एवं इटली के चित्रों एवं मूर्तियों से सुसज्जित, दीवारों एवं छत पर नकाशी की गई।

♦ छत्रियाँ

- शासकों की याद में मराठा शैली में निर्मित भव्य एवं अलंकृत होल्कर छत्रियाँ
- इंदौर छतरी बाग में खंडेराव होल्कर, गौतमाबाई, हरिराव होल्कर व अन्य लोगों की सुंदर छत्रियाँ हैं जो अलंकरण सजावट से भरपूर हैं।
- हरिराव की छतरी किसी दक्षिणी स्थापत्य मंदिर का आभास देती है।
- मल्हारराव होल्कर की छतरी आलमपुर में बनवाई गई है।



विशेषताएँ:

- अर्द्धमण्डप, द्वार, गर्भगृह, जगती, स्तंभ आदि छत्रियों के प्रमुख भाग हैं।
- परकोटे से घिरी हुई, उंची जगती पर स्थित हैं।
- सामान्यतः जगती काले बेसाल्ट एवं स्तंभ लाल बलुआ या भूरे पत्थर से किया गया है।
- जगती–स्तंभ पर देवी देवताओं, द्वारपाल, पशु–पक्षी आदि की प्रतिमाएँ व चित्र अलंकृत हैं।
- उदा. – छत्री बाग (इंदौर), मल्हारराव होल्कर की छत्री (आलमपुर)

अहिल्याबाई व विठ्ठोजी होल्कर की छतरी

- होल्कर द्वारा निर्मित अहिल्याबाई व विठ्ठोजी होल्कर की छतरी अति सुंदर व उच्चे चबूतरे पर बनी है।
- सीढ़ियों पर मानव मूर्तियाँ हैं जो परकोटे पर नृत्यकार, जगती पर हाथी की सवारी जैसे दृश्य उकरे गये हैं।
- अहिल्याबाई की छतरी तो उनके समूचे व्यक्तित्व का प्रतीक है जिसमें काले पाषाण की बनी यह इमारत सादगी व दृढ़ता का परिचय कराती है।



मल्हारराव होल्कर की छत्री



यशवंतराव होल्कर की छतरी

→ भानपुरा में यशवंतराव होल्कर की छतरी अपनी विशालता, निर्माण के कारण मंदिर का आभास देती है। इसके आंतरिक भाग में सुंदर चित्र बने हैं जो चित्रकला का बेजोड़ प्रमाण हैं।

अन्य छतरियाँ

- कृष्णपुरा पुल के पास व नदी की तलहटी में होल्करों की सुंदर छतरियाँ हैं। कृष्णाबाई की छतरी गुंबदयुक्त विशाल मेहराबी गलियारे से सुसज्जित है।
- यशवंतराव की पुत्री भीमाबाई द्वारा अपने पुत्र की मृत्यु पर एक अति सुंदर अष्टकोणीय निर्माण चित्रकला महाविद्यालय, महात्मागांधी मार्ग के समीप निर्मित करवाई थी।
- यह काले व लाल पत्थर से निर्मित जगती पर बनाई गई इमारत है जो सुंदर गुंबद, उकेरे गये पश्चु-पक्षियों की आकृति तथा अपने निर्माण की समरूपता के कारण अत्यंत आकर्षक बन पड़ी है।

♦ गाँधी हॉल

- 'किंग एडवर्ड पैलेस' नाम से 1904 में निर्मित
- इसमें 'घंटा घर' स्थित।

विशेषताएं

- इण्डो-गोथिक शैली में बनाया गया।
- खुली छत, सजावटी पट्टियाँ, ऊंची छतों, सुसज्जित कमरे, मीनारे आदि विशेषताओं से युक्त है।



होल्कर कला स्थापत्य

- ◆ **राजबाड़ा** – इन्दौर – शिवाजीराव होल्कर (डिजाइनर – किंग एडवर्ड हॉल)
- ◆ **गाँधी हॉल** – यशवंतराव होल्कर (डिजाइनर – किंग एडवर्ड हॉल)
- ◆ महेश्वर किला
- ◆ **श्री पंढरीपुर मंदिर** – यशवंत राव होल्कर (भगवान विष्णु को समर्पित)
- ◆ **यशवंत राव होल्कर की छतरी** – यशवंत राव
- ◆ **शिव विलाश पैलेस** – शिवाजीराव
- ◆ **सुख निवास पैलेस** – इन्दौर – ग्रीष्म काल – निवास स्थान।
- ◆ **बोलिया सरकार की छतरी** – इंदौर – गम्भीर नदी के तट पर।
- ◆ **यशवंत सागर** – इंदौर – गम्भीर नदी।
- ◆ **सिरपुर झील** – इंदौर
- ◆ **काशी विश्वनाथ मंदिर** – वाराणसी
- ◆ **कृष्णा बाई होल्कर की छतरी**
- ◆ **अन्नापूर्णा मंदिर** – काशी – अहित्याबाई होल्कर





भोपाल रियासत



- प्राचीन भोपाल रियासत की स्थापना परमार राजा भोज ने करवाई थी।
- भोपाल रियासत बनने से पहले यह गोंडों के राज्य क्षेत्र में आता था।

❖ दोस्त मोहम्मद खान

- संबंध – अफगानिस्तान के मिरजई खेल कबीले
- पिता – नूर मोहम्मद खान।

दोस्त मुहम्मद खान के अभियान एवं विजयें, कार्य

मुगल सेना में सम्मिलित

- इस समय दुनिया के युवाओं में होड़ लगी रहती थी, मुगलिया सेना में भर्ती होने की, ऐसे ही दोस्त मोहम्मद खान जो कि एक महत्वाकांक्षी नौजवान था।
- अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए भारत आया तथा औरंगजेब के समय मुगलिया सेना में सम्मिलित हो गया।
- मुगल सम्राट फरुखशियर ने दोस्त मोहम्मद को 'खान' की उपाधि दी।



तर्जीबिंग से युद्ध

- 1704 ई. में दोस्त मोहम्मद खान ने ग्वालियर आकर औरंगजेब के एक विद्रोही तर्जीबिंग से युद्ध किया।
- हाथी पर चढ़कर तर्जीबिंग के सेनानायक काशको खाँ को मार डाला। अंततः तर्जीबिंग को हथियार डालने पड़े।

भाड़े का सिपाही

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य में अव्यवस्था फैल गयी, इस काल में दोस्त मोहम्मद खान ने भाड़े के सिपाही के रूप में भिन्न – भिन्न रियासतों में सेवा दी।

मालवा में नौकरी

सीतामऊ

- मालवा आकर पहले सीतामऊ के राजा के पास नौकरी की।

भेलसा

- सीतामऊ से नौकरी छोड़कर मोहम्मद फारुक हाकिम भेलसा (विदिशा) के पास अपनी रकम और सामान बतौर अमानत रखकर बांस बरले के जर्मींदार से लड़ा तथा जख्मी हुआ।
- फारुक हाकिम भेलसा ने दोस्त मोहम्मद खान का वह माल जो उसने बतौर अमानत रखवाया था, जब्त कर लिया।

मंगलगढ़

- 1708 ई. में दोस्त मोहम्मद खान ने मंगलगढ़ में आकर (बैरसिया के निकट) ठाकुर आनंद सिंह सोलंकी के यहाँ नौकरी कर ली। ठाकुर आनंद सिंह सोलंकी की दिल्ली में मृत्यु हो गई। अतः संपत्ति दोस्त मोहम्मद खान को ही मिली।

जगदीशपुर

- इसी बीच भोपाल के निकट जगदीशपुर के जागीरदार नरसिंह राव देवड़ा के यहाँ नौकरी कर ली। कालान्तर में जागीरदार की हत्या कर जगदीशपुर पर कब्जा कर लिया तथा जगदीशपुर का नाम बदलकर इस्लामपुर रखा गया।

पठानों को संगठित करना

- दोस्त मोहम्मद खान अपने भाईयों एवं अन्य पठानों को संगठित कर के अन्य क्षेत्रों को जीतने का इरादा लेकर, बैरसिया रवाना हुआ।

बैरसिया प्राप्ति

- दोस्त मोहम्मद खान ने रुपये 30,000 प्रति वर्ष के बदले ताज मोहम्मद खान से बैरसिया प्राप्त किया।





दोस्त मोहम्मद खान द्वारा रानी कमलापति की सहायता, गौड़ राज्य से सम्बन्ध (1721-22) ई.

- गिन्नोरगढ़ में गौड़ राजा निजामशाह का शासन था, किन्तु निजामशाह के भतीजे चैनशाह ने, निजामशाह को जहर देकर मार दिया।
- निजामशाह की मृत्यु के पश्चात् उसकी विधवा 'रानी कमलापति' ने सरदार दोस्त मोहम्मद खान से चैनशाह के विरुद्ध मदद मांगी, दोस्त मोहम्मद खान ने चैनशाह को पराजित किया।
- शर्त के अनुसार जब कमलापति 1 लाख रुपये देने में असमर्थ रही तब रानी ने बदले में भोपाल दोस्त मोहम्मद खान को दे दिया।

गिन्नोरगढ़ पर कब्जा

- कालान्तर में रानी कमलापति एवं उनके पुत्र नवलशाह की मृत्यु के पश्चात् दोस्त मोहम्मद खान ने गिन्नोर पर कब्जा कर लिया।

नवाब की उपाधि धारण करना एवं फतेहगढ़ किला

- रानी कमलापति से प्राप्त भोपाल में, फतेहगढ़ किले की नींव डालकर उसी दिन 1722 को दोस्त मोहम्मद खान ने 'नवाब' की उपाधि धारण की और स्वतंत्र प्रमुख के रूप में कार्य करना प्रारंभ कर दिया। अब इनकी राजधानी इस्लाम नगर थी।
- उनकी बेगम का नाम 'फतेह बीवी' था। अतः उसी के नाम पर किले का नाम 'फतेहगढ़ का किला' रखा गया, जो आज तक स्थापित है। फतेह बीवी के नाम पर ही मोहल्ला फतेहगढ़ भी प्रसिद्ध है।
- फतेहगढ़ किले में चारों तरफ कई मील लंबी दीवार तैयार कराई गई जो पुराने किले से जाकर मिल जाती थी। इसमें हमामी, पीर, जुमेराती, इतवारा, बुधवारा, गिन्नौरी नाम के छः दरवाज़े बनाए गए।
- भोपाल शहर की नींव में पहला पत्थर रायसेन के काजी मोहम्मद मुज्जम ने तथा दूसरा पत्थर फतेह बीवी ने रखा।
- कालान्तर में दोस्त मोहम्मद खान ने भोपाल को शहर के रूप में विकसित किया।

नबाव तथा निजाम, निज़ाम द्वारा इस्लाम नगर का घेरा

- 13 मार्च 1723 ई. को मालवा में जब निजाम ठहरा हुआ था, उस समय दोस्त मोहम्मद खान उनसे मिलने आया था।
- यथार्थ में निजाम दोस्त मोहम्मद खान को भोपाल से निकालना चाहता था क्योंकि इन्होंने निजाम के विरुद्ध अपने भाई मीर अहमद खाँ को 500 घोड़ों और 250 ऊँट सवारों को दिलावर खाँ का साथ देने के लिए बुरहानपुर की जंग में भेजा था इसलिए वह दोस्त मोहम्मद खान से बदला लेना चाहता था।
- निजाम की सेना ने किले को हस्तगत कर लिया और दोस्त मोहम्मद खान आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार हो गया।
- निज़ाम को प्रसन्न करने के लिए उसने अपने पुत्र यार मोहम्मद खान को भेजा, यार मोहम्मद खान ने क्षमा के लिए प्रार्थना की। (र्यामाल)
- भोपाल में जिस जगह निजाम ठहरे हुये थे, उस जगह को आज निजाम टेकरी के नाम से जानते हैं।

दोस्त मोहम्मद खान की मृत्यु

- इस तरह दोस्त मोहम्मद खान जो, मात्र एक तलवार लेकर मालवा आया था, 30 वर्षों के संघर्ष के पश्चात् एक सुदृढ़ राज्य की स्थापना करने में सफल रहा।
- उसकी मृत्यु 1726 ई. में 66 वर्ष की उम्र में हो गई। दोस्त मोहम्मद खान का मकबरा बाला किले में है।

स्थापत्य

❖ ढाई सीढ़ी की मस्जिद

- भोपाल की प्रथम मस्जिद।
- फतेहगढ़ किले के अन्दर।
- दोस्त मोहम्मद खान के द्वारा निर्माण।
- ❖ काजीपुरा की मस्जिद –
- इसी समय काजी मुहम्मद मुअज्जम के द्वारा निर्माण।





❖ नवाब यार मोहम्मद खान (1726–1742)

- यार मोहम्मद खान अपने पिता के शासनकाल में हैदराबाद के निजाम के यहाँ यर्गमाल (वह राजवंश का व्यक्ति, जो किसी राजा की ओर से दूसरे राजा को जमानत में दिया जाए, ताकि वह राजा अपनी प्रतिज्ञा भंग न कर सके) था।
- दोस्त मोहम्मद खान की मृत्यु के समय यार मोहम्मद खान हैदराबाद में ही थे। अतः दोस्त मोहम्मद खान के छोटे भाई सुल्तान मुहम्मद खान को गद्दी पर बैठा दिया गया।
- जब यह बात निजाम को पता चली, तो निजाम ने यार मोहम्मद खान को 'नवाब' की उपाधि तथा शाही पोशाक भेंट कर भोपाल की ओर रवाना किया।
- सुल्तान मोहम्मद खान ने स्वेच्छा से ही राजगद्दी त्याग दी तथा अब अगला नवाब यार मोहम्मद खान बना।
- शासक बनने के पश्चात यार मोहम्मद खान ने कभी भी नवाब की उपाधि धारण नहीं की।

भोपाल का युद्ध / दुरई—सराय की संधि

- इसके शासनकाल में मराठा पेशवा बाजीराव—I ने हैदराबाद के निजाम पर आक्रमण किया, निजाम अपनी सेना सहित भोपाल आया, तब दिसंबर 1737 में बाजीराव—I ने भोपाल के युद्ध में निजाम तथा भोपाल की संयुक्त सेना को पराजित किया।
- 7 जनवरी 1738 को, भोपाल के पास दोराहा/'दुरई—सराय' में पेशवा बाजीराव और जय सिंह द्वितीय के बीच एक शांति संधि 'दुरई—सराय की संधि' पर हस्ताक्षर किए गए।
- इस संधि की शर्तें पूर्णतः मराठों के अनुकूल थीं। निजाम ने संपूर्ण मालवा का प्रदेश तथा नर्मदा से चंबल के इलाके की पूरी सत्ता मराठों को सौंप दी।

निर्माण कार्य

- यार मोहम्मद खान की बेगम ममोला द्वारा 'लाल इमली मस्जिद' का निर्माण भोपाल में कराया गया।

❖ नवाब फैज मोहम्मद खान (1742–1777 ई.)

- पिता – यार मोहम्मद खान

प्रशासन / राजकाज

- वह धार्मिक प्रवृत्ति का था। राजकाज में उसकी ज्यादा रुचि नहीं थी।
- उसने प्रशासन पूरी तरह से मामोला साहिबा एवं मंत्रियों पर छोड़ दिया था।
- अपने खर्च के लिए रुपये चार लाख प्रतिवर्ष की आमदनी रियासत से अलग कर, शेष रियासत पर अपने छोटे भाई, यासीन मोहम्मद खान को मुख्तार बना दिया था।

चाचा सुल्तान मोहम्मद खान का विद्रोह एवं ईदगाह के मैदान का युद्ध

- राजगढ़ी के लिए इसका युद्ध इसके चाचा सुल्तान मोहम्मद खान के साथ हुआ था जिसमें विजयराम और हुलासराय ने नवाब फैज मोहम्मद खान की सहायता की।
- ईदगाह के मैदान में युद्ध हुआ। इस समय नवाब फैज मोहम्मद खान की सेना का सेनापतित्व सैयद मोहम्मद कर रहा था। वह इस युद्ध में मारा गया। अंततः फैज मोहम्मद खान विजयी रहा।
- किंतु नवाब यार मोहम्मद खान की विधवा पत्नी ममोला बीबी के कहने पर राहतगढ़ एवं उसके आस पास की जागीर सुल्तान मोहम्मद खान को दे दी गई। बदले में सुल्तान मोहम्मद खान ने रियासत का नवाब बनने के दावे छोड़ दिए।

रायसेन की सनद प्राप्ति

- दिल्ली से उन्हें खिताब "फैज उद्दौला—बहादुर फतेह जंग" दिया गया। साथ ही रायसेन की सनद भी दी गयी।

मराठा नियंत्रण

- 1745 ई. के आसपास मराठों ने भोपाल में प्रवेश किया एवं आष्टा, देवीपुरा, दोराहा, इच्छावर, भिलसा, शुजालपुर एवं सीहोर परगने पर अधिकार कर लिया।
- किंतु पानीपत के तृतीय युद्ध (6 जनवरी 1761 ई.) के समय उपर्युक्त सारे इलाके मराठा नियंत्रण से मुक्त हो गए।



सूफी नवाब

- इसको सूफी नवाब कहा जाता था, पानीपत -III के समय जब मराठा सेनापति सदाशिव राव भाऊ जब युद्ध के लिए जा रहा था तब उसने फैज मोहम्मद खान को मिलने बुलाया किन्तु फैज मोहम्मद खान ने अपने भाई को भेज दिया।
- परिणाम स्वरूप, सदाशिवराव भाऊ क्रोधित हो गया, और उसने कहा कि दिल्ली से लौटकर वह पठानों का घमंड तोड़ेगा।
- जिस पर नवाब ने कहा कि "देखना ईशांअल्लाह वह इधर लौट ही न सकेगा" और इस युद्ध में सदाशिवराव भाऊ की मृत्यु हो गयी।

❖ नवाब हयात मोहम्मद खान (सन् 1778–1808)

- पिता – यार मोहम्मद खान

प्रतिरोध

- हयात मोहम्मद खान 30 जनवरी 1778 ई० (1192 हिजरी) मसनद पर बैठे। उनका प्रतिरोध मरहूम नवाब की पत्नी सालेहा बेगम ने किया।
- माँजी मामोला के समझाने पर सालेहा बेगम ने हयात मोहम्मद खान को उत्तराधिकारी मान लिया।

प्रशासनिक शक्तियां और सहायक

- रियासत का काम माँजी मामोला ही देखती रहीं। जल्द ही हयात मोहम्मद खान ने सारी शक्तियाँ अपने हाथ में ले ली।
- 13 नवंबर 1780 को फौलाद खान की हत्या कर दी गयी और छोटे खान को माँजी ममोला की सलाह पर दीवान रियासत बनाया गया।
- इनके शासन काल पर अनेक दीवानों और मंत्रियों का प्रभाव रहा जिनमें अमीर मोहम्मद खान, हिम्मत राम, पत्नी अस्मत बेगम, वजीर मोहम्मद खान, लाला केसरी कायस्थ, यासीन मोहम्मद खान आदि प्रमुख थे।

कर्नल गोडार्ड की यात्रा

- इसके समय कर्नल गोडार्ड बंगाल के रास्ते 2 सितंबर 1777 ई. के आस-पास भोपाल पहुँचा, हयात मोहम्मद खान ने कर्नल गोडार्ड का स्वागत किया।

पिण्डारियों से युद्ध

- एक बार भाऊराव मराठा एवं पिण्डारियों ने हमला कर कुछ स्थानों पर आग लगा दी थी। जिसके जवाब में छोटे खाँ ने अपनी फैज लेकर 400 पिण्डारियों को गिरफ्तार कर लिया।
- सरदार दोस्त मोहम्मद खाँ के अन्य पुत्र शरीफ मोहम्मद खाँ ने किला गिन्नौर पर कब्जा कर लिया। किंतु हयात मोहम्मद खान के द्वारा भेजी गई सेना से पराजित हो गया।
- शरीफ मुहम्मद खान ने दूसरी बार भोपाल पर आक्रमण किया परन्तु दीवान छोटे खाँ ने अपने साथियों के साथ मिलकर इसे पराजित किया। (फंदा की जंग)

पठानों का दमन

- छोटे खाँ ने पठानों को दबाने की कोशिश की जिसके कारण पठान इनके विरुद्ध हो गए और उन्होंने हयात मोहम्मद खाँ को मारने की योजना बनाई।
- निजात मोहम्मद खान ने नवाब पर हमला कर दिया किंतु नवाब के अंगरक्षक परसराम ने उन्हें बचा लिया और निजात मोहम्मद खान का वध कर दिया।

दीवान छोटे खाँ

- दीवान छोटे खाँ ने शहर की दीवार को मजबूत किया और कई बुर्ज बनवाए।
- उसने एक पुल भी सन् 1792 ई. में बनवाया, जो पुल पुख्ता कहलाता है।
- 1794 ई. में फतेहगढ़ किले की टूट-फूट की मरम्मत करवाई और वहाँ अपना एक महल भी उन्होंने बनवाया।





❖ नवाब गौस मोहम्मद खान (1808–1827 ई.)

- गौस मोहम्मद खान नवाब बने, उस समय भी वज़ीर मोहम्मद खान वास्तविक शासक था। गौस मोहम्मद खान सभी शक्तियाँ अपने हाथ में लेना चाहता था।
- 1809 ई. में नागपुर सेना का सेनापति सादिक अली जिसने चौनपुर बाड़ी की घेराबंदी की थी, को गौस मोहम्मद खान ने भोपाल आने और वज़ीर मोहम्मद खान को निष्कासित करने को कहा।

वज़ीर मोहम्मद खान की ज्यादतियाँ

- वज़ीर मोहम्मद खान उस समय गिन्नौरगढ़ से अचानक आया। वज़ीर मोहम्मद खान ने गौस मोहम्मद खान पर दबाव डालकर कुछ व्यक्तियों लालजी मुस्तफा, लाला रूपचंद, को हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया। बकशी बेनीलाल और मुंशी सूरज मल को बंदूक से उड़वा दिया और दो ब्राह्मणों को गाय का रक्त पीने हेतु दबाव डलवाया।
- एक वर्ष बाद वज़ीर मोहम्मद खान ने सादिक अली द्वारा विभिन्न या विजित सारे इलाके पुनः हस्तगत कर लिए। साथ ही अमीर खाँ पिंडारी द्वारा सागर के निकट नागपुर पर हमले में भी शामिल हो गया। यह अभियान सफल रहा।

भोपाल पर सात बड़े हमले

प्रथम आक्रमण –

- सन् 1812 ई. में सिंधिया एवं नागपुर के भोंसलों ने संयुक्त रूप से भोपाल पर आक्रमण किया।
- मराठे, बहुत प्रयासों के बाद भी भोपाल पर अधिकार न कर सके।

द्वितीय आक्रमण –

- जगुआ बापू ने किले की उत्तरी दीवार की ओर से आक्रमण के समय रामलाल ने अचानक आक्रमण करने की सोची।
- वज़ीर मोहम्मद खान ने जब यह देखा कि शत्रु की दो बटालियन वज़ीरगंज में प्रवेश कर रही है, उन पर बंदूकें चला दी। भीषण संघर्ष के बाद अंत में शत्रु सेना को पीछे लौटना पड़ा।

तृतीय आक्रमण –

- पीर गेट पर जगुआ बापू ने अपनी संपूर्ण सेना से बहुत अधिक दबाव बढ़ा दिया था। वज़ीर मोहम्मद खान ने अपनी सुरक्षित फौज के साथ आक्रमण किया।

चौथा आक्रमण –

- एक दिन वज़ीर मोहम्मद खान और नवाब गौस मोहम्मद खान, सूफी संत मस्तान शाह को देखने बाहर गए।
- वे दस हजार आदमियों एवं 5000 घुड़सवारों से घिर गए। वज़ीर मोहम्मद खान ने उन्हें पारजित करने में अद्भुद साहस दिखाया।

पाँचवा आक्रमण –

- पाँचवा आक्रमण अट्टा शुजा खान की ओर हुआ, दूसरे दिन जब जगुआ बापू की सेनाएँ छोटा तालाब के निकट पहुँची और फिर बुर्ज (Bastion) के निकट, तब भोपाल की सेनाओं ने बारूदी सुरंग में आग लगा दी, और जगुआ बापू की सेना पर आक्रमण कर दिया। बहुत से सैनिक मारे गए और शत्रु ने अपनी सेनाएँ हटा लीं।

छठवाँ आक्रमण –

- वज़ीर मोहम्मद खान मराठों के लंबे धेरे से परेशान हो चुका था परन्तु बाबा मस्तान शाह ने कहा कि तुम लड़ाई जारी रखो ईश्वर फिर से तुम्हारे साथ होगा।
- इस समय पुराने किले का एक रक्षक डोंगरसिंह शत्रु से मिल गया। शत्रु की सेना के आदमी लाभ उठाकर फैज़ बहादुर खान के मकबरे स्थित कमला पार्क में घुस आए।
- वज़ीर मोहम्मद खान ने डटकर मुकाबला किया और उन्हें पीछे धकेल दिया।

सातवाँ आक्रमण:-

- अब तक भोपाल में बारूद की कमी हो गई थी। इसी समय नथू पिंडारा सहायता के दूत के रूप में बारूद, आटा और तंबाकू लेकर आया, बारूद आते ही भोपाल के सैनिकों में फिर से वीरता जाग उठी। नए जोश के साथ भोपाल की सेनाओं ने युद्ध किया।
- इन युद्धों के बाद नवाब गौस मोहम्मद खान की राज्य में रुचि समाप्त हो गई और वज़ीर मोहम्मद खान के हाथ में शक्ति और सत्ता दोनों आ गई।





❖ नजर मोहम्मद खान (सन् 1816–1819 ई.)

- इन्होंने 1818 में अंग्रेजों से रायसेन की संधि की जिसके तहत अब भोपाल अंग्रेजों का संरक्षण राज्य बन गया।
- नजर मोहम्मद का निकाह गौस मोहम्मद खान की पुत्री गोहर बेगम से हुआ, जिन्हे बाद में कुदसिया बेगम के नाम से जाना गया।

पिण्डारियों के विरुद्ध अभियान

- सन् 1817 ई. के अन्त में लॉर्ड हेस्टिंग्स ने पिण्डारियों के विरुद्ध अभियान की अनुमति प्राप्त कर ली। इस संदर्भ में उसने तुरंत ही भारत के स्थानीय प्रमुखों से बातचीत शुरू कर दी। नजर मोहम्मद खान ने पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया।
- पिण्डारियों के विरुद्ध जब अंग्रेजों का युद्ध खत्म हुआ तब पिण्डारी नेता नामदार खान तथा अन्य एवं अंग्रेजों के मध्यस्थिता करने एवं पिण्डारियों द्वारा अच्छे व्यवहार किए जाने की गारंटी नजर मोहम्मद खान ने दी।

रायसेन की संधि

- 26 फरवरी 1818 ई. में एक संधि हुई जिसकी पुष्टि लखनऊ में गवर्नर जनरल के हस्ताक्षर के साथ 8 मार्च 1818 ई. को की गई।
- ये संधि रायसेन में हस्ताक्षरित हुई जिस पर केटन इस्टीवर्ड, करम मोहम्मद खान बहादुर एवं शेहजाद मसीह के हस्ताक्षर थे एवं मोहर थी।
- इस्लामनगर का किला सिंधिया के हाथ से निकालकर नजर मोहम्मद खान के अधिकार में दे दिया गया।

संधि के प्रावधान

- कम्पनी और नवाब के मित्र और शत्रु समान रहेंगे।
- कम्पनी भोपाल रियासत की सीमा की शत्रुओं से रक्षा की जिम्मेदारी लेती है।
- नवाब व उसके वारिस ब्रिटिश सरकार के साथ 'अधीनस्थ अलगाव' (Subordinate–Non-Coperation) की नीति कायम रखते हुये, अधीनता को स्वीकारेंगे एवं दूसरे राज्यों व उनके नवाबों से कोई संबंध नहीं रखेंगे।
- बिना इजाजत या बताये हुए किसी भी राज्य से किसी भी प्रकार का कोई संबंध नहीं रखेंगे और आवश्यक पत्र व्यवहार, मित्रता अपने पड़ोसी ज़मीदारों अथवा छोटे मुद्दों पर पत्र व्यवहार कर सकेंगे।
- नवाब व उनके वारिस किसी अन्य राज्य पर हमला नहीं करेंगे विवशतापूर्वक अगर कोई विवाद हो भी जाता है तो इसकी जानकारी देंगे व इसका फैसला ब्रिटिश सरकार पर छोड़ देंगे।
- भोपाल राज्य, एक सेना टुकड़ी ब्रिटिश सरकार की सेवा में देगी और आवश्यकता होने पर भोपाल की फोर्स, ब्रिटिश आर्मी के अधीन आ जायेगी। अंग्रेज़ इसके प्रशासन में साथ देंगे।
- ब्रिटिश सिपाही हमेशा भोपाल की सीमा में आ सकते हैं और आने पर यह ध्यान रखेंगे कि यहाँ कि फसलें व खेतों को नुकसान न पहुँचे। आवश्यकता पड़ने पर नवाब व उनके वंशज इनके ठहरने की व्यवस्था करेंगे।
- भोपाल नवाब ब्रिटिश सरकार के सिपाहियों के लिये खान–पान की व्यवस्था में सहयोग देंगे। यह माल भोपाल नवाब की सीमा से बगैर चुंगी कर के आएंगे जाएंगे।
- भोपाल नवाब व उनके वंशज यहाँ के पूर्ण शासक रहेंगे और ब्रिटिश सरकार की कोई दखल अंदाजी नहीं रहेगी तथा उनके कानून यहाँ लागू नहीं होंगे।
- नवाब के व्यवहार एवं सेना के खर्च को ध्यान में रखते हुये नवाब व उनके वंशजों को पाँच महाल आष्टा, इच्छावर, सिहोर, दौराहा और देवीपुरा दिए जाते हैं।

संधि का परिणाम –

- संधि से पूर्व नजर मोहम्मद खान के अधिकार में मात्र किला था। लेकिन संधि से वह रियासत का स्वामी बन गया।
- पूर्व के समय राजस्व से प्राप्त आय एक लाख रुपये से कुछ ही ज्यादा थी और अब राजस्व की आय बढ़कर 15 लाख रुपये हो गयी और राज्य समृद्ध हो गया।
- भोपाल अब अंग्रेजों का पूर्ण समर्थक और सहायक राज्य बन गया।
- 1819 में नजर मोहम्मद खान इस्लामनगर में दुर्घटनावश मारा गया।
- नजर मोहम्मद खान की मृत्यु के पश्चात अब भोपाल का शासन नजर मोहम्मद की पत्नी गोहर बेगम के हाथों में आ गया तथा यहाँ से बेगमों का शासन प्रारम्भ हुआ।





❖ कुदसिया बेगम (1819–1837)

- यह भोपाल की प्रथम महिला शासिका बनी।
- उपनाम – गोहर बेगम
- कुदसिया बेगम ने पर्दा प्रथा को त्याग कर स्वतन्त्र रूप से शासन प्रारम्भ किया।
- वर्ष 1877 में, उन्हें 'ऑर्डर ऑफ द इंपीरियल क्रॉस' के साथ सम्मानित किया गया।

जन कल्याणकारी कार्य

- सबसे महत्वपूर्ण कार्य भोपाल में जल स्रोतों का निर्माण था।
- कुदसिया बेगम ने भोपाल में जर्मन इंजीनियर डेविड कुक की मदद से शहर में पानी की पाइप लाइन बिछाकर पंपिंग स्टेशन का निर्माण करवाया।



धार्मिक कार्य

- कुदसिया बेगम ने धार्मिक कार्यों हेतु दान दिये तथा भोपाल की प्रमुख ऐतिहासिक इमारत जामा मस्जिद का निर्माण करवाया। इस मस्जिद का निर्माण कार्य 1835 से 1857 ई. तक चला। (एक फ्रेंच यात्री लुई रुजलेट ने जामा मस्जिद के सौन्दर्य का विस्तृत विवरण दिया।)
- कुदसिया बेगम ने भोपाल के हज यात्रियों के लिये मकान एवं मदीना में भी इमारतों का निर्माण करवाया था।

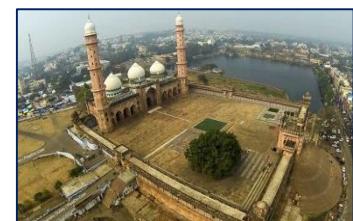
स्थापत्य कार्य

- जामा मस्जिद, गोहर महल, शौकत महल इमारतों का निर्माण करवाया।

स्थापत्य

♦ भोपाल की जामा मस्जिद –

- लाल बलुआ पत्थर से निर्माण
- दिल्ली की जामा मस्जिद के समान ही चार बाग पद्धति पर आधारित।
- इस जामा मस्जिद का निर्माण परमार राजा शालमाली द्वारा निर्मित सभा मण्डल के स्थान पर की गयी। इसकी जानकारी सुलतान जहां बेगम की हायते कुदसी में है।
- इस मस्जिद की प्रशंसा फ्रेंच यात्री लुई रुजलेट ने की।



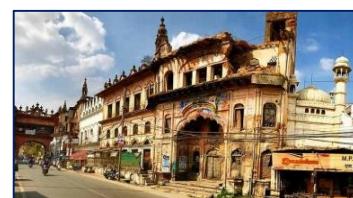
♦ गोहर महल – भोपाल।

- अपने उपनाम गोहर के नाम पर नामकरण।
- इण्डो – इस्लामिक स्थापत्य का प्रतीक।
- कुदसिया बेगम का निवास स्थान।
- इसमें सार्वजनिक दरबार लगाया जाता था।



♦ शौकत महल – भोपाल

- यह इस्लामिक तथा यूरोपियन शैली में निर्मित है।



❖ जहाँगीर मुहम्मद खाँ (1837 – 44)

- इन्होंने भोपाल में ब्रिटिश आर्मी के लिए जहाँगीराबाद की स्थापना की।
- सन् 1842–43 ई. में बुंदेलों द्वारा विद्रोह कर दिये जाने पर तत्कालीन नवाब जहाँगीर मोहम्मद खान स्वयं विद्रोहियों को पकड़ने और उन्हें समाप्त करने के लिये देवरी के निकटवर्ती क्षेत्र में गया।
- जहाँगीर मुहम्मद खान का विवाह नजरमुहम्मद तथा कुदसिया बेगम की पुत्री सिकंदर जहां बेगम से हुआ।
- शीघ्र ही जहाँगीर मुहम्मद खान की मृत्यु हो गयी तथा अब शासक सिकंदर जहां बेगम बन गयी।





❖ शाहजहां बेगम (1844–60)

- 1844 ई. को जहाँगीर मोहम्मद खान की 27 वर्ष की अल्प आयु में मृत्यु हो जाने के बाद उसकी 7 वर्षीय पुत्री शाहजहां बेगम को उसकी माता सिकन्दर बेगम की प्रतिशासन व्यवस्था (रीजेंसी) के अधीन रियासत का प्रमुख घोषित किया गया।

❖ सिकंदर जहाँ बेगम (1844 – 68) - भोपाल रियासत का स्वर्ण युग

- मूल नाम — मोती
- 1857 की क्रांति में अंग्रेजों का साथ दिया था, परिणामस्वरूप 1860 को भोपाल में एक दरबार आयोजित किया गया इस दरबार में केटन जे. डी. कनिंघम ने सिकन्दर जहाँ बेगम को रियासत का वास्तविक शासक स्वीकार किया और उन्हें रियासत की समस्त शासन शक्तियों का उपयोग करने की अनुमति दे दी।
- 1861 ई. में भारत के वायसराय केनिंग द्वारा जबलपुर में एक दरबार का आयोजन किया तथा इसमें सिकंदर जहाँ बेगम को आमंत्रित कर सम्मानित किया गया।
- नवंबर 1861 में, बेगम को इलाहाबाद में स्टार ऑफ इंडिया का सर्वोच्च सम्मान दिया गया।
- 1863 में हज जाने वाली पहली भारतीय शासक बनी।
- सिकंदर जहाँ बेगम के शासनकाल को भोपाल का स्वर्णकाल कहा जाता है।

कार्य

1. सैन्य सुरक्षा

- सिकन्दर जहाँ बेगम ने भोपाल रियासत की सेना में स्थायित्व, अनुशासन और प्रशिक्षण का समावेश करके उसे उच्चकोटि की सैन्य शक्ति के रूप में स्थापित किया।
- उन्होंने अपने राज्य की सीमाओं में दीवार व खम्भों का निर्माण करा कर राज्य की सीमाओं को सुरक्षित किया।
- सिकन्दर बेगम ने एक पुलिस बल का भी गठन किया और उसे रियासत के प्रत्येक गाँवों में नियुक्त किया।

2. प्रशासन

- उन्होंने सर्वप्रथम राज्य को तीन जिलों और 21 परगनों में विभाजित किया, इनमें प्रत्येक जिले में एक नजीम और उनके अधीन आमिल और थानेदारों की नियुक्ति की।
- लगान वसूल करने का नया तरीका खोजा। सिकन्दर बेगम ने लगान वसूल करने के लिये 50 घुड़सवार अधिकारी और 50 पैदल अधिकारियों की नियुक्ति की।
- 1847 में मजलिस—ए—शोरा (विधायिका) प्रारंभ की। इसमें राज्य के कुलीन बुद्धिजीवी, विभिन्न क्षेत्रों, जातियों, से संबंधित सदस्य होते थे, जो राज्य के लिये कानूनों व नियमों की सिफारिश करते थे साथ ही रियासत के प्रमुख मुद्दों पर बहस व विचार विमर्श करते थे।
- भोपाल राज्य का पहला सर्वेक्षण कराया।
- राज्य के समस्त प्रशासनिक गतिविधियाँ और नियमों को लिपिबद्ध कराया और साथ ही इतिहास लेखन के लिये एक पृथक दफ्तर निर्मित किया।
- उनके द्वारा भोपाल का एक निजी कोष और एक टकसाल स्थापित किया गया जिसमें, भोपाल राज्य के सिक्के ढलवाये जाते थे।
- सिकन्दर बेगम ने भोपाल में डाक व्यवस्था आरंभ की, परिणामतः रियासत भोपाल भारत के समस्त महत्वपूर्ण स्थानों से जुड़ गया और रियासत का अंग्रेजों व अन्य राज्यों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुआ।

3. न्याय व्यवस्था

- उन्होंने एक सुदृढ़ न्यायव्यवस्था स्थापित की। जिसमें आधुनिक प्रकार की अदालत होती थी, न्यायधीश होता था और वकील होते थे तथा न्याय का आधार मुस्लिम और हिन्दू नियमों के अनुसार होता था।
- लाला किशन राम (सिरोंज के रहने वाले थे) को न्याय विभाग और राजस्व विभाग का मंत्री नियुक्त किया और उन्हें राजा की उपाधि दी।
- कोर्ट ऑफ अपील स्थापित किया।

4. शिक्षा संबंधी

- मुख्यतः महिलाओं और लड़कियों के लिये शिक्षा की ओर ध्यान दिया।





- उन्होंने यमन, अरब से शिक्षकों को आमंत्रित किया और उन्हें यहाँ घर व जागीर दी तथा उन्हें रियासत में शिक्षा देने का कार्य किया गया।
- बालिका शिक्षा के लिए विकटोरिया विद्यालय प्रारंभ किया।
- सिंकंदर जहाँ बेगम ने रियासत के समस्त परगने में उर्दू तथा हिन्दी के मदरसे स्थापित किए।
- 1860 में सिकन्दर जहाँ बेगम ने सुलेमानिया हाईस्कूल की स्थापना की।

5. स्वास्थ्य संबंधी

- 1854 में, सिकंदर बेगम ने एक 'चिकित्सा विभाग' स्थापित किया।
- 'योग्य यूनानी चिकित्सा अधिकारी' नियुक्त किया गया।
- भोपाल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से हकीमों को बुलाया।

6. 1857 विद्रोह

- इसी समय 1857 में फाजिल मोहम्मद खान और आदिल मोहम्मद खान ने 'राहतगढ़' में जबकि दो सैनिक अधिकारियों वली मोहम्मद और महावीर ने सीहोर में विद्रोह किया था।
- अंग्रेजों की सहायक, राहतगढ़ व सीहोर में विद्रोह दबाने में अंग्रेजों की सहायता की।

7. निर्माण कार्य

- सिंकंदर बेगम के पति जहाँगीर मोहम्मद खान ने जहाँगीरीबाद नगर, नूरबाग मस्जिद का निर्माण कराया।
- संडकों का निर्माण, मोती मस्जिद व मोती महल का निर्माण किया, साथ ही हिन्दू और मुस्लिम के लिये सरायों का निर्माण कराया।
- सिकन्दर बेगम के उपरोक्त प्रशासनिक व सामाजिक सुधारों ने रियासत को एक शक्तिशाली राज्य के रूप में स्थापित किया।

स्थापत्य

❖ मोती महल –

- सिकंदर जहाँ बेगम का निजी निवास तथा प्रशासनिक दफ्तर
- मोती महल का दक्षिणी द्वार बाबे सिकंदरी कहलाता

❖ मोती मस्जिद –

- दिल्ली की जामा मस्जिद से प्रेरित लेकिन आकार में यह उससे छोटी है।
- मस्जिद की लाल बलुआ पत्थर से निर्मित दो मीनारें हैं, जो ऊपर नुकीली हैं और सोने के समान लगती हैं।
- मुगल स्थापत्य शैली चारबाग का प्रयोग किया गया है।



1857 ई. की क्रांति एवं भोपाल रियासत

गढ़अंबापानी में विद्रोह

- रायसेन जिले की सिलवानी तहसील में गढ़अंबापानी के जागीरदार फाजिल मोहम्मद खान तथा आदिल मोहम्मद खान ने महान् क्रांति प्रारंभ की।
- 8 जुलाई 1857 ई. तक फाजिल मोहम्मद खान तथा आदिल मोहम्मद खान अवसर मिलते ही सीहोर को लूटने या इसके बाद सीहोर में अधिकारियों के बंगलों के पास रखी चार तोपों पर कब्जा करने की योजना बना चुके थे।
- इस प्रयोजन के लिये दोनों भाइयों के समर्थकों ने सीहोर स्थित सैनिकों के साथ साजिश शुरू कर दी।
- विद्रोह के डर से सीहोर के पॉलिटिकल एजेंट मेजर रिचर्ड्स ने 20 यूरोपियनों के साथ सीहोर छोड़ दिया।
- अंग्रेजों की इस संकटपूर्ण स्थिति के समय सिकन्दर बेगम ने और अंग्रेज अधिकारियों को शरण दी और उन्हें खाद्यान्न तथा चारा दिया और सागर तथा बुन्देलखण्ड में हो रहे विद्रोह को दबाने के लिये सैनिक टुकड़ियाँ भी भेजी।
- फाजिल मोहम्मद खान ने गढ़ी अम्बापानी पर हमला करने की योजना बनाई। इस प्रयास में वह पूर्णतः सफल रहा और गढ़ी अम्बापानी उसके कब्जे में आ गई।





- 29 सितम्बर 1857 ई. को आदिल मोहम्मद खान पठारी के नवाब हैंदर मोहम्मद खान पर आक्रमण किया एवं उसे जीता, पठारी की गढ़ी में पहुँचने के बाद फाजिल मोहम्मद ने वहाँ एक थाना स्थापित किया।

सीहोर में विद्रोह

- 5 अगस्त 1857 ई. को सीहोर में विद्रोह हो गया और सैन्य दल ने सीहोर छावनी पर कब्जा कर लिया। बंगलों, डाकघर तथा चर्च की लूटपाट की।
- इसके साथ ही सीहोर के रिसालदार ने भी 6 अगस्त को खुलेआम विद्रोह कर दिया, तथा चारों ओर तोपों पर कब्जा कर लिया।
- भोपाल की सिख सेना निरंतर अंग्रेजों की सहायता कर रही थी। वे सिकंदर जहाँ बेगम के पूरे-पूरे भक्त थे। अतः महावीर और वलीशाह ने सिक्खों का कत्ल करना शुरू कर दिया।
- महावीर और वलीशाह ने एक नवीन क्रांतिकारी सेना को संगठित कर सीहोर में एक नई हुकूमत की नींव डाली जिसका नाम "सिपाही बहादुर" रखा गया।

क्रांति का दमन

- भोपाल की बेगम ने विद्रोह का दमन करने के भरसक प्रयास किये और ब्रिटिश शासन को सभी संभव सहायता प्रदान की।
- फाजिल मोहम्मद तथा आदिल मोहम्मद की जागीर अम्बापानी जब्त कर ली गई और वहाँ एक नायब बख्शी तैनात किया गया।
- दिसम्बर 1857 ई. में ह्यूरोज ने विद्रोह को दबाने के लिये कमान संभाली। 15 जनवरी 1858 ई. को सीहोर पहुँचकर उसने एक सौ उन्चास विद्रोहियों को गोली मार देने की सजा दी।
- अगले दिन ह्यूरोज सीहोर से राहतगढ़ के लिये रवाना हुआ। फाजिल मोहम्मद के समर्थकों ने उसे आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास किया। किन्तु 28 जनवरी 1858 ई. तक राहतगढ़ को घेर लिया गया।
- फाजिल मोहम्मद को तुरन्त राहतगढ़ के किले के प्रवेश द्वार पर फौसी पर लटका दिया गया। किन्तु आदिल मोहम्मद अपने अनेक समर्थकों के साथ अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिये बचा रहा। उसने तात्या टोपे एवं रानी लक्ष्मी बाई के साथ मिलकर अंग्रेजों से संघर्ष किया।
- सितम्बर 1859 ई. के अंत में आदिल मोहम्मद के शेष सभी साथियों ने ब्रिटिश कप्तान के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। किन्तु आदिल मोहम्मद फिर से बचकर भाग गया।

◆ शाहजहाँ बेगम – (1868 – 1901)

- शाहजहाँ बेगम जहांगीर मोहम्मद खान और सिकंदर बेगम की बेटी थीं।
- सिकन्दर बेगम की मौत के बाद भोपाल की रियासत शाहजहाँ बेगम ने संभाली।

कार्य

1. कुशल शासन

- शाहजहाँ ने राज्य परिषद् को अब ज्यादा विस्तृत और व्यापक कर दिया था साथ ही इसके कार्यक्षेत्र को भी विस्तृत कर दिया था।
- शाहजहाँ बेगम के राज्यकाल में फौज, अदालत, पुलिस, वित्त एवं राजस्व विभाग अलग-अलग कर दिये गये।
- 1876 ई. में फौजदारी, दीवानी, कानून बनाकर प्रकाशित कराये।
- राज्य की दूसरी जनगणना कराना।
- भोपाल रियासत की प्रत्येक खबर की जानकारी रखती थी। समस्त जागीरदार, महाजन, पटवारी और बालाहारियों को अपने समक्ष प्रस्तुत कर उनसे राज्य की सम्पूर्ण स्थिति ज्ञात करती थी।
- सिकन्दर बेगम द्वारा तीन हिस्सों में विभाजित राज्य को पुनः विभाजित किया और राज्य के चार भाग करे। जिसमें तहसीलों का विभाजन किया।
- थाने स्थापित किये तथा हुजूर तहसील को राजस्व मंत्री के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रखा गया साथ ही राज्य की समस्त तहसीलों की सीमाओं में बदलाव करके उन्हें नया स्वरूप प्रदान किया गया।





- "सिंह-करोही" एक नया विभाग स्थापित किया। इस व्यवस्था के अन्तर्गत भोपाल से 3 किलोमीटर के दायरे में आने वाले समस्त गाँव समाहित थे। इस व्यवस्था में इन गाँवों को आवश्यकता पड़ने पर अनाज उपलब्ध कराना था।
- भोपाल रियासत का मानचित्र बनाया गया साथ ही प्रत्येक घरानों और तहसीलों का भी पृथक-पृथक मानचित्र निर्मित किया गया।
- बेगम ने भोपाल रियासत के वनों की सुरक्षा के लिये बड़ी संख्या में अधिकारियों की नियुक्ति की।

2. न्याय तथा कानून प्रशासन

- 1876 में दीवानी-फौजदारी कानून बनाकर प्रकाशित कराये।
- "सदर-उस-सदर" की स्थापना की गई। उसका बड़ा अधिकारी "सुबक-उल-मुहम" होता था। अपने अपने क्षेत्रों में थानेदारों व नजीम व तहसीलदारों को न्याय व्यवस्था को दृढ़ बनाने के लिये आदा दिये गये थे।
- राज्य में कई जगहों पर थाने स्थापित किये और उनमें बड़ी संख्या में लोगों को नियुक्त किया।
- शाहजहाँ बेगम ने 'तान्जीमात-ए-शाहजहाँनी' नामक नया विभाग बनाया। इस विभाग के अन्तर्गत राज्य को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये कानूनों का निर्माण किया जाता था। साथ ही इन कानूनों को राज्य के छापेखानों में छपवाया जाता था।

3. वित्तीय प्रशासन

- नवाब सिकन्दर जहाँ बेगम ने खजाने तोशाखाना के जेवरात जिनकी कीमत अदा नहीं की गई थी, उन्हें शाहजहाँ बेगम ने नवाब बनते ही वापस कर दिये।
- निजी जायदाद पर बकाया भुगतान करके रियासत के खजाने और वित्तीय स्थिति पर नियंत्रण किया।
- भूराजस्व की दर अन्न की किस्म के आधार पर निर्धारित की।
- शाहजहाँ बेगम ने भी अपने सिक्के ढलवाये व एक नया सिक्का 'शाहजहाँनी' चलाया।
- शाहजहाँ बेगम ने अपने कार्यकाल में पहले से जारी तांबे के सिक्के बंद करके चांदी के सिक्के जारी किये।
- सरकारी भूराजस्व एकत्र करने वाले अधिकारियों अर्थात् मुस्ताजिरों के सहयोग से एक व्यवस्था बनाई गई, जिसमें भूमि को 18 प्रकार से विभाजित किया गया और भूराजस्व की दर अन्न की किस्म के आधार पर निर्धारित की गई।
- शाहजहाँ बेगम ने शाहजहानाबाद में कपास कारखाना स्थापित किया इसके परिणाम स्वरूप बड़ी संख्या में रोजगार सृजित हुए एवं कोष में भी वृद्धि हुई।

4. परिवहन-संचार

- भोपाल-इटारसी रेल लाइन (1884 ई.) की स्थापना के लिये पाँच लाख खर्च किये।
- भोपाल-उज्जैन रेलवे लाइन 1896 ई. में प्रारंभ की।
- शाहजहाँ बेगम के शासनकाल में हेनरी डेली की सहायता से भोपाल में रेलवे लाइन बिछाई गयी।
- 1882 ई. में भोपाल में डाक व्यवस्था भी शुरू की।
- सरकार द्वारा स्थापित डाक तार कार्यालयों की संख्या में वृद्धि की।
- भोपाल राज्य के पहले डाक टिकट जारी किए गए थे।
- तोपखानों में बैलों के स्थान पर घोड़ों का इस्तेमाल शुरू किया।

5. स्वास्थ्य

- हर मुहल्ले में चिकित्सक की पदस्थापना की।
- 1878 ई. में मदरसा 'ड्यूक आफ एडिनबरा' तथा 'प्रिंस आफ वेल्स अस्पताल' बनवाये।
- 1894 ई. में 'लेडी लेंस डाउन मेटरनिटी अस्पताल' शुरू कराया।

6. अन्य कार्य

- गौहर-ए-इकबाल की रचना जिसे सी.एच.पैन ने 'An Account of my life' के नाम से अनुवादित किया
- ताज-उल-मस्जिद (बड़ी), ताजमहल लालकोठी, नूरमहल आदि बनवाये।
- कई पुल बनवाये जिनमें "शाहजहाँनी पुल" प्रसिद्ध है। और कई घाट बनवाये जिसमें "शाहजहाँनी घाट" प्रसिद्ध है।

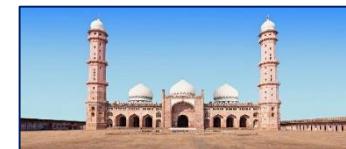


- नवाब शाहजहाँ ने रियासत में कई जन कल्याण के कार्य किये उन्होंने बड़ी संख्या में विद्यालय बनवाये, बाग बनवाये।
- नवाब शाहजहाँ बेगम ने भोपाल रियासत को आधुनिक रूप प्रदान किया साथ ही सुधारों का वह इतिहास रचा जो रियासत के पूर्ववर्ती नवाबों के काल में नहीं हुआ।

स्थापत्य

♦ ताज – उल – मस्जिद

- शाहजहाँ बेगम के समय निर्माण कार्य प्रारम्भ तथा धन के अभाव के कारण इसका निर्माण कार्य 1958 में पूरा कराया गया
- भोपाल की सबसे बड़ी मस्जिद।
- प्रति वर्ष तीन दिवसीय तबलीगी इजितमा का आयोजन होता है।



♦ ताजमहल –

- प्रारम्भिक नाम राजमहल
- बेगम का निवास स्थल



♦ लाल कोठी –

- मप्र का राजभवन है, वर्तमान मप्र का राजभवन

♦ अन्य –

- भोपाल में शाहजहाँनाबाद मोहल्ला बसाया।
- नूर मस्जिद, बेनजीर मंजिल, नूर महल, निशात मंजिल, नवाब मंजिल, कसर-ए-सुल्तानी पैलेस (जो अब सैफिया कॉलेज है) आदि बनवाई।
- इंग्लैंड के सरे में मस्जिद का निर्माण
- इसके अलावा, उन्होंने नवाब जहांगीर मोहम्मद खान और सिकन्दर बेगम के मकबरे भी बनवाए।

❖ केखुसरो जहाँ बेगम / सुल्तान जहाँ बेगम (1901–1926)

- शाहजहाँ बेगम की पुत्री
- सुल्तान जहाँ बेगम 4 जुलाई 1901 ई. को नवाब घोषित हुई।

कार्य

1. कुशल प्रशासक

- राज्य को तीन भागों में विभाजित किया— 'निजामत-ए-जुनुब', 'निजामत-ए-मशरीक' और 'निजामत-ए-मगरीब'
- उन्होंने नगर पालिका प्रणाली की स्थापना की, नगरपालिका चुनावों की शुरुआत की।
- प्रत्येक निजामत नौ तहसीलों से मिल कर बना है और प्रत्येक निजामत 'नाजिम' की देखरेख में था जो वहाँ का राजस्व अधिकारी था।
- नाजिम का सहयोग तहसीलदार करते थे। इनके अतिरिक्त कानूनगों, पटवारी, पुलिस का थानेदार आदि रियासत के प्रमुख अधिकारी होते थे।
- नवाब सुल्तान जहाँ बेगम की तीन परिषद् होती थीं – 'इजलस-ए- कामिल', 'देओरी-ए-खास', 'वकील-ए-रियासत'
- इनके अतिरिक्त 'दफतर-ए-नजीर' होता था जो रियासत के प्रत्येक विभाग के कार्यों का लेखा जोखा रखता था।
- रियासत के खजाने के लिये पृथक कार्यालय और अधिकारी नियुक्त किये गये थे।
- नवाब सुल्तान जहाँ बेगम ने 1910 ई. में एक कार्यालय स्थापित किया जिसमें समस्त भूमि का लेखा जोखा रहता था।

2. सैन्य सुधार

- सेना विभाग में एक जनरल, एक सैन्य सेक्रेटरी, दो नाइव बख्शी और पाँच अन्य अधिकारी होते थे।
- भोपाल की सैन्य वर्दी सुखवर्दी कहलाती थी।
- भोपाल रियासत के सैन्य प्रमुख औबेदुल्ला खान (नवाब सुल्तान जहाँ बेगम के दूसरे पुत्र)थे।





3. कानून

- बेगम ने अपराधियों के उंगलियों के निशान को रखना प्रारंभ कर दिया।

4. औद्योगिक विकास

- बेगम के काल में सूती कपड़ों का निर्माण और उसकी छपाई आभूषण का निर्माण आदि कार्य होता था।
- एक शक्कर का कारखाना 'झावर' तहसील में स्थापित किया।
- इसके अतिरिक्त कई कारखाने स्थापित किये गये।
- एक आटा चक्की, भोपाल में स्थापित हुई।

5. स्वास्थ्य संबंधी

- किलेबंद शहर में उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और जल की आपूर्ति में सुधार हेतु कदम उठाए।
- इस शहर के निवासियों के लिये व्यापक टीकाकरण अभियान लागू किया।

6. नारीवाद प्रतीक

- 1904 ई. में मक्का की भी यात्रा की और 1911 ई. में यूरोप की यात्रा पर गई।
- वर्ष 1913 में उन्होंने लाहौर में महिलाओं के लिये एक मीटिंग हॉल का निर्माण करवाया।
- 1914 में 'अखिल भारतीय मुस्लिम महिला सम्मेलन' की अध्यक्षता की
- 1918 में उन्होंने 'अखिल भारतीय मुस्लिम महिला संगठन' की स्थापना की।
- महिलाओं को प्रोत्साहित करने और हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिये उन्होंने भोपाल में 'नुमाइश - मस्नुआत - ए - हिंद' (Numaish-Masnuuat-e-Hind) नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

7. शैक्षणिक कार्य

- 'अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' की चांसलर (1920 से मृत्यु तक) रहीं, मेडिकल कॉलेज व विभिन्न संस्थानों का सहयोग किया।
- उन्होंने देवबंद (उत्तर प्रदेश) में एक मदरसा, लखनऊ में नदवतुल उलूम और यहाँ तक कि मक्का, सऊदी अरब में मदरसा सुल्तानिया को भी निधि/वित्त प्रदान किया।
- लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, दिल्ली जैसे संस्थानों और बॉम्बे और कलकत्ता के कुछ प्रसिद्ध कॉलेजों ने उनसे प्रचुर अनुदान प्राप्त किया।

8. परोपकारी कार्य

- ज़रूरतमंद छात्रों की मदद के लिये उन्होंने तीन लाख रुपए की निधि के साथ 'सुल्तान जहाँ एंडोमेंट ट्रस्ट' (Sultan Jahan Endowment Trust) की स्थापना की।

9. निर्माण कार्य / स्थापत्य

- केन्द्रीय पुस्तकालय (किंग एडवर्ड म्यूजियम - 1908)
- कैसर-ए-सुल्तानी, अहमदाबाद महल,
- 'नूर-उस-सबा' महल(वर्तमान में हैरिटेज होटल है)।



केन्द्रीय पुस्तकालय

- इसका निर्माण वर्ष 1908 में किंग एडवर्ड म्यूजियम स्थापित करने के लिए करवाया था।
- उनका उद्देश्य था कि राज्य के शासकों को विभिन्न अवसरों पर मिले नजरानों एवं उपहारों को प्रदर्शित किया जा सके।
- बेगम सुल्तान जहाँ ने सांची में प्राचीन बौद्ध स्तूप के संरक्षण और संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।
- जॉन मार्शल, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक (1902 से 1928) ने बेगम सुल्तान जहाँ को अपना महत्वपूर्ण खंड "ए गाइड टू सांची" समर्पित करके अपने दान को स्वीकार किया।
- सुल्तान जहाँ ने वर्ष 1919 में वहाँ बने पुरातत्व संग्रहालय को भी वित्तपोषित किया।
- इस संग्रहालय को बाद में सांची संग्रहालय का नाम दिया गया।





❖ नवाब हमीदुल्ला खां

- सुल्तान जहां बेगम का पुत्र, आजादी के समय भोपाल के नवाब थे।
- इन्हे सुल्तान जहां ने 'इफितखार-उल-मुल्क' (देश का गौरव) की उपाधि दी।

महत्वपूर्ण कार्य

- हमीदुल्ला खां के शासन काल में एक महत्वपूर्ण कार्य 'पुरातत्त्व विभाग' की स्थापना था जिसके अन्तर्गत भोपाल रियासत के ऐतिहासिक इमारतों को संरक्षित किया गया।
- यद्यपि नवाब सुल्तान जहां बेगम के शासन काल में 'इस्लामनगर' के किले और महल को संरक्षित इमारत घोषित किया गया।
- 'भोपाल पुरातन इमारत अधिनियम 1919' के अन्तर्गत सर्वप्रथम 'साँची' को संरक्षित घोषित किया गया। इसके अतिरिक्त 'भोजपुर' को भी संरक्षित किया गया।

औद्योगिक विकास

- इसके अतिरिक्त लघु उद्योग, कुटीर उद्योग का विकास उनके शासन काल का महत्वपूर्ण कार्य था। इस हेतु 1941 ई. में एक दुकान 'रॉयल मार्केट' में स्थापित किया।
- साथ ही भोपाल में प्रचलित कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगवायी जिससे यहाँ की कलाओं को पहचान मिली।
- 1941 ई. में मीनाबाजार में और अली मन्जिल में इसी प्रकार की प्रदर्शनी आयोजित की गई।

राजनीतिक कार्य

- हमीदुल्ला खां 'चेम्बर ऑफ प्रिंसेज' के अध्यक्ष भी रहे।
- लंदन में होने वाले 'गोलमेज सम्मेलन' में भाग लिया।

स्वतंत्रता संघर्ष तथा भारत संघ में विलय

- गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट 1935 में संघीय विधान मंडलों के लिये निर्वाचन पद्धतियों के संबंध में कतिपय उपबंध थे जिनके कारण भोपाल में साम्प्रदायिक भावना उभरी।
- भोपाल की 'हिन्दू महासभा' ने मई 1937 ई. में हिन्दुओं का एक सम्मेलन करने की घोषणा की। सभा के कार्यकर्ताओं द्वारा 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' प्रारंभ कर दिया गया।
- छह व्यक्ति गिरफ्तार किए गए, छह में से 'भगवानदास राठी' नामक एक बंदी के साथ जेल में दुर्ब्यहार किए जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।
- 'स्टेट्स ऑफ इंडिया पीपुल कॉन्फ्रेंस' ने अगस्त 1937 ई. में लोगों की नागरिक स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने की निंदा करते हुये एक संकल्प पारित किया।

भोपाल प्रजामंडल

- जन आक्रोश के कारण रियासत में सन् 1938 ई. में 'राज्य प्रजा मंडल' का जन्म हुआ।
- मौलाना अबूसईद बज्मी ने एक बैठक आमंत्रित की और भोपाल के 'शाकिर अली खान' इसके संस्थापक अध्यक्ष और 'चतुर नारायण मालवीय' इसके सचिव के रूप में निर्वाचित किए गए।
- मंडल का उद्देश्य 'रियासत में उत्तरदायी शासन स्थापित करना था'।

विलयन आन्दोलन

- भारत की स्वतंत्रता पश्चात् राज्य प्रजा मंडल ने 'विलयन आन्दोलन' चालू किया।
- विलयन आन्दोलन रायसेन जिले के बरेली ग्राम से आरंभ किया गया।
- गिरफ्तार किया गया पहला व्यक्ति रत्नलाल नाहर था।

एकीकरण

- बाद में भोपाल रियासत का एकीकरण 30 अप्रैल 1949 ई. को भाग "ग" राज्य के रूप में किया गया।

मंत्रिमंडल का गठन

- 1947 में स्वतंत्र होने के पश्चात्, भोपाल राज्य का निर्णय लिया और एक मंत्रिमंडल का गठन किया जिसमें राजा 'अवधनारायण बिसारिया' को प्रधानमंत्री बनाया गया।
- विद्रोह कर रहे नेताओं को जेल भिजवा दिया जिसमें 'शंकर दयाल शर्मा' भी सम्मिलित थे।
- इन्होंने भोपाल रियासत को 01 जून 1949 को भारत संघ में विलय किया तथा इसे 'भाग-ग' में शामिल किया गया।

राज्य का पुनर्गठन

- 1956 में भाषाई आधार पर राज्य के पुनर्गठन के पश्चात् मध्यप्रदेश की राजधानी बना दिया गया।



- मध्य प्रदेश सरकार अधिसूचना नं.2477 / 1977 / सओन / दिनांक 13 सितंबर, 1972 से भोपाल जिले को सीहोर जिले से अलग कर बनाया गया।

उत्तराधिकारी

- इनकी 3 पुत्री थीं – सुल्तान, साजिदा सुल्तान और राबिया सुल्तान।
- नवाब हमीदुल्ला खां ने अपनी पुत्री आबिदा सुल्तान को उत्तराधिकारी नियुक्त किया किन्तु वे पाकिस्तान चली गयी।
- इसके पश्चात हमीदुल्ला की छोटी बेटी साजिदा सुल्तान बनी, इनका विवाह पटोंदी के नवाब इफतीखार अली खान पटोंदी से हुआ था।

भोपाल रिसायत की धार्मिक परंपराएँ – सूफीवाद

- दोस्त मोहम्मद के शासनकाल से ही भोपाल पर सूफीवाद का प्रभाव।
- दोस्त मोहम्मद खान ने सूफी संत इस्लाम शाह के नाम पर जगदीशपुर का नाम इस्लामनगर रखा तथा इस्लामनगर का किला भी निर्मित कराया।
- गौस मोहम्मद खान के शासनकाल में प्रसिद्ध सूफी संत मस्तान शाह थे।
- फैज मोहम्मद खान के समकालीन सूफी संत शालेशाह दाता की मजार बड़े तालाब के मध्य में स्थित है।
- नवाब फैज मोहम्मद खान का दादी संप्रदाय के सैयद मोहम्मद गौस कादरी के शिष्य थे, इनका मकबरा सदर मंजिल दरवाजे पर स्थित हैं इसमें स्थित मस्जिद 'ओसान बीबी का रोजा' कहलाती है।
- चिश्ती सिलसिले के सूफी अब्दुल अलीम रहमत उल्ला की दरगाह भोपाल के लालपरेड मैदान पर स्थित है।

गंगा–जमुनी तहजीब / संस्कृति

- भोपाल में शासकों की मुस्लिम संस्कृति, बहुसंख्यक जनता की हिन्दू संस्कृति में घुलमिल गई जिसे गंगा–जमुनी संस्कृति या स्थानीय रूप में भोपाली संस्कृति कहते हैं।
- भोपाल में 1708 में 1949 के दौरान लगभग 250 वर्ष मुस्लिम शासन के दौरान हिन्दू तथा मुस्लिम संस्कृतियों का साथ–साथ विकास हुआ।
- हिन्दुओं को राज्य में उच्च पद दिए गए यहाँ तक कि सर्वोच्च पद 'दीवान' का पद भी हिन्दुओं के पास रहा।
- शासकों ने हर त्यौहार का दरबार लगवाया।

भोपाल रिसायत – महिलाओं के अधिकार

- किसी भी मुस्लिम राज्य में महिलाओं को भोपाल के समान इतने अधिकार प्राप्त नहीं हुए।
- भोपाल रियासत में चार बेगमों ने लगातार शासन किया तथा पुरुष नवाबों के समय भी इनकी बेगमों का विशेष स्थान रहा है। उदाहरण – यार मोहम्मद खां की बेगम ममोला बाई।
- भोपाल की बेगमों ने राज्य को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु पर्दा का त्याग किया।
- शाहजहाँ बेगम ने महिलाओं के लिए पृथक परवीन बाजार का निर्माण करवाया।
- अंग्रेजी परंपरा के समान लेडीज क्लब की स्थापना की गई।

भोपाल रिसायत – शिक्षा

♦ सिंकंदर जहाँ बेगम

- सिंकंदर जहाँ बेगम ने रियासत के समस्त परगने में उर्दू तथा हिन्दी के मदरसे स्थापित किए।
- 1860 में सिकन्दर जहाँ बेगम ने सुलेमानिया हाईस्कूल की स्थापना की।

♦ शाहजहाँ बेगम

- उन्होंने 1860 में पहली पाठशाला शुरू की, और अपने शासनकाल के अंत तक लड़कियों के लिए दो पाठशालाएँ और 76 प्राथमिक पाठशालाएँ स्थापित की।



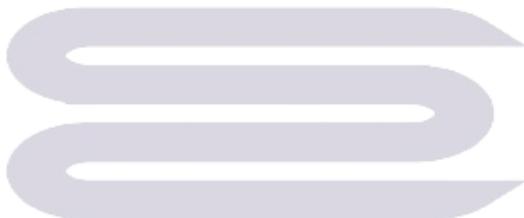
- वर्ष 1871 में, शिक्षा को और बढ़ावा देने के लिए, उन्होंने यह अनिवार्य कर दिया कि किसी भी व्यक्ति को राज्य कार्यालय में पद नहीं दिया जाएगा जब तक कि वे स्कूल या कॉलेज से प्रमाण पत्र नहीं लेते।
- शाहजहाँ बेगम ने 1891 में विकटोरिया स्कूल की स्थापना की।
- तकनीक व औद्योगिक विद्यालय प्रिंस ऑफ वेल्स स्कूल की स्थापना की गई।
- स्कूल व मदरसों की अधिक संख्या के कारण भोपाल को बगदादुलहिंद कहा गया।
- 1892 में शाहजहाँ बेगम ने लैंडविन अस्पताल में दायागिरी की शिक्षा प्रारंभ करवाई।
- 1900 हमीदिया पुस्तकालय की स्थापना 1946 में मिंटो हॉल में हमीदिया आर्ट्स एंड कॉर्मर्स इंटर कॉलेज की स्थापना की गई।

♦ सुल्तान जहान कैखुसरो बेगम

- 1905 में एक कला विद्यालय शुरू किया गया

भोपाल रिसायत – साहित्य

- शाहजहाँ बेगम के शासन काल में साहित्य का विकास प्रारंभ हुआ।
- उर्दू भाषा में पहली ऑटोबायोग्राफी लिखी थी।
- उनकी कविताओं के दो संग्रह ताल-उल-कलाम तथा दीवान-ए-शिरीन थे।
- इनमें पृथकी की उत्पत्ति, ऋतु परिवर्तन, खनिज, अर्थव्यवस्था आदि के विषय में लिखा गया है।
- शाहजहाँ बेगम के द्वारा रचित 'ताज-उल-इकबाल' भोपाल के इतिहास पर लिखित प्रथम पुस्तक है।
- तहजीव निस्वान में महिलाओं के घरेलू कार्य के संबंध में बताया गया है।
- शाहजहाँ ने महिलाओं के लिए सुधारवादी मैनुअल लिखा और वह लिखने वाली भारत में पहली महिला बन गई।
- शाहजहाँ बेगम के पति नवाब सिद्दीकी हसन को साहित्य के लिए तुर्की सुल्तान अब्दुल हमीद द्वारा 1814 ई. में तमगा-ए-मजीदी के लिए सम्मानित किया गया।
- सुल्तान जहाँ बेगम ने हायात-ए-कुदसी, हयात-ए-शाहजहाँनी, हयाते-ए-बाकी तथा अपनी आत्मकथा तीन भागों, अख्तर-ए-इकबाल, तुजुक-ए-सुल्तानी, रोजत-उस-सलिहीन लिखी।
- सुल्तान जहाँ बेगम ने शिक्षा और स्वास्थ्य पर आत्मकथाएँ और किताबें लिखीं, उदाहरण के लिए, 'बच्चों की परवरिश', 'हिजाज़- एक तीर्थ यात्रा की कहानी', 'तंदुरुस्ती', 'हिदायत तिमरदारी' आदि।





जनजातीय व्यक्तित्व एवं उनका योगदान

- स्त्रोत— मध्यप्रदेश संदेश पुस्तक, अमृत महोत्सव (वेबसाइट)।

भीमा नायक

- जन्म— 1840, पंचमोहली गांव, बड़वानी जिला।
- मृत्यु— 29 दिसंबर, 1876, कालापानी (अंडमान)।
- गिरफ्तार— 2 अप्रैल 1868, सतपुड़ा के जंगलों में मुख्खिय की सहायता से अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर पोर्ट ब्लेयर भेजा गया।
- अन्य नाम— निमाड़ का राबिनहुड़।
- संबंध— भील जनजाति, पश्चिमी निमाड़ रियासत (बड़वानी)।

योगदान एवं जीवन संघर्ष

- शोषणकर्ता सेठ साहूकारों एवं अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया एवं उन्हें लूटकर धन संपदा जनता में बांटी।
- 1857 की क्रांति को तात्या टोपे से भेंट के पश्चात् निमाड़ में प्रसारित किया। तात्या टोपे को नर्मदा पार कराने में सहायता की।
- बड़वानी जिले के 'सेंधवा' से क्रांति का नेतृत्व किया। 1840 से 1864 तक भीलों की क्रांति का निमाड़ में नेतृत्व किया।
- निमाड़ में इनके साथ खाज्या नायक, दौलत सिंह, कालू बाबा एवं अन्य प्रमुख नायक लोग थे।
- भीमा ने स्वयं प्रशिक्षित सैन्य टुकड़ी 1837 में तैयार की। इसमें भील भिलाला, मकरानी सैनिक थे। इनकी सुरक्षा के लिए 'धानाबाबावड़ी' में भीमा ने एक गढ़ी का भी निर्माण करवाया। माँ सुरसी ने 150 महिलाओं को युद्ध कला में प्रशिक्षित किया।
- भीमा ने निमाड़ व खानदेश क्षेत्रों में अंग्रेजों के लगभग 72 ठिकानों को नष्ट किया। इन्होंने छापामार युद्ध प्रणाली को अपनाया था।

अम्बापानी का युद्ध —

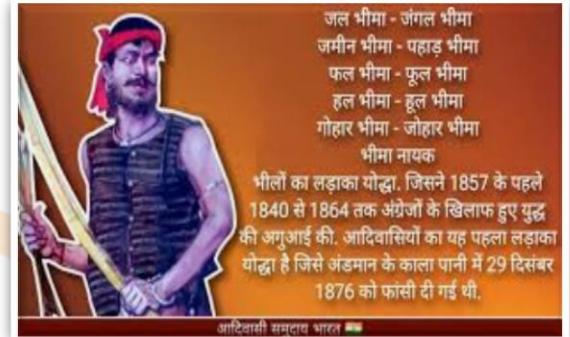
- सतपुड़ा पहाड़ियों में स्थित अम्बापानी (बड़वानी) में अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों को घेर लिया। 11 अप्रैल 1858 प्रातः काल अंग्रेजों ने आक्रमण किया।
- इसमें लगभग 1500 क्रांतिकारियों ने भाग लिया परंतु कमजोर पड़ने पर जंगल में भागे। इसमें खाज्या नायक के पुत्र दौलत सिंह नायक शहीद हो गये।
- फरवरी, 1859 में रामगढ़ दुर्ग के निकट 'पंचबावली' नामक स्थान पर भीमा नायक एवं अंग्रेजों के मध्य युद्ध हुआ।
- 16 दिसंबर 1866 को मुठभेड़ में सभी नायक पकड़े गये परंतु भीमा बच निकले।
- 2 अप्रैल 1867 को घने जंगल में सोते हुए, अंग्रेजों ने धोखे से गिरफ्तार कर लिया। इन पर देशद्रोह का मुकदमा चला एवं अण्डमान जेल में आजीवन कारावास की सजा मिली। जहाँ इन्होंने अंतिम सांस ली।

विशेष —

- 'शहीद भीमा नायक' परियोजना मध्यप्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही है।
- स्मारक— मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी ने 21 जनवरी, 2017 को मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के 'धाबा बावड़ी' गांव में 'भीमा नायक स्मारक' समर्पित किया।

टंट्या भील

- जन्म— 1842, विरी ग्राम, पश्चिमी निमाड़
- बलिदान— 4 दिसंबर 1889 फांसी (राजद्रोह के आरोप में)
- गिरफ्तार— गद्दार मानसिंह की सहायता से अंग्रेजों ने 1888–89 में गिरफ्तार किया।
- अन्य नाम— टंट्या भील, भारत का रॉबिनहुड़, निमाड़ का गौरव, जननायक
- वास्तविक नाम— तांतिया भील





- संबंध** – भील जनजाति, निमाड़ (खण्डवा)

जीवन संघर्ष एवं योगदान

- 1857 की क्रांति में निमाड़–मालवा क्षेत्र से अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया।
- सेठ–साहूकारों एवं अंग्रेजों के चंगुल से लोगों को बचाया एवं जनयोद्धा के रूप में स्वयं को स्थापित किया।
- 15 सितम्बर 1857 को महानायक तात्या टोपे से भेंट की एवं उनसे गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- टंट्या के जीवन का एकमात्र उद्देश्य शोषकों को दण्ड देना एवं गरीबों को उनका हक दिलाना था।
- महज 15 वर्ष की आयु में ही क्रांति में शामिल हुए। आदिवासी आज भी उनकी पूजा देवताओं की तरह अलौकिक शक्तियों से युक्त मानकर करते हैं।
- इस जननायक को अंग्रेजों ने गद्दार मानसिंह की सहायता से गिरफ्तार कर 4 दिसंबर 1889 को फांसी पर लटका दिया।

विशेष –

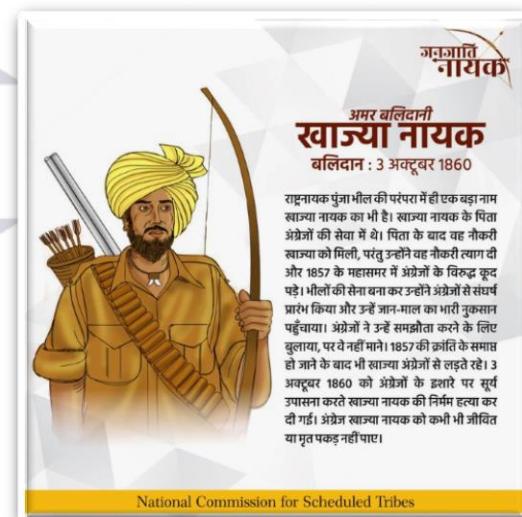
- न्यूयॉर्क टाइम्स ने उन्हें 10 दिसंबर, 1889 के अंक में 'भारत के रॉबिनहुड' की संज्ञा दी।
- मध्यप्रदेश शासन द्वारा शिक्षा एवं खेल गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले आदिवासी युवाओं को 'जननायक टंट्या भील राज्य स्तरीय सम्मान' दिया जाता है। इसमें 1 लाख रुपये एवं प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।
- खरगौन में टंट्या मामा भील विश्वविद्यालय का शुभारंभ 11 फरवरी 2024 को प्रधानमंत्री जी ने किया।
- इनके सम्मान में राज्य सरकार ने भंवरकुआ चौराहा, इंदौर का नाम बदलकर 'टंट्या भील चौराहा' कर दिया।
- प्रतिवर्ष 4 दिसंबर को टंट्या भील बलिदान दिवस मनाया जाता है।
- इनकी समाधि 'पातालपानी रेलवे स्टेशन' के निकट स्थित है।
- 4 दिसंबर 2021 को राज्यपाल मंगूझाई पटेल एवं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी ने पातालपानी में जननायक टंट्या मामा की अष्टधातु से निर्मित प्रतिमा का अनावरण किया।

खाज्या नायक

- जन्म**— सांगली ग्राम, बड़वानी, गुमान नायक के पुत्र
- बलिदान**— 3 अक्टूबर 1860
- अन्यनाम**— सेंधवा घाट का नायक, सेंधवा घाट का वार्डन (अंग्रेज)
- संबंध**— भील, जनजाति, सेंधवा (बड़वानी रियासत)

योगदान एवं जीवन संघर्ष

- 1833 में गुमान नायक की मृत्यु के पश्चात 'सेंधवा घाट के नायक' बने।
- हत्या के अपराध में अंग्रेज सरकार ने उन्हें 1850 में बंदी बनाकर 10 वर्ष की सजा दी लेकिन 1856 में ही छोड़ दिया।
- फिर अंग्रेजों ने सेंधवा घाट के वार्डन की नौकरी पर रख लिया।
- स्वाभिमानी खाज्या ने नौकरी छोड़ दी एवं 1857 में तात्या टोपे से प्रेरित होकर क्रांति में भाग लिया।
- गवालियर के महादेव शास्त्री और पुनासा के नारायण सूर्यवंशी से निमाड़ में होने वाले पत्रों के आदान–प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- खाज्या नायक के साथ 800 क्रान्तिकारियों ने भाग लिया जिसमें भील, मकरानी एवं अरब योद्धा आदि शामिल थे।
- ले. एटिकन्स और ले. पोरबिन ने 20 जनवरी 1858 में नेवली के दक्षिण पश्चिम में खाज्या के दल पर हमला किया जिसमें खाज्या पराजित हो गये।



National Commission for Scheduled Tribes





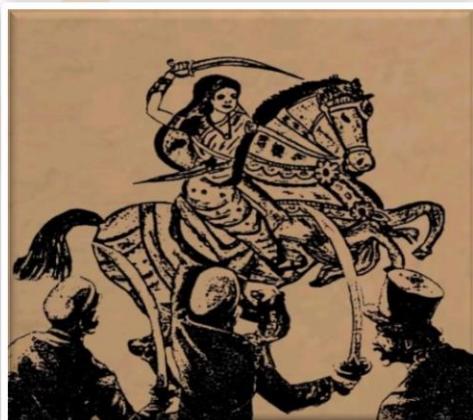
- इसके पश्चात् भीमा नायक एवं खाज्या नायक के दल एक साथ आ गए। (भीमा नायक, खाज्या के बहनोई थे।)
- 11 अप्रैल 1858 को अम्बापानी के युद्ध में इनकी संयुक्त सेना अंग्रेजों से पराजित हुई जिसमें इनका पुत्र दौलत सिंह नायक शहीद हुआ। कुछ अवधारणाएं मानती हैं कि इसी युद्ध में कर्नल जेम्स आउट्रम ने खाज्या नायक को मार दिया।
- कुछ अवधारणा मानती हैं कि अंग्रेजों ने खाज्या को न पकड़ पाने के कारण, साजिश रची। जिसमें रोहिंदीन नामक मकरानी जमादार के द्वारा, 3 अक्टूबर 1860 को स्नान उपरांत सूर्य उपासना करते समय भीमा की गोली मारकर धोखे से हत्या करवा दी।

शंकरशाह – रघुनाथ शाह एवं रानी फूलकुंवर

- जन्म – 1783, गढ़ मंडला (शंकरशाह)
- निवास – पुरवा ग्राम (जबलपुर)
- संबंध – गोंडवाना रियासत (गढ़–मंडला, जबलपुर), महाकौशल क्षेत्र जीवन संघर्ष एवं योगदान



- दोनों पिता-पुत्र रानी दुर्गावती के वशज, साहित्यकार एवं महाकौशल क्षेत्र में 1857 की क्रांति के सूत्रधार थे।
- शंकरशाह का विवाह जागीरदार लोटनसिंह की पुत्री राजकुमारी फूलकुंवर से हुआ था जिनसे पुत्र रघुनाथ शाह प्राप्त हुआ।
- अपने निवास पुरवा से ही दोनों पिता पुत्र ने स्वतंत्रता के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने के लिए 'देश प्रेम की कविताओं' के माध्यम से महाकौशल में समर्थन जुटाने के प्रयास किये।
- निवास पर ही 52वीं रेजीमेंट के सिपाहियों के साथ मिलकर पिता-पुत्र ने क्रांति की योजना बनाई। मुहर्रम के दिन छावनी पर आक्रमण करना सुनिश्चित किया।
- गद्दार खुशहाल चंद्र एवं दो जमीदारों ने अंग्रेजों को इसकी सूचना दी जिसके कारण डिप्टी कमिश्नर उनके विरुद्ध सतर्क हुआ एवं प्रमाण जुटाने लगा।
- योजना बनाकर फकीर के माध्यम से राजा से समस्त क्रांति योजना की जानकारी प्राप्त कर ली।
- फलतः 14 सितंबर 1857 को डिप्टी कमिश्नर इनके निवास पर छानबीन की जिसमें क्रांति के लिए लिखी एक कविता को आधार बनाकर पिता-पुत्र को गिरफ्तार किया।
- जबलपुर अदालत में कविता लिखकर विद्रोह भड़काने या दशद्रोह के आरोप में मृत्युदंड और फांसी पर न चढ़ाकर तोप से उड़ाने की सजा दी।
- ब्रिटिश कमिश्नर ई. क्लार्क ने 18 सितंबर 1857 को पिता व पुत्र दोनों को तोप के मुहाने से बांधकर उड़ा दिया।
- पत्नी फूलकुंवर ने अधजले अवशेषों को एकत्र कर उनका विधिवत अंतिम संस्कार किया एवं स्वयं महाकौशल से क्रांति का नेतृत्व संभाला।
- दोनों की शहादत महाकौशल में क्रांति का आधार बनी और अधिक लोगों को क्रांति के लिए प्रेरित किया।
- 52 वीं रेजीमेंट में उसी रात विद्रोह किया एवं रानी अवंतीबाई ने मंडला-डिंडोरी से विद्रोह किया।



विशेष –

- मध्यप्रदेश सरकार द्वारा 'शंकरशाह राष्ट्रीय पुरस्कार' भारतीय जनजातियों के जीवन, कला एवं परंपराओं के लेखन हेतु दिया जाता है।
- मध्यप्रदेश सरकार जनजातीय विद्यार्थियों को 10वीं एवं 12वीं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए भी शंकरशाह पुरस्कार देती है।
- 2021 में छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम बदलकर 'राजा शंकरशाह विश्वविद्यालय' कर दिया गया है।
- मण्डला मेडिकल कॉलेज का नाम 'रानी फूलकुंवर' के नाम पर रखा गया।



रानी दुर्गावती

जन्म – 5 अक्टूबर 1524, कालिंजर (वर्तमान में 500वां जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है)

बलिदान – 24 जून 1564, नरई नाला (जबलपुर)

अन्य नाम – वीरांगना दुर्गावती

समाधि स्थल – बरेला ग्राम (जबलपुर)



जीवन संघर्ष एवं योगदान

- इनके पिता शालिवाहन/कीरतसिंह चंदेल, राठ महोबा के राजा थे।
- इनका विवाह 1542 में गढ़ा मण्डला के गोंड राजा संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह के साथ हुआ।
- विवाह के 4 वर्ष बाद (1548) दलपत शाह की मृत्यु हो जाने पर राज्य की बागड़ोर रानी ने संभाली।
- पुत्र वीर नारायण की संरक्षिका के रूप में रानी ने 15 वर्ष तक कुशलतापूर्वक शासन किया।
- उन्होंने बाग, बगीचे, कुएँ, तालाब और बावड़ी का निर्माण कराया।
- जलाशय जैसे आधारताल (सेनापति के नाम पर), चेरीताल (दासी के नाम पर), रानीताल आदि बनवाये।
- उनके कार्यकाल को 'आईन-ए-अकबरी' में 'गोंडवाना का स्वर्णकाल' कहा गया। अबुल फजल ने उन्हें कुशल शासक एवं अत्यधिक सुंदर बताया। उनके शासनकाल का वर्णन रामनगर शिलालेख में भी किया गया है।
- रानी ने अपने राज्य का एकीकरण एवं सुदृढ़ीकरण किया जिससे सीमावर्ती शासकों (बाजबहादुर एवं मुगलों) से उनका संघर्ष अवश्यंभावी हो गया।
- मालवा के शासक बाजबहादुर ने कई बार गोंडवाना पर आक्रमण किया परंतु हर बार रानी से पराजित हुआ। (1555–1560)
- अकबर द्वारा भेजे गये राजकाज न करने के संदेश के बदले रानी ने भी करारा जबाव दिया जिससे अकबर क्रोधित हुआ। अकबर ने अपने सेनापति आसफ खाँ को गढ़ा-मण्डला चढ़ाई करने भेजा।
- इस समय रानी ने भी अपनी राजधानी सिंगौरगढ़ में युद्ध की तैयारी प्रारंभ की। किंतु आसफ खाँ ने तोप से सिंगौरगढ़ किले के दरवाजे को तोड़ दिया।
- रानी को पहाड़ों में जाना पड़ा। उसके पश्चात राजधानी 'चौरागढ़' बनाई गई।
- रानी वीरता के साथ आसफ खाँ के आक्रमणों का जवाब देती रही परंतु सेनापति बदन सिंह विश्वासघाती निकला एवं मुगल सेना में शामिल हो गया।
- भारी बारिश रानी के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनी जिससे नरई नाले में बाढ़ आ गई एवं रानी मुगल सेना से घिर गई।
- मुगल गोला-बालूद से रानी की छोटी सेना बिखर गई परंतु रानी वीरता पूर्वक लड़ती रहीं।
- अचानक एक तीर रानी की बायीं आँख पर लगा एवं रानी धायल हो गई। रानी ने सेना को चारों ओर से घिरते एवं पराजित होते देख अपने ही हाथों से कटार सीने में भोक आत्मबलिदान दे दिया।
- 24 जून 1564 को रानी ने वीरतापूर्वक अंतिम सांस तक लड़ते हुए बलिदान दिया एवं इतिहास में स्वाभिमान व साहस की प्रतिमूर्ति के रूप में स्थापित हो गई।

विशेष –

- राज्य सरकार ने 1983 में जबलपुर विश्वविद्यालय का नाम बदलकर 'रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय' कर दिया।
- 1988 में उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया।
- 2018 में भारतीय तटरक्षक बल ने विशाखापट्टनम् में 'ICGS – रानी दुर्गावती' नामक तीसरा तटवर्ती गश्तीपोत लांच किया।
- 2008 से 'वीरांगना रानी दुर्गावती राष्ट्रीय पुरस्कार' राज्य सरकार रचनात्मक आदिवासी महिलाओं को कला रूपों, सामाजिक कार्य एवं प्रशासन में उत्कृष्ट उपलब्धि हेतु दे रही है।





गंजन सिंह कोरकू

जन्म – घोड़ा डोंगरी के पास बंजारी ढाल गांव, जिला – बैतूल

मृत्यु – 1963

जीवन संघर्ष एवं योगदान

- गंजनसिंह कोरकू जनजाति से प्रमुख आदिवासी जननायक थे।
- गांधीजी के आहवान पर सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल हुए एवं मध्यप्रदेश में जंगल कानूनों के विरुद्ध 'जंगल सत्याग्रह' किया।
- 1 अगस्त 1930 को दीपचंद गोठी की गिरफ्तारी के बाद गंजन सिंह जंगल सत्याग्रह में अधिक सक्रिय हुए।
- 22 अगस्त 1930 को घोड़ा-डोंगरी बंजारीढाल गांव से ही 'जंगल सत्याग्रह' का नेतृत्व किया एवं 500 जनजातीय लोगों के साथ जंगल कानून तोड़ा।
- शाहपुरा पुलिस के साथ उनका संघर्ष हुआ फिर बैतूल पुलिस अधीक्षक से 800 लोगों के बाद गंजन सिंह ने संघर्ष किया।
- इसमें पुलिस गोलीबारी के दौरान कोबा गोड़ नामक आदिवासी शहीद हो गये। गंजन सिंह वहाँ से भाग निकले। पुलिस ने 29 लोगों को गिरफ्तार किया।
- पुलिस ने गंजन की गिरफ्तारी के लिए 500 रुपये का इनाम रखा। एक माह पश्चात पुलिस ने गंजन सिंह को पचमढ़ी में गिरफ्तार कर 5 वर्ष की कठोर सजा सुनाई लेकिन 18 माह पश्चात ही रिहा कर दिया गया। (रायपुर जेल)
- 1942 के भारत छोड़ा आंदोलन में उन्होंने महेन्द्रवाड़ी के क्रांतिकारी सरदार विष्णु सिंह उइके के साथ मिलकर आंदोलन को गति दी।
- आजादी की घोषणा होते ही गंजन सिंह, सरदार विष्णु सिंह एवं मोहकम सिंह के साथ में तिरंगा लेकर गाँव-गाँव आजादी का संदेश पहुँचाने में जुट गये।
- अंततः उनका जीवन कष्टमय रहा, उन्हें जीवनयापन के लिए मजदूरी करनी पड़ी।
- 1963 में उन्होंने गाँव फुलवरिया के ईंट भट्टे पर काम करते समय अंतिम साँस ली।



महान स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी घोड़ा-डोंगरी जंगल सत्याग्रह व 1942 के भारत छोड़ा आंदोलन के नेतृत्वकर्ता,

सरदार गंजन सिंह कोरकू जी

के जयंती पर शत् शत् नमन.

बादल भोई

जन्म – लगभग 1845 डुगरिया तितरा, परासिया (छिंदवाड़ा)

मृत्यु – 1940, महाराष्ट्र जेल

जीवन संघर्ष एवं योगदान

- स्वतंत्रता संग्राम में बादल भोई ने आदिवासियों को आंदोलन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- बादल भोई ने 6 जनवरी 1921 को छिंदवाड़ा में महात्मा गांधी से मुलाकात की। इसके पश्चात ही वह स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए।
- सन् 1923 में तामिया में सम्पन्न कांग्रेस सभा में बादल भोई के नेतृत्व में हजारों आदिवासियों ने भाग लिया। इसी सभा के बाद आदिवासी सेनानियों ने छिंदवाड़ा के जिलाध्यक्ष निवास को घेरा था।
- उनके विरुद्ध पुलिस द्वारा लाठियाँ चलाई गयी जिससे सैकड़ों लोग घायल हुए और बादल भोई सहित सैकड़ों लोगों को जेल में डाल दिया गया।
- उन्हें लिखित आश्वासन के बाद ही रिहा किया गया कि वह अब अंग्रेजों के विरुद्ध कोई भी आंदोलन नहीं करेंगे।
- भोई जी फिर भी नहीं माने, उन्होंने अनेकों आंदोलनों में भाग लिया।
- भोई जी छिंदवाड़ा की अमूल्य वन – सम्पदा और खनिज को बाहर भेजे जाने के घोर विरोधी थे। वह इस संपदा पर पहला हक स्थानीय लोगों का मानते थे।

"जनजातीय नायकों को नमन"



हमारे गैरव के प्रतीक
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
"बादल भोई"

जानिए उनके जीवन की अमर गाथा...

आजादी की लडाई में अदय साहस के साथ अपने प्राणों की आहुति देने वाले छिंदवाड़ा जिले के वीर जनजातीय नायक बादल भोई के बलिदान को कमी भूलिया नहीं जा सकता।

जब देश में सन् 1923 में राष्ट्रवाची प्रायदीनता आंदोलन चरम पर था, तब छिंदवाड़ा के जनजातीय नायक बादल भोई अपने साथियों के साथ स्वाधीनता संग्राम में शामिल हो गये।

बादल भोई ने सन् 1923 में तामिया तहसील में सभा का आयोजन किया। उनके जोशीले भाषण और आहुति के कायदार (गोंड) जनजाति के लोग खाधीनता संग्राम से जु़ु गए। उनके नेतृत्व में हजारों जनजातीय वीरों ने भोई थाम लिया। इन क्रांतिकारियों में बादल भोई के साथ सहा भोई, अमर भोई, डमरत भोई, लोटिया भोई, टापू भोई और झंका भोई जैसे जनजातीय नायकों ने स्वाधीनता संघर्ष करते हुए अमर बलिदान दिया।





- इसलिए इन्होंने बहुमूल्य लकड़ियों, कोयले और अन्य संसाधनों से भरी ट्रेन को रोका, इसे 'ट्रेन रोको आंदोलन' कहा गया।
- अंग्रेजों की आँख में चुभने के बाद भोई जी परासिया से कुछ दूरी पर स्थित गुफा में छिपे और वहीं से आंदोलन का नेतृत्व करते रहे।
- बादल भोई ने स्वतंत्रता सेनानी श्री विश्वनाथ साल्येकर के नेतृत्व में 21 अगस्त 1930 को रामाकोना में जंगल कानून तोड़कर, सविनय अवज्ञा आंदोलन में योगदान दिया।
- इसे 'रामाकोना जंगल सत्याग्रह' कहा गया जिसके पश्चात ब्रिटिश सरकार ने बादल भोई को महाराष्ट्र जेल में रखा।
- महाराष्ट्र जेल में ही अंग्रेजों द्वारा जहर देने के कारण, 1940 में भोई जी की मृत्यु हो गई।

विशेष —

- सरकार ने 8 सितंबर 1997 में बादल भोई के नाम पर छिंदवाडा स्थित जनजाति संग्राहलय का नाम 'श्री बादल भोई जनजातीय संग्रहालय' रखा।



पेमा फल्या / फत्या

जन्म – 1968 चंद्रशेखर आजाद नगर, अलीराजपुर

मृत्यु – 31 मार्च 2020

संबंध – भील जनजाति, भीली पिथौरा चित्रकला के चित्रकार – लिखिन्द्रा

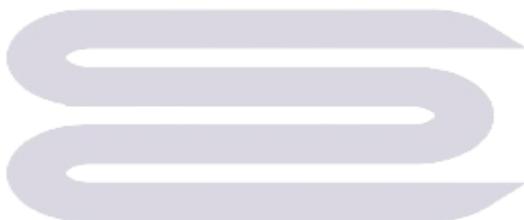
योगदान एवं कार्यक्षेत्र

- पेमा फत्या प्रमुख भीली/आदिवासी चित्रकार हैं, जो बचपन से ही पारंपरिक भीली चित्रकला 'पिथौरा' का चित्रांकन कर रहे हैं।
- पेमा फल्या पिथौरा चित्रकला के सर्वश्रेष्ठ कलाकार थे।
- कैनवास पर मनमोहक रंगों से आदिवासी कला पिथौरा आर्ट को उकेरकर पहचान दिलाने में पेमा फल्या का विशेष योगदान है।



विशेष —

- 1986 में उन्हें लोक कला के क्षेत्र में म.प्र. सरकार द्वारा शिखर सम्मान से सम्मानित किया।
- वर्ष 2014 के लिए 2017 में म.प्र. सरकार का कला के क्षेत्र में 'राष्ट्रीय तुलसी सम्मान' प्राप्त हुआ।





अन्य प्रमुख जनजातीय व्यक्तित्व एवं उनका योगदान			
क्र.	व्यक्तित्व	क्षेत्र	विवरण
1.	वीरसा गोंड	नर्मदा धाटी क्षेत्र	<ul style="list-style-type: none"> → 9 अगस्त 1942 घोड़ाड़ोंगरी (बैतूल) शाहपुर क्षेत्र में क्रांतिकारियों का नेतृत्व करते हुए वीरसा गोंड ने रेलवे स्टेशन पर आंदोलन किया। → वीरसा गोंड, पुलिस एवं वन अधिकारियों के बिना चेतावनी गोलीबारी में शहीद हुए।
2.	कोवा गोंड	बैतूल	<ul style="list-style-type: none"> → 1930 के जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। → इन्हें जंगल सत्याग्रह के प्रथम शहीद के रूप में जाना जाता है।
3.	रघुनाथ सिंह मण्डलोई	निमाड़, बीजागढ़ (बड़वानी जिला)	<ul style="list-style-type: none"> → सीताराम कंवर के साथ निमाड़ की 'भिलाला क्रांति' का नेतृत्व किया (1858)। → बीजागढ़ के किले को मेजर कीटिंग एवं होल्कर राज्य की सेना ने घेर लिया एवं बातचीत के लिए रघुनाथ सिंह को संदेश भेजा। → कीटिंग ने छल से रघुनाथ सिंह को बंदी बना लिया। → भील आदिवासियों को एकत्र करके टांडा बरुड़ में आंदोलन किया।
4.	सीताराम कंवर	निमाड़, बड़वानी रियासत	<ul style="list-style-type: none"> → निमाड़ में 'भिलाला क्रांति' के अग्रदूत रहे (1857–58)। → रघुनाथ सिंह मण्डलोई के साथ मिलकर 3 हजार क्रांतिकारियों का संगठित दल बनाया। → 30 सितम्बर 1858 को बालसमुन्द चौकी पर अधिकार कर लिया एवं जामुनी चौकी को लूट कर जला दिया। → अंग्रेजों ने 500 रु. का इनाम कंवर को पकड़ने के लिए रखा। → 8 अक्टूबर 1858 को बरुद गाँव, बंड नामक स्थान पर अंग्रेजों से युद्ध हुआ। → इसमें सीताराम कंवर एवं हवलदार ज्वाला सहित 20 क्रांतिकारी शहीद हो गये एवं 78 क्रांतिकारियों को कैद कर फाँसी दे दी गई। → इसके बाद रघुनाथ सिंह मण्डलोई ने भिलाला क्रांति का नेतृत्व संभाला।
5.	बंजारी सिंह कोरकू	घोड़ा-डोंगरी (बैतूल)	→ घोड़ा-डोंगरी में गंजन सिह कोरकू के नेतृत्व में वन कानून तोड़कर 'जंगल सत्याग्रह' में भाग लिया (9 अक्टूबर 1930)।
6.	कोमा गोंड, रामू एवं मकड़ू गोंड	बैतूल	<ul style="list-style-type: none"> → 1930 में जंगल सत्याग्रह के दौरान गंजन सिंह कोरकू का साथ दिया एवं वन कानून तोड़े। → पुलिस द्वारा गोलीबारी में शहीद हुए।
7.	विष्णु सिंह गोंड	बैतूल – महेन्द्रवाड़ी गाँव	<ul style="list-style-type: none"> → 1930 में घोड़ा डोंगरी से जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। → 1939 में 'फॉरवर्ड ब्लॉक' के नेता आनंद राव लोखंडे के साथ फॉरवर्ड ब्लॉक में शामिल हुए और घोड़ा डोंगरी, शाहपुर के जनजातीय गाँवों में देश की स्वतंत्रता के लिए जागरूकता फैलाने का काम किया। → 1942 में गांधी जी के 'करो या मरो' को आत्मसात कर भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। → 19 अगस्त 1942 को घोड़ा डोंगरी में सभा की जिसमें सरकारी ट्रेन डिपो को जलाने, रेल पटरी उखाड़ने, तार लाइन काटने आदि के निर्णय लिये। → गोंड आदिवासियों (जैसे – गुन्डा गोंड, जिरा गोंड, कोमू गोंड, जग्गी गोंड, मंशु ओझा, विष्णु ओझा आदि) को साथ लेकर भीका गोंड के मलसिवनी जत्थे के साथ जा मिले। यहाँ वीरसा गोंड की शहादत हुई। → विष्णु सिंह गोंड एवं उनकी पत्नी सुमित्रा बाई ने महिलाओं को भी संगठित किया। → घोड़ाड़ोंगरी डिपो जलाने सहित अन्य मामलों में दोषी ठहराते हुए ब्रिटिश सरकार ने विष्णु सिंह को फाँसी एवं उनकी पत्नी सुमित्रा बाई को 7 साल के कठोर कारावास से दण्डित किया। (राजद्रोह) → बाद में शारदा प्रसाद निगम एवं पुरुषोत्तम बालाजी के प्रयासों से लंदन कार्जसिल में



			अपील की तब विष्णु सिंह को फाँसी की सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया गया। → 1942 – 1946 तक कठोर कारावास की सजा से रिहा होने के पश्चात्, 1956 में अपने ही गांव महेंद्रवाड़ी में उनका देहावसान हो गया।
8.	गुड्डे बाई, रेनीबाई, विरजू भाई, देमोबाई	टुरिया (सिवनी)	→ सिवनी के टुरिया में मूका लोहार के नेतृत्व में जंगल सत्याग्रह किया। (1930) → डिस्टी कमिशनर सीमेन के आदेश पर गोलीबारी में चारों नायक शहीद हो गये।
9.	विरजू नायक	बड़वानी (राजपुर पलसूद)	→ 1857 की क्रांति में खाज्या नायक, टंट्या भील और भीमा नायक के साथ मिलकर क्रांति की।
10.	बुचा कोरकू	बैतूल (बंजारीढ़ाल)	→ 1930 में बैतूल से जंगल सत्याग्रह में भाग लिया जिसमें गिरफ्तार कर रायपुर जेल भेजा गया। → रायपुर जेल में ही उनकी मृत्यु हो गई।
11.	जग्गू सिंह उइके	बैतूल	→ 1930 के जंगल सत्याग्रह में भाग लेने पर 3 वर्ष का कारावास मिला। → 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह एवं 1942 में गांधी जी के 'करो या मरो' के नारे को प्रसारित किया एवं जेल की यात्राएँ की। → आजादी के बाद विधायक रहे।
12.	भोदेसिंह गोंड़	जन्म–1924 घोड़ाडोंगरी	→ बैतूल जिले के भोंदे सिंह ने क्षेत्र के किसानों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। → 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेकर रेल की पटरियाँ उखाड़ी जिसके पश्चात अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर 4 वर्ष का कारावास दिया।
13.	मंशु ओझा	रातामाटी (बैतूल)	→ 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया, रेल की पटरी उखाड़ दी, बोगदा पुल को नुकसान पहुंचाया एवं घोड़ाडोंगरी में लकड़ी का डिपो भी जला दिया। → 4 नवम्बर 1942 को गिरफ्तार कर क्रमशः बैतूल, नागपुर एवं नरसिंहपुर जेल में रखा गया। → अन्ततः 20 जुलाई 1944 को जेल से रिहा हुए। → 28 अगस्त 1981 को इनका देहावसान हुआ।
14.	धीर सिंह	जन्म – 1820 (रीवा राज्य)	→ 1857 की क्रांति में भाग लिया। → शंकर शाह की मृत्यु के पश्चात रणमत सिंह के साथ बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड में सक्रिय रहे।
15.	देवी सिंह गोंड़	गढ़मंडला	→ 1857 की क्रांति में भाग लिया एवं लोगों को कर न देने के लिए प्रेरित किया।

अन्य क्रांतिकारी एवं नायक

- ⌚ दीपचंद गोठा – 1930, घोड़ाडोंगरी जंगल सत्याग्रह (बैतूल)
- ⌚ देवी सिंह – गढ़ा मंडला, 1857 के क्रांतिकारी
- ⌚ राम गोंड़ – बारंगवाड़ी (बैतूल), जंगल सत्याग्रही (1930)
- ⌚ मकड़ू गोंड़ – बैतूल, जगल सत्याग्रही (1930)
- ⌚ जनक सिंह कोरकू – गंजन सिंह कोरकू के मित्र, घोड़ाडोंगरी में जंगल सत्याग्रही
- ⌚ सहरा भोई – छिंदवाड़ा, 1857 की क्रांति में भाग लिया।
- ⌚ इमरत भोई उरपति – तात्याटोपे से प्रभावित, टोपे की सुरक्षा में प्राणत्याग किया।
- ⌚ लोटिया भोई – छिंदवाड़ा, पातालकोट में युद्ध के दौरान प्राण त्याग
- ⌚ अमरु भोई – छिंदवाड़ा से क्रांतिकारी
- ⌚ झनका भोई – घनोरा घाटी में ब्रिटिश सेना की जासूसी करते थे, तात्या टोपे से प्रभावित थे।
- ⌚ इमरत भोई कोंडावाला – छिंदवाड़ा, स्वतंत्रता सेनानियों को रसद पहुंचाते थे।

FOUNDERS



DINESH SIR

SANJEEV SIR

ADITYA SIR

PANKAJ SIR

(POLITY & SOCIOLOGY)

(HISTORY & MP CULTURE)

MANAGEMENT



BRAJDEEP SIR



O.P. RATHORE SIR

Maths

TEAM OF TEACHERS



RAVINDRA SIR
Science & Tech



KULDEEP SIR
Paper 3rd & 4th



MALKEET SIR
Geography Maping



VIJAY SIR
Polity



AJEEET SIR
Paper 1st & 2nd Mentor



DHARMENDRA SIR
Paper 3rd & 4th Mentor



B.D. SIR
MPGK



AMRISH SIR
Paper 2nd Mentor



ANSHUL SIR
History



AMIT SIR
Hindi



ARUN SIR
Ethics



MAYANK SIR
Hindi

9893442214, 7524821440, 7970002214

INDORE BRANCH 1 - 3rd Floor Sundaram Complex Bhawarkua, Indore

INDORE BRANCH 2 - 160/3 1st Floor Near Vishnupuri I-Bus Stop, Bholaram Indore

GWALIOR BRANCH - 3rd Floor Infront Of Bank Of Baroda Near Sai Baba Mandir, Phoolbag, Gwalior